

आर. गुप्ता® कृत



बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र

CTET/STETs एवं अन्य शिक्षक भर्ती परीक्षा हेतु

नवीनतम
संस्करण



संक्षिप्त अध्ययन सामग्री
एवं

1000 से अधिक
वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर सहित

Part-I

आर. गुप्ता[®] कृत

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र

CTET/STETs एवं
अन्य शिक्षक भर्ती परीक्षा हेतु

B.Ed, B.El.Ed एवं JBT/NTT
प्रवेश परीक्षा के लिए भी उपयोगी

Part-01



रमेश पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

Target Sarkari Naukri

अनुक्रमणिका

Section-A: बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र	3-72
विकास एवं अधिगम में परस्पर संबद्धता; बाल विकास के सिद्धांत; वंशानुक्रम एवं वातावरण का प्रभाव; समाजीकरण की प्रक्रिया; प्याजे, कोहलबर्ग एवं व्योट्स्की के सिद्धांत; बाल केंद्रित शिक्षा एवं प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा; बुद्धि निर्माण का समालोचनात्मक विचार; भाषा और विचार; समाज निर्माण में लिंग की भूमिका; सीखने के लिए एवं सीखने का मूल्यांकन; शिक्षार्थी के पढ़ाई स्तर के मूल्यांकन के लिए उचित प्रश्न-पत्र की आवश्यकता। अभ्यास प्रश्न	
Section-B: समावेशी शिक्षा और विशेष समझ वाले बच्चों की आवश्यकताओं की अवधारणा	73-99
विविध पृष्ठभूमि से संबद्ध छात्र; विशेष आवश्यकताओं वाले छात्र; प्रतिभावान, सृजनात्मक एवं विशेष रूप से अक्षम छात्र। अभ्यास प्रश्न	
Section-C: अधिगम और शिक्षा शास्त्र	100-172
बच्चों का स्कूल में प्रदर्शन; शिक्षण एवं अधिगम की आधारभूत प्रक्रियाएं; बच्चा एक समस्या समाधानकर्ता तथा वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में; संवेग और अभिप्रेरण; अधिगम में योगदान करने वाले कारक। अभ्यास प्रश्न	
Section-D: विविध	173-197
अभ्यास प्रश्न	
शब्दावली	198-216

Target Sarkari Naukri



Section-A

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र

1. विकास एवं अधिगम में परस्परसंबद्धता

विकास एक गतिमान प्रक्रिया है। इसकी प्रकृति प्रवाहमान जल के समान है। इसमें बालक का चहुँमुखी विकास विभिन्न कारकों के सहयोग से संपन्न होता है। विकास की इस प्रक्रिया में रुचि, आदत, दृष्टिकोण, जीवन-मूल्य, स्वभाव, व्यक्तित्व, व्यवहार आदि सकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

बाल विकास के संकल्पनात्मक मुद्दे

- जन्म से पूर्व एवं जन्म के बाद से परिपक्व होने तक बालक में होने वाले परिवर्तन की प्रकृति क्या है?
- बालक में होने वाले परिवर्तनों का उसकी आयु के साथ किस प्रकार का संबंध होता है?
- आयु के साथ होने वाले परिवर्तनों की प्रकृति क्या है?
- बालकों में उपर्युक्त वर्णित परिवर्तनों के लिए कौन-कौन से कारक जिम्मेदार होते हैं?
- समय-समय पर बालकों में होने वाले उपर्युक्त परिवर्तन उसके व्यक्तित्व एवं व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?
- बालक की आदत, रुचि, दृष्टिकोण, जीवन मूल्य, स्वभाव तथा उच्च व्यक्तित्व एवं व्यवहार आदि में जन्म के समय से ही सदैव परिवर्तन आते रहते हैं। उनका विभिन्न आयु वर्ग एवं अवस्था में क्या स्वरूप होता है तथा उस परिवर्तन की प्रक्रिया की प्रकृति क्या होती है?

विकास एवं वृद्धि में तुलनात्मक अंतर विकास

- विकास शब्द का प्रयोग व्यापक रूप में होता है। वृद्धि इसी का भाग है।
- विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है तथा यह बालक के परिपक्व होने के बाद भी चलती रहती है।
- विकास शब्द का प्रयोग परिणामात्मक परिवर्तनों के साथ-साथ व्यावहारिक परिवर्तनों के लिए भी होता है।

वृद्धि

- वृद्धि विकास की प्रक्रिया का एक चरण होता है। इसका क्षेत्र सीमित होता है।
- वृद्धि की प्रक्रिया आजीवन नहीं चलती, बालक के परिपक्व होने के साथ ही यह रुक जाती है।
- वृद्धि शब्द का प्रयोग केवल परिमाणात्मक परिवर्तनों के लिए होता है।

मानव विकास की विभिन्न अवस्थाएं

मानव विकास की अवस्थाओं का वर्गीकरण प्रमुखतः परंपरागत एवं आधुनिक विचारधारा के आधार पर किया गया है। इन दोनों विचारधाराओं के तहत मानव विकास की अवस्था का अलग-अलग प्रकार से कालचक्र का वर्णन मिलता है। वर्तमान में विद्वानों द्वारा मानव विकास अवस्था के कालचक्र का वर्णन निम्न प्रकार से किया गया है

अवस्था	कालचक्र
1. शैशवावस्था	— जन्म से 6 वर्ष तक।
2. बाल्यावस्था	— 6 से 12 वर्ष तक।
3. किशोरावस्था	— 12 से 18 वर्ष तक।
4. वयस्कावस्था	— 18 वर्ष से मृत्युपर्यंत

शैशवावस्था की विशेषताएं

जन्म से 6 वर्ष तक की अवस्था को शैशवावस्था कहते हैं। यह मानव विकास की दूसरी अवस्था है। पहली अवस्था गर्भकाल है जिसमें शरीर पूर्णतः बनता है और शैशवावस्था में उसका विकास होता है। शैशवावस्था की मुख्य विशेषताएं निम्न प्रकार से हैं—

- शैशवावस्था के प्रथम तीन वर्षों में शिशु का शारीरिक विकास काफी तीव्रता से होता है। उसके भार और लंबाई में वृद्धि होती है। तीन वर्षों के बाद विकास की गति धीमी हो जाती है। उसकी इंद्रियों, आंतरिक अंगों, मांशपेशियों आदि का क्रमिक विकास होता है।
- शिशु की मानसिक क्रियाओं, यथा—ध्यान, स्मृति, कल्पना, संवेदना और प्रत्यक्षीकरण आदि के विकास में पर्याप्त तीव्रता होती है। तीन वर्ष की आयु तक शिशु की लगभग सभी मानसिक शक्तियां कार्य करने लगती हैं।
- शिशु में जिज्ञासा की प्रवृत्ति पर्याप्त मात्रा में होती है। वह अपने खिलौने का विभिन्न प्रकार से प्रयोग करता है। वह उसे फर्श पर फेंकता है और उसके भागों को अलग-अलग करता है। वह ऐसा करके खिलौने को भली-भांति जानना चाहता है। इसके अतिरिक्त वह विभिन्न बातों और वस्तुओं के बारे में क्यों और कैसे के प्रश्न पूछता है।
- शिशु के सीखने की प्रक्रिया में बहुत तीव्रता होती है और वह अनेक आवश्यक बातों को सीख लेता है। गेसल के अनुसार, “बालक प्रथम 6 वर्षों में बाद के 12 वर्षों से दूना सीख लेता है।”
- शिशु में अच्छी और बुरी, उचित और अनुचित बातों का ज्ञान नहीं होता। वह उन्हीं कार्यों को करना चाहता है जिनमें उसको आनंद आता है, भले ही वह अवांछनीय हों। इस प्रकार नैतिकता का पूर्ण अभाव होता है।
- शिशु में अनुकरण द्वारा सीखने की प्रवृत्ति होती है। वह अपने माता-पिता एवं भाई-बहन आदि के कार्यों और

व्यवहार का अनुकरण करता है। यदि वह ऐसा नहीं करता है, तो रोककर या चिल्लाकर अपनी असमर्थता प्रकट करता है। अनुकरण द्वारा सीखने की यह प्रवृत्ति उसे अपना विकास करने में सहायता देती है।

- शैशवावस्था के अंतिम वर्षों में शिशु में सामाजिक भावना का विकास हो जाता है। वैलेन्टाइन के अनुसार—“चार या पांच वर्ष के बालक में अपने छोटे, भाइयों, बहनों या साथियों की रक्षा करने की प्रवृत्ति होती है। वह 2 से 5 वर्ष तक बच्चों के साथ खेलना पसंद करता है। वह अपनी वस्तुओं में दूसरों को साझीदार बनाता है। वह दूसरे बच्चों के अधिकारों की रक्षा करता है और दुःख में उनको सांत्वना देने का प्रयास करता है।”

शैशवावस्था में शिक्षा का स्वरूप

शैशवावस्था में शिक्षा का आयोजन निम्नांकित तरह से किया जाना चाहिए—

- शिशु अपने विकास के लिए शांत, स्वस्थ और सुरक्षित वातावरण चाहता है। अतः घर और विद्यालय में उसे उचित प्रकार का वातावरण प्रदान किया जाना चाहिए।
- शैशवावस्था के अंतिम भाग में शिशु दूसरे बालकों के साथ मिलना-जुलना और खेलना पसंद करता है। अतः उन्हें इन बातों का अवसर दिया जाना चाहिए, ताकि उसमें सामाजिक भावना का विकास हो।
- शिशु में आत्म-प्रदर्शन की भावना होती है। अतः उसे ऐसे कार्य करने के अवसर दिए जाने चाहिए जिनके द्वारा वह अपनी इस भावना को व्यक्त कर सके।
- शिशु अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दूसरों पर निर्भर रहता है। उसके माता-पिता और शिक्षक को उसकी इस असहाय स्थिति से लाभ नहीं उठाना चाहिए। अतः उन्हें डांटना या पीटना नहीं चाहिए और न उसे भय या क्रोध दिखाना चाहिए। इसके विपरीत, उनके प्रति सदैव प्रेम, शिष्टता और सहानुभूति का व्यवहार करना चाहिए।
- शिशु के व्यवहार का आधार उसकी मूल प्रवृत्तियां होती हैं। अतः उनका दमन न करके सभी संभव विधियों से प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। इसका कारण यह है कि दमन करने से शिशु का विकास अवरूद्ध हो जाता है।

- शिशुओं में मानसिक क्रियाओं की तीव्रता होती है। अतः उसे सोचने-विचारने के अधिक से अधिक अवसर दिए जाने चाहिए।
- शिशु कल्पना जगत में विचरण करता है और उसी को वास्तविक संसार समझता है। अतः उसे ऐसे विषयों की शिक्षा दी जानी चाहिए जो उसे वास्तविकता के निकट लाए। मॉण्टेसरी पद्धति में परियों की कहानियों को इसलिए स्थान नहीं दिया गया है क्योंकि वे बालक को वास्तविकता से दूर ले जाती हैं।
- शिशु की शिक्षा में कहानियों और सचित्र पुस्तकों का विशिष्ट स्थान होना चाहिए। इसकी उपयोगिता के संबंध में क्रो एवं क्रो ने कहा है- “पांच वर्ष का शिशु कहानी सुनते समय उससे संबंधित चित्रों को पुस्तक में देखना पसंद करता है।”
- शिशु को खेल द्वारा शिक्षा दी जानी चाहिए। इस संबंध में स्ट्रेंग ने लिखा है कि- “शिशु अपने एवं अपने संसार के बारे में अधिकांश बातें खेल के माध्यम से सीखता है।”

बाल्यावस्था की विशेषताएं

बाल्यावस्था को मुख्यतः दो चरणों में बांटा जा सकता है- प्रथम चरण 6 से 9 वर्ष तक और द्वितीय चरण 9 से 12 वर्ष तक। प्रथम चरण में बालक की लंबाई एवं भार दोनों बढ़ते हैं। इस चरण में बच्चों में चिंतन एवं तर्क शक्तियों का विकास हो जाता है। द्वितीय चरण में बच्चे पढ़ाई में रुचि लेने लगते हैं। बाल्यावस्था की मुख्य विशेषताएं निम्न हैं-

- इस अवस्था में बालक शैशवावस्था के काल्पनिक जगत से वास्तविक जगत में प्रवेश करता है। वह वास्तविक जगत की प्रत्येक वस्तु से आकर्षित होकर उसका ज्ञान प्राप्त करना चाहता है।
- इस अवस्था में बालक की रुचियों में निरंतर परिवर्तन होता रहता है। वे स्थायी रूप धारण न करके वातावरण में परिवर्तन के साथ परिवर्तित होती रहती है।
- बाल्यावस्था में जिज्ञासा की प्रवृत्ति होती है। वह जिन वस्तुओं के संपर्क में आता है उनके बारे में प्रश्न पूछकर हर तरह की जानकारी प्राप्त करना चाहता है। उसके ये प्रश्न शैशवावस्था के साधारण प्रश्नों से भिन्न होते हैं। यथा-‘यह क्या है?’ इसके विपरीत वह पूछता है-‘यह ऐसा क्यों है?’ ‘यह ऐसा कैसे हुआ है?’

- बालक अपने संवेगों पर अधिकार रखना एवं अच्छी और बुरी भावनाओं में अंतर करना जान जाता है। वह उन भावनाओं का दमन करता है, जिनको उसके माता-पिता और बड़े लोग पसंद नहीं करते हैं।
- इस अवस्था में बालकों में बिना उद्देश्य के उधर-उधर घूमने की प्रवृत्ति बहुत अधिक होती है।

इस अवस्था में बालकों की सामूहिक खेलों के प्रति अत्यधिक रुचि होती है। वह 6 या 7 वर्ष की आयु में छोटे समूहों में और बहुत अधिक समय तक खेलता है। खेल के समय बालिकाओं की अपेक्षा बालकों में झगड़े अधिक होते हैं। 11 या 12 वर्ष की आयु में बालक दलीय खेलों में भाग लेने लगता है।

- बाल्यावस्था में बालकों और बालिकाओं में संग्रह करने की प्रवृत्ति बहुत ज्यादा पाई जाती है। बालक विशेष रूप से कांच की गोलियों, टिकटों, मशीनों के भाग और पत्थर के टुकड़ों का संचय करते हैं। बालिकाओं में चित्रों, खिलौनों, गुड़ियों और कपड़ों के टुकड़ों को संग्रह करने की प्रवृत्ति पाई जाती है।
- शैशवावस्था में बालक का व्यक्तित्व अंतर्मुखी होता है, क्योंकि वह एकांतप्रिय और केवल अपने में रुचि लेने वाला होता है। इसके विपरीत, बाल्यावस्था में उसका व्यक्तित्व बहिर्मुखी हो जाता है, क्योंकि बाह्य जगत् में उसकी रुचि उत्पन्न हो जाती है। अतः वह अन्य व्यक्तियों, वस्तुओं और कार्यों का अधिक से अधिक परिचय प्राप्त करना चाहता है।
- इस अवस्था में बालकों को रचनात्मक कार्यों में विशेष आनंद आता है। वह साधारणतः घर से बाहर किसी प्रकार कार्य करना चाहता है, यथा-बागवानी या औजारों से लकड़ी की वस्तुएं बनाना आदि। ठीक इसके विपरीत बालिकाएं घर में ही कोई न कोई कार्य करना चाहती हैं, यथा-सिलाई, कढ़ाई एवं बुनाई आदि।

बाल्यावस्था में शिक्षा का स्वरूप

बाल्यावस्था में बालक की शिक्षा का स्वरूप निश्चित करते समय निम्नांकित बातों को ध्यान में रखना चाहिए-

- इस अवस्था में बालक की रुचियों में निरंतर परिवर्तन होता रहता है। अतः पाठ्य-विषय और शिक्षण-विधि में उसकी रुचियों के अनुसार परिवर्तन किया जाना आवश्यक है। ऐसा करने से उसमें शिक्षण के प्रति आकर्षण तो बना

ही रहता है। साथ ही उसकी मानसिक प्रगति भी गतिमान रहती है।

- बालक के लिए कुछ ऐसे विषयों का अध्ययन आवश्यक है, जो उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके और उसके लिए लाभप्रद भी हों। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कुछ विशेष विषयों, यथा-भाषा, अंकगणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, ड्राइंग, चित्रकला, सुलेख, पत्र लेखन और निबंध रचना आदि का चुनाव करना चाहिए।
- बालक कठोर अनुशासन पसंद नहीं करता है। वह शारीरिक दंड, बल-प्रयोग और डांट-डपट से घृणा करता है। वह उपदेश नहीं सुनना चाहता है। वह धमकियों की चिंता नहीं करता है। अतः उसकी शिक्षा प्रेम तथा सौहार्द और सहानुभूति पर आधारित होनी चाहिए।
- कोल एवं ब्रूस ने बाल्यावस्था को संवेगात्मक विकास का अनोखा काल माना है। यह विकास तभी संभव है, जब बालक के संवेगों का दमन न किया जाए, क्योंकि ऐसा करने से उसमें हीन भावना-ग्रंथियों का निर्माण हो जाता है।
- स्ट्रिंग के अनुसार, “इस अवस्था में बालकों की भाषा में बहुत रुचि होती है।” अतः इस बात पर बल दिया जाना आवश्यक है कि बालक भाषा का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करे।
- बालकों में जिज्ञासा की प्रवृत्ति होती है। अतः उन्हें दी जाने वाली शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए, जिससे उसकी इस प्रवृत्ति की तुष्टि हो।
- किर्कपैट्रिक ने बाल्यावस्था को ‘प्रतिद्वन्द्वात्मक समाजीकरण’ का काल माना है। अतः विद्यालय में ऐसी क्रियाओं का अनिवार्य रूप से संगठन किया जाना चाहिए, जिनमें भाग लेकर बालक में अनुशासन, आत्म-नियंत्रण, सहानुभूति, प्रतिस्पर्द्धा, सहयोग आदि सामाजिक गुणों का अधिकतम विकास हो।

किशोरावस्था की विशेषताएं

बाल्यावस्था के समापन के पश्चात् 13 वें वर्ष से किशोरावस्था की शुरुआत होती है। इस अवस्था में बालकों और बालिकाओं में क्रांतिकारी मानसिक, शारीरिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक परिवर्तन होते हैं। इसलिए इस काल को जीवन के तूफान का काल भी कहा जाता है। इस अवस्था की मुख्य विशेषताएं निम्न हैं—

किशोरावस्था को शारीरिक विकास का काल माना जाता है। इस काल में किशोर के शरीर में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन

होते हैं, जैसे-भार और लंबाई में तीव्र वृद्धि, मांशपेशियों और शारीरिक ढांचे में दृढ़ता, किशोर में दाढ़ी और मूंछ की रोमावालिओं एवं किशोरियों में प्रथम मासिक स्राव के दर्शन।

- इस अवस्था में किशोर के मस्तिष्क का लगभग सभी दिशाओं में विकास होता है। किशोरों में इस अवस्था में पाए जाने वाले मानसिक विकास के प्रमुख गुण हैं-कल्पना एवं दिवास्वप्नों की बहुलता, बुद्धि का अधिकतम विकास सोचने समझने और तर्क करने की शक्ति में वृद्धि, विरोधी मानसिक दशाएं।
- किशोर जिस समूह का सदस्य होता है, उसको वह अपने परिवार और विद्यालय से अधिक महत्वपूर्ण समझता है। यदि उसके माता-पिता और समूह के दृष्टिकोणों में अंतर होता है, तो वह समूह के ही दृष्टिकोणों को श्रेष्ठतर समझता है और उन्हीं के अनुसार अपने व्यवहार, रुचियों, इच्छाओं आदि में परिवर्तन करता है।
- किशोरों में आवेगों और संवेगों की बहुत प्रबलता होती है। यहीं कारण है कि उनका विभिन्न अवसरों पर विभिन्न प्रकार का व्यवहार होता है। उदाहरणार्थ-किसी समय वह अत्यधिक क्रियाशील होता है और किसी समय अत्यधिक मंद, किसी परिस्थिति में साधारण रूप से उत्साहपूर्ण और किसी में असाधारण रूप से उत्साहहीन।
- किशोरावस्था में बालक नैतिक एवं अनैतिक बातों पर विचार करने लगता है, परिणामस्वरूप अपने जीवन दर्शन का निर्माण करता है। वह ऐसे सिद्धांतों का निर्माण करना चाहता है जिनकी सहायता से वह अपने जीवन में कुछ बातों का निर्माण कर सके। उसे इस कार्य में सहायता देने के उद्देश्य से ही आधुनिक युग में युवा आंदोलनों को संगठित किया गया है।
- किशोर में महत्वपूर्ण व्यक्ति बनने और प्रौढ़ों के समान निश्चित स्थिति प्राप्त करने की अत्यधिक अभिलाषा होती है। ब्लेयर, जोन्स एवं सिम्पसन के शब्दों में—“किशोर का महत्वपूर्ण बनना, अपने समूह में स्थिति प्राप्त करना और श्रेष्ठ व्यक्ति के रूप में स्वीकार किया जाना चाहता है।”
- किशोरावस्था के आरंभ में बालकों को धर्म और ईश्वर में आस्था नहीं होती है। इनके संबंध में उनमें इतनी शंकाएं उत्पन्न होती हैं कि वे उनका समाधान नहीं कर पाते हैं, पर धीरे-धीरे उनमें धर्म में विश्वास उत्पन्न हो जाता है और वे ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करने लगते हैं।

किशोरावस्था में शिक्षा का स्वरूप

किशोरावस्था में शिक्षा का स्वरूप निम्न प्रकार से होना चाहिए-

- किशोरों की मानसिक शक्तियों के सर्वोत्तम और अधिकतम विकास के लिए शिक्षा का स्वरूप उसकी रुचियों, रुझानों, दृष्टिकोणों और योग्यताओं के अनुरूप होना चाहिए।
- किशोर अपने समूह को अत्यधिक महत्व देता है और उसमें आचार-व्यवहार की अनेक बातें सीखता है। अतः विद्यालय में ऐसे समूहों का संगठन किया जाना चाहिए, जिनकी सदस्यता ग्रहण करके किशोर उत्तम सामाजिक व्यवहार और संबंधों के पाठ को सीख सके। इस दिशा में सामूहिक क्रियाएं, सामूहिक खेल और स्काउटिंग अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।
- किशोर में उचित महत्व और उचित स्थिति प्राप्त करने की प्रबल इच्छा होती है। उसकी इस इच्छा को पूर्ण करने के लिए उसे उत्तरदायित्व के कार्य दिए जाने चाहिए। इस उद्देश्य से सामाजिक क्रियाओं, छात्र-स्वशासन और युवक-गोष्ठियों का संगठन किया जाना चाहिए।
- बालक और बालिकाओं में विभिन्नता होनी अति आवश्यक है। इसका कारण यह है कि लिंग भेद के कारण और इस विचार से कि बालक और बालिकाओं को भावी जीवन में विभिन्न कार्य करने हैं, दोनों के पाठ्यक्रमों में विभिन्नता होनी चाहिए।
- किशोर अपने जीवन-दर्शन का निर्माण करना चाहता है, पर उचित पथ-प्रदर्शन के अभाव में वह ऐसा करने में

असमर्थ रहता है। इस कार्य का उत्तरदायित्व विद्यालय पर है कि वह उचित मार्गदर्शन दे।

- किशोर अनेक प्रकार के संवेगों से संघर्ष करता है। इन संवेगों में से कुछ उत्कृष्ट और कुछ निकृष्ट होते हैं। अतः शिक्षा में इस प्रकार के विषयों और पाठ्यक्रम में सहयोगी क्रियाओं को स्थान दिया जाना चाहिए, जो निकृष्ट संवेगों का दमन कर उत्कृष्ट संवेगों का विकास कर सके। इस उद्देश्य से कला, विज्ञान, साहित्य, संगीत, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि की सुन्दर व्यवस्था की जानी चाहिए।
- किशोर में व्यक्तिगत विभिन्नताओं और आवश्यकताओं को सभी शिक्षाविदों ने स्वीकार किया है। अतः विद्यालयों में विभिन्न पाठ्यक्रमों की व्यवस्था की जानी चाहिए जिसमें किशोरों की व्यक्तिगत मांगों को पूर्ण किया जा सके।
- किशोर के मस्तिष्क में विरोधी विचारों में निरंतर द्वंद्व होता रहता है। फलतः वह उचित व्यवहार के संबंध में किसी निश्चित निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाता है। अतः उसे उदार धार्मिक और नैतिक शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि वह उचित और अनुचित में अंतर करके अपने व्यवहार को समाज के नैतिक मूल्यों के अनुकूल बना सके।
- किशोर में अपराध करने की प्रवृत्ति का मुख्य कारण है निराशा। इस कारण को दूर करके उसकी अपराध प्रवृत्ति पर अंकुश लगाया जा सकता है। विद्यालय उसको अपनी उपयोगिता का अनुभव कराके उसकी निराशा को कम कर सकता है और इस प्रकार अपराध-प्रवृत्ति को कम किया जा सकता है।

2. बाल विकास के सिद्धांत

आयु के अनुसार बालकों में होने वाले शारीरिक एवं मानसिक विकास कुछ विशेष प्रकार के सिद्धांतों पर आधारित होते हैं। ये सिद्धांत बाल-विकास के सिद्धांत कहलाते हैं। बाल विकास से संबद्ध महत्वपूर्ण सिद्धांत निम्न हैं-

- (i) परस्पर संबद्धता का सिद्धांत: बाल विकास से 'संबद्ध विभिन्न तत्व यथा-सामाजिक, शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक आदि परस्पर संबद्ध हैं। इनमें से किसी एक में होने वाला विकास सभी तत्वों में होने वाले विकास को पूरी तरह से प्रभावित करने की क्षमता रखता है।
- (ii) पूर्वानुमान का सिद्धांत: एक बालक की बुद्धि और विकास

की गति को देखते हुए उसके आगे बढ़ने की दिशा एवं स्वरूप के विषय में पूर्वानुमान किया जा सकता है। इसी प्रकार बालक की मानसिक योग्यताओं के ज्ञान के सहारे उसके आगे के मानसिक विकास के बारे में पूर्वानुमान लगाया जा सकता है।

- (iii) विकास का सामान्य से विशेष की ओर का सिद्धांत: विकास की प्रक्रिया में सबसे पहले सामान्य क्रियाओं के दर्शन होते हैं उसके बाद विशिष्ट क्रियाओं का स्थान आता है। उदाहरणार्थ-प्रारंभ में एक नवजात शिशु के रोने और चिल्लाने में उसके सभी अंग-प्रत्यंग भाग लेते हैं,

परन्तु बाद में वृद्धि और विकास की प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप ये क्रियाएं उसकी आंखों और वाक्तंत्र तक सीमित हो जाती हैं। भाषा विकास के क्रम में बालक सबसे पहले सामान्य शब्द सीखता है इसके बाद ही वह विशेष शब्द सीखता है।

(iv) **विकास की दिशा का सिद्धांत:** इस सिद्धांत के अनुसार विकास की प्रक्रिया की दिशा व्यक्ति के वंशानुगत एवं वातावरण जन्य कारकों से प्रभावित होती है। इसके अनुसार बालक सबसे पहले अपने सिर और भुजाओं की गति पर नियंत्रण करना सीखता है और उसके बाद फिर टांगों को। उसके बाद ही वह अच्छी तरह बिना सहारे के खड़ा होना और चलना सीखता है।

(v) **वैयक्तिक भिन्नता का सिद्धांत:** इस सिद्धांत के अनुसार बालकों का विकास और वृद्धि उनकी अपनी वैयक्तिकता के अनुरूप होती है। वे अपनी स्वाभाविक गति से ही वृद्धि और विकास के विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ते हैं और इसी कारण उनमें पर्याप्त विभिन्नताएं देखने को मिलती हैं। कोई भी एक बालक वृद्धि एवं विकास की दृष्टि से किसी अन्य बालक के समरूप नहीं होता। विकास के इस सिद्धांत के कारण ही कोई बालक अत्यंत मेधावी, कोई बालक सामान्य तथा कोई बालक पिछड़ा या मंद होता है।

(vi) **एकीकरण का सिद्धांत:** विकास की प्रक्रिया एकीकरण के सिद्धांत का अनुसरण करती है। इस सिद्धांत के अनुसार बालक पहले संपूर्ण अंग को फिर अंग के भागों को चलाना सीखता है। इसके बाद वह उन भागों को एकीकृत करना सीखता है। सामान्य से विशेष की ओर बढ़ते हुए विशेष प्रतिक्रियाओं तथा चेष्टाओं को इकट्ठे रूप में प्रयोग में लाना सीखता है। उदाहरणार्थ-एक बालक पहले पूरे हाथ को, फिर अंगुलियों को एक साथ चलाना सीखता है।

(vii) **वृद्धि एवं विकास का सिद्धांत:** इस सिद्धांत के अनुसार वृद्धि और विकास की क्रिया वंशानुक्रम और वातावरण का संयुक्त परिणाम है। अतः वृद्धि और विकास की प्रक्रियाओं में इन दोनों को समान रूप से महत्त्व दिया जाना आवश्यक हो जाता है।

(viii) **वृद्धि एवं विकास की गति की दर में असमरूपता का सिद्धांत:** विकास की प्रक्रिया जीवनपर्यंत चलती रहती है, किंतु इस प्रक्रिया में विकास की गति सदैव एक समान नहीं होती। शैशवावस्था के शुरू के वर्षों में यह गति कुछ तीव्र होती है परन्तु बाद के वर्षों में यह मंद पड़ जाती है। पुनः किशोरावस्था के प्रारंभ में इस गति में तेजी से वृद्धि होती है परन्तु यह अधिक समय तक नहीं बनी रहती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि वृद्धि और विकास की गति में उतार-चढ़ाव आते ही रहते हैं। किसी भी अवस्था में यह एक जैसी नहीं रह जाती।

3. वंशानुक्रम एवं वातावरण का प्रभाव

बालक के विकास की प्रक्रिया में विभिन्न बाह्य और आंतरिक कारकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। बालक के विकास को प्रभावित करने वाले प्रमुख बाह्य कारक हैं-सामाजिक-आर्थिक स्थिति विशेषक एवं वातावरण जन्य विशेषक आदि। जबकि बालक के विकास को प्रभावित करने वाले प्रमुख आंतरिक कारक हैं-शारीरिक विशेषक, बौद्धिक विशेषक, संवेगात्मक विशेषक, सामाजिक विशेषक, वंशानुगत विशेषक आदि।

वंशानुक्रम का प्रभाव

वंशानुक्रम माता-पिता से संतान को प्राप्त होने वाले गुणों का नाम है। वंशानुक्रम का बालक पर निम्न रूप से प्रभाव पड़ता है—

(i) **शारीरिक विशेषक:** इसके अंतर्गत मनुष्य का शरीर, उसके अंगों का आनुपातिक गठन, स्वास्थ्य, रूप-रंग, ज्ञानेन्द्रियों

का दिखाई देने वाला रूप तथा कर्मेन्द्रियों का गठन आदि सब आ जाते हैं। इनमें से अलग-अलग व्यक्ति अलग-अलग बातों को देखकर प्रभावित होते हैं।

बालक के रंग रूप, आकार, शारीरिक गठन, ऊंचाई इत्यादि के निर्धारण में उसके आनुवांशिक गुणों का महत्वपूर्ण हाथ होता है। बालक के आनुवांशिक गुण उसकी वृद्धि एवं विकास को भी प्रभावित करते हैं। बालक के शारीरिक रंग पर उनके माता-पिता के रंग का प्रभाव सहज में देखने में आता है। इसी तरह से माता-पिता के अन्य गुण भी बच्चे में आनुवांशिक रूप से पाए जाते हैं। इसके कारण कोई बच्चा अति प्रतिभाशाली एवं सुंदर हो सकता है एवं कोई अन्य बच्चा शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर।

प्रायः यह भी देखा जाता है कि जो बालक जन्म से ही दुबले-पतले, कमजोर, बीमार तथा किसी शारीरिक बाधा से पीड़ित रहते हैं, उसकी तुलना में सामान्य एवं स्वस्थ बच्चे का विकास अधिक होता है। शारीरिक कमियों का स्वास्थ्य ही नहीं वृद्धि एवं विकास पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

- (ii) **बौद्धिक विशेषक:** इसके अंतर्गत बालक की योग्यता, कल्पनाशक्ति, विचारशक्ति एवं तर्कशक्ति, किसी समस्या के समाधान हेतु निर्णयात्मक बुद्धि, बदलती हुए परिस्थितियों में समायोजनात्मक निर्णय, आदि सभी कुछ आ जाते हैं। बौद्धिक विशेषक को सीखने की योग्यता, समायोजन योग्यता, निर्णय लेने की क्षमता आदि के रूप में भी परिभाषित किया जाता है। जिस बालक के सीखने की गति अधिक होती है, उसका मानसिक विकास भी तीव्रता से होता है। बालक अपने परिवार समाज एवं विद्यालय में अपने आपको किस तरह समायोजित करता है यह उसकी बुद्धि पर निर्भर करता है।

गोर्ड जैसे विचारकों का मत है कि मंद-बुद्धि माता-पिता की संतान मंद-बुद्धि और तीव्र-बुद्धि माता-पिता की संतान तीव्र-बुद्धि वाली होती है। मानसिक क्षमता के अनुकूल ही बालक में संवेगात्मक क्षमता का विकास होता है। बालक में जिस तरह के संवेगों का जिस रूप में विकास होता है वह उसके सामाजिक, मानसिक, नैतिक, शारीरिक तथा भाषा संबंधी विकास को पूरी तरह प्रभावित करने की क्षमता रखता है। यदि बालक अत्यधिक क्रोधित या भयभीत रहता है अथवा यदि उसमें ईर्ष्या एवं वैमनस्य की भावना अधिक होती है तो उसके विकास की प्रक्रिया पर इन सबका प्रतिकूल प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है। संवेगात्मक रूप से असंतुलित बालक पढ़ाई में या किसी अन्य गंभीर कार्यों में ध्यान नहीं दे पाते, फलतः उनका मानसिक विकास भी प्रभावित होता है। बुद्धि की श्रेष्ठता प्रजाति के कारण भी होती है।

- (iii) **नैतिक/चरित्रिक विशेषक:** नैतिकता के तहत वे सभी गुण आ जाते हैं, जो स्वार्थ को छोड़कर दूसरों की भलाई का भी ध्यान रखते हैं। इनमें सच बोलना, हिंसा न करना, भ्रष्टाचार से दूर रहना, दूसरों पर दया करना आदि सभी गुण आ जाते हैं। यदि गहराई से विचार किया जाए तो मनुष्य के बाह्य रूप का दूसरों पर इतना प्रभाव नहीं

पड़ता है, जितना कि उसके आंतरिक गुणों का और विशेषकर उसकी नैतिक विचारधारा का।

डगडेल नामक एक मनोवैज्ञानिक ने अपने प्रयोगों के आधार पर यह बताया है कि माता-पिता के चरित्र का प्रभाव भी उसके बच्चे पर पड़ता है। इस तरह व्यक्ति के चरित्र में उसके वंशानुगत कारकों का प्रभाव स्पष्ट तौर पर देखा जा सकता है।

वातावरण का प्रभाव

वातावरण में शामिल प्रत्येक घटक व्यक्ति के जीवन को आरंभ से ही प्रभावित करते हैं। गर्भावस्था के दौरान एक स्त्री को मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए इसीलिए सलाह दी जाती है कि उससे न केवल गर्भ के अंदर बालक के विकास पर असर पड़ता है बल्कि आगे के विकास की बुनियाद भी मजबूत होती है। यदि माता का स्वास्थ्य अच्छा न हो तो उसके बच्चे के अच्छे स्वास्थ्य की आशा कैसे की जा सकती है। यदि बच्चे का स्वास्थ्य अच्छा न होगा तो उसके विकास पर प्रतिकूल असर पड़ना स्वाभाविक है।

बालक के विकास पर उसके सामाजिक एवं आर्थिक कारकों का भी प्रभाव पड़ता है। गरीब परिवार के बच्चों को विकास के लिए सीमित अवसर ही उपलब्ध हो पाते हैं। उनकी आर्थिक दुर्बलता उन्हें अच्छी शिक्षा और अच्छे परिवेश से वंचित करती है। ऐसे में उनका संतुलित विकास नहीं हो पाता है। दूसरी ओर सामाजिक एवं आर्थिक संसाधनों की प्रचुरता के कारण शहरी बच्चों का सर्वांगीण विकास संतुलित रूप से होता है।

व्यक्ति के व्यक्तित्व के समग्र क्षेत्रों पर वातावरण के पड़ने वाले कुछ महत्वपूर्ण प्रभावों का संक्षिप्त विवरण निम्न है—

- (i) **शारीरिक संरचना:** व्यक्ति की शारीरिक संरचना पर वंशानुक्रम का तो प्रभाव पड़ता ही है किन्तु इस पर वातावरण के प्रभाव को भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। पहाड़ी क्षेत्र के लोगों का कद प्रायः छोटा होता है जबकि मैदानी क्षेत्र के लोगों का शरीर लंबा एवं गठीला होता है। इतना ही नहीं पीढ़ी दर पीढ़ी से निवास स्थलों में परिवर्तन करने वाले पहाड़ी एवं मैदानी क्षेत्र के लोगों के कद एवं रंग में अंतर भी देखने को मिलती है। यह अंतर वातावरण के प्रभाव के कारण होता है।
- (ii) **प्रजातीय श्रेष्ठता:** कभी-कभी ऐसा देखा जाता है कि कुछ प्रजातियों में बौद्धिक श्रेष्ठता वंशानुगत न होकर वातावरण

से प्रभावित होता है। ऐसा इसलिए होता है कि उनके पास श्रेष्ठ सामाजिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक वातावरण उपलब्ध है। यदि किसी विद्वान एवं महान व्यक्ति के बच्चे को ऐसी जगह छोड़ दिया जाए जहां का शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक वातावरण उचित न हो तो उसका अपने पिता की तरह महान बनना बहुत ही कठिन हो सकता है।

(iii) **व्यक्तित्व विकास:** किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में वंशानुक्रम की अपेक्षा वातावरण का अधिक प्रभाव पड़ता है। कोई भी व्यक्ति उपयुक्त वातावरण में रहकर अपने व्यक्तित्व का निर्माण करके आगे बढ़ सकता है और महान बन सकता है।

(iv) **बालक का सर्वांगीण विकास:** बालक के सर्वांगीण विकास में वातावरण का काफी योगदान होता है। बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास आदि पर वातावरण का सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है।

(v) **मानसिक विकास:** गोर्डन नामक मनोवैज्ञानिक के अनुसार उचित सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण न मिलने पर मानसिक विकास की गति धीमी हो जाती है। यह बात उसने नदियों के किनारे रहने वाले बच्चों का अध्ययन करके सिद्ध की। इन बच्चों का वातावरण गंदा और समाज के अच्छे प्रभावों से दूर था। अतः अध्ययन में यह बात सामने आई कि गंदे एवं समाज के अच्छे प्रभावों से दूर रहने के कारण बच्चों के मानसिक विकास पर प्रतिकूल असर पड़ा।

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि वंशानुक्रम एवं वातावरण एक दूसरे के पूरक एवं सहायक हैं। इन बातों से यह भी स्पष्ट हुआ कि शिक्षा की किसी योजना में वंशानुक्रम और वातावरण को ठीक उसी तरह पृथक नहीं किया जा सकता जिस तरह कि आत्मा एवं शरीर को। इस प्रकार स्पष्ट है कि बालक के सम्यक एवं संतुलित विकास के लिए वंशानुक्रम एवं वातावरण दोनों का संयोग अनिवार्य है।

4. समाजीकरण की प्रक्रिया

समाजीकरण का अर्थ उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से अंतः क्रिया करता हुआ सामाजिक आदतों, विश्वासों, रीति रिवाजों तथा परंपराओं एवं अभिवृत्तियों (Attitude) को सीखता है। इस क्रिया के द्वारा व्यक्ति जन कल्याण की भावना से प्रेरित होते हुए अपने आपको अपने परिवार, पड़ोस तथा अन्य सामाजिक वर्गों के अनुकूल बनाने का प्रयास करता है जिससे वह समाज का एक श्रेष्ठ, उपयोगी तथा उत्तरदायी सदस्य बन जाए तथा उक्त सभी सामाजिक संस्थाएं तथा वर्ग उसकी प्रशंसा करते रहें।

समाजीकरण की परिभाषा

कुछ चुनिंदा विद्वानों ने समाजीकरण की निम्न परिभाषाएं दी हैं-

- **ड्रेवर (Drever):** “यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने सामाजिक वातावरण से समायोजन करता है और सामाजिक मान्यता प्राप्त करके वह समाज का मान्य, सहयोगी तथा कुशल सदस्य बनता है।”
- **वाटसन (Watson):** “समाजीकरण एक सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है।”

- **रास (Ross):** “समाजीकरण सहयोग करने वाले व्यक्तियों में सामूहिक भावना का विकास करता है और उनमें एक साथ कार्य करने की इच्छा तथा क्षमता में वृद्धि करता है।”
- **सोरोकिन (Sorokin):** समाजीकरण सांस्कृतिक तथा वैचारिक कारकों के अंतरीकरण की प्रक्रिया है।”

समाजीकरण की प्रक्रिया

बालक के समाजीकरण की प्रक्रिया जन्म के कुछ दिन बाद से ही प्रारंभ हो जाती है। बालक के समाजीकरण की प्रक्रिया परिवार से प्रारंभ होती है। परिवार के सदस्य के रूप में बालक परिवार के अन्य सदस्यों से अंतः क्रियात्मक संबंध स्थापित करता है और उनके व्यवहारों का अनुकरण करता है। इस प्रकार अनुकरण करते हुए जाने अनजाने बालक परिवार के अन्य सदस्यों की भूमिका भी अदा करने लगता है। अनुकरण के आधार पर ही वह माता-पिता, भाई-बहन आदि की भूमिकाओं को सीखता है। उसके ये व्यवहार धीरे-धीरे स्थिर हो जाते हैं। धीरे-धीरे बालक अपने तथा पिता और अपने तथा माता के मध्य के अंतर को समझने लगता है कि वह स्वयं क्या है? इस प्रकार स्वयं (Self) का विकास होता है जो समाजीकरण का एक आवश्यक तत्व है।

बालक के समाजीकरण करने वाले कारक

बालक जन्म के समय कोरा पशु होता है। जैसे-जैसे वह समाज के अन्य व्यक्तियों तथा सामाजिक संस्थाओं के संपर्क में आकर विभिन्न प्रकार की सामाजिक क्रियाओं में भाग लेता रहता है वैसे-वैसे वह अपनी पाश्विक प्रवृत्तियों को नियंत्रित करते हुए सामाजिक आदर्शों तथा मूल्यों को सीखता रहता है। बालक के समाजीकरण की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। बालक के समाजीकरण में सहायक मुख्य कारक अथवा तत्व निम्नांकित हैं-

- | | |
|-----------------------|--------------------------|
| 1. परिवार | 2. आयु समूह |
| 3. पड़ोस | 4. नातेदारी समूह |
| 5. स्कूल | 6. खेलकूद |
| 7. जाति | 8. समाज |
| 9. भाषा समूह | 10. राजनैतिक संस्थाएं और |
| 11. धार्मिक संस्थाएं। | |

बालक के समाजीकरण में बाधक तत्व

मैसलो और मिटिलमैन (Maslow and Mittlemen) जैसे विचारकों के अनुसार बालकों के समाजीकरण में बाधा पहुंचाने वाले तत्व इस प्रकार हैं-

1. **सांस्कृतिक परिस्थितियां:** जैसे जाति, धर्म, वर्ग आदि से संबद्ध पूर्व धारणाएं आदि।
2. **बाल्यकालीन परिस्थितियां:** जैसे माता-पिता का प्यार न मिलना, माता-पिता में सदैव कलह, विधवा मां, पक्षपात, एकाकीपन तथा अनुचित दंड आदि।
3. **तात्कालिक परिस्थितियां:** जैसे निराशा, अपमान, अभ्यास अनियमितता, कठोरता, परिहास और भाई-बहन, मित्र, पड़ोसी आदि की ईर्ष्या।
4. **अन्य परिस्थितियां:** जैसे शारीरिक हीनता, निर्धनता, असफलता, शिक्षा की कमी, आत्म विश्वास का अभाव तथा आत्म-निर्भरता की कमी आदि।

समाजीकरण की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका

बालक के समाजीकरण की प्रक्रिया में परिवार के बाद स्कूल और स्कूल में विशेष रूप से शिक्षक आता है। प्रत्येक समाज के कुछ विश्वास, दृष्टिकोण, मान्यताएं, कुशलताएं और परंपराएं होती हैं। जिनको 'संस्कृति' के नाम से पुकारा जाता है। यह संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित की जाती है और समाज के लोगों के आचरण को प्रभावित करती है। शिक्षक का सर्वश्रेष्ठ कार्य है इस संस्कृति को बालक को प्रदान करना। यदि वह यह

कार्य नहीं करता है तो बालक का समाजीकरण नहीं कर सकता है। शिक्षक, माता-पिता के साथ बालक के चरित्र और व्यक्तित्व का विकास करने में अति महत्वपूर्ण कार्य करता है।

कक्षा में, खेल के मैदान में, साहित्यिक और सांस्कृतिक क्रियाओं में शिक्षक सामाजिक व्यवहार के आदर्श प्रस्तुत करता है। बालक अपनी अनुकरण की मूल प्रवृत्ति के कारण शिक्षक के ढंगों, कार्यों, आदतों और नीतियों का अनुकरण करता है। अतः शिक्षक को सदैव सतर्क रहना चाहिए, उसे कोई ऐसा अनुचित कार्य या व्यवहार नहीं करना चाहिए, जिसका बालक के ऊपर गलत प्रभाव पड़े। अतः बालक के समाजीकरण की प्रक्रिया को तीव्र गति प्रदान करने के लिए शिक्षक को मुख्यतः निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए-

- (i) **सामाजिक आदर्श:** शिक्षक को चाहिए कि वह कक्षा तथा खेल के मैदानों एवं सांस्कृतिक और साहित्यिक क्रियाओं में बालक के सामने सामाजिक आदर्शों को प्रस्तुत करे। इन आदर्शों का अनुकरण करके बालक का धीरे-धीरे समाजीकरण हो जाएगा।
- (ii) **स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना:** बालक के समाजीकरण में प्रतियोगिता का महत्वपूर्ण स्थान होता है। पर ध्यान देने की बात है कि बालक के समाजीकरण के लिए स्वस्थ प्रतियोगिता का होना ही अच्छा है। अतः शिक्षक को बालक में स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना विकसित करनी चाहिए।
- (iii) **अभिभावक शिक्षक सहयोग:** समाजीकरण की प्रक्रिया को तीव्र गति प्रदान करने के लिए शिक्षक का सर्वप्रथम कार्य यह है कि वह बालक के माता-पिता से संपर्क स्थापित करके उसकी रुचियों तथा मनोवृत्तियों के विषय में ज्ञान प्राप्त करे एवं उन्हीं के अनुसार उसे विकसित होने के अवसर प्रदान करे।
- (iv) **स्कूल की परंपराएं:** स्कूल की परंपराओं का बालक के समाजीकरण पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अतः शिक्षक को चाहिए कि वह बालक का स्कूल की परंपराओं में विश्वास उत्पन्न करे तथा उसे इन्हीं के अनुसार कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करे।
- (v) **सामूहिक कार्य को प्रोत्साहन:** शिक्षक को चाहिए कि वह स्कूल में विभिन्न सामाजिक योजनाओं के द्वारा बालकों को सामूहिक क्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग लेने के अवसर प्रदान करे। इन क्रियाओं में भाग लेने से उसका समाजीकरण स्वतः ही हो जाएगा।

उपर्युक्त बातों से स्पष्ट है कि शिक्षक बालक के समाजीकरण को प्रभावित करता है। शिक्षक के स्नेह, पक्षपात, बुरे व्यवहार, दण्ड आदि का बालकों पर कुछ न कुछ प्रभाव पड़ता है और उसका सामाजिक विकास उत्तम या विकृत हो जाता है। यदि शिक्षक, मित्रता और सहयोग में विश्वास करता है तो बच्चों में

भी इन गुणों का विकास होता है। यदि शिक्षक छोटी-छोटी बातों पर बच्चों को दंड देता है, तो उनके समाजीकरण में संकीर्णता आ जाती है। यदि शिक्षक अपने छात्रों के प्रति सहानुभूति रखता है, तो छात्रों का समाजीकरण सामान्य रूप से होता है।

5. प्याजे, कोहलबर्ग एवं व्योट्स्की के सिद्धांत

विकास की विभिन्न अवस्था में बालकों में विशेष प्रकार के गुण एवं विशेषताएं देखने को मिलती हैं। इस संदर्भ में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने विकास की विभिन्न अवस्थाओं के संबंध में अलग-अलग प्रकार के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। विकास की विभिन्न अवस्थाओं से संबद्ध सिद्धांतों में जीन प्याजे (Jean piaget), लॉरेंस कोहलबर्ग (Lawrence Kohlberg) एवं लेव व्योट्स्की (Lev Vygotsky) द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

जीन प्याजे का मानसिक विकास अवस्था से संबद्ध सिद्धांत

स्विट्जरलैंड निवासी प्याजे के अनुसार ज्ञानात्मक विकास की अवस्थाओं में एक क्रम होता है। हम बाद की अवस्थाओं की योग्यता समय से पूर्व प्राप्त नहीं कर सकते। उन्होंने विकास के पांच चरणों की अवस्थाओं का उल्लेख किया है जो निम्नवत् हैं-

- (i) **इंद्रिय गामक आग्रहण की अवस्था (0 - 2 वर्ष):** यह अवस्था शिशु की उल्टी-सीधी हरकतों से आरंभ होती है और फिर बच्चा अभ्यास एवं संयोजन (इंद्रियजनित गामक अंगों—Sensori motor organan) द्वारा इस अवस्था तक आता है। दो वर्ष की समाप्ति पर जब बच्चा विभिन्न वस्तुओं के बीच में संयोजन करना सीख लेता है तो आरंभिक प्रत्यय का विकास होता है।
- (ii) **सांकेतिक एवं पूर्व प्रत्ययी विचारों की अवस्था (2-4 वर्ष):** इस अवस्था में बच्चे के मस्तिष्क में विचार आने लगते हैं और चौथे वर्ष के अंत तक वह संकेतों का प्रयोग करने लगता है।
- (iii) **स्वजनित विचारों की अवस्था (4-8 वर्ष):** इस अवधि में बालक विभिन्न संकल्पनाओं को विभिन्न परिस्थितियों में प्रयोग कर सकता है अर्थात् उसके अंदर सामान्यीकरण की क्षमता आ जाती है।

- (iv) **मूर्त क्रिया की अवस्था (8-12 वर्ष):** इस अवधि में बालक अपना ध्यान रूकी हुई अवस्था से हटा सकता है अर्थात् वह अपने वर्तमान अनुभवों के आधार पर अपने भविष्य को पहचान सकता है।

लॉरेंस कोहलबर्ग का नैतिक विकास अवस्था से संबद्ध सिद्धांत

बालक में चरित्र निर्माण या नैतिक विकास के संदर्भ में लॉरेंस कोहलबर्ग ने अपने खोज एवं अनुसंधान के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि बालकों में नैतिकता के विकास की कुछ निश्चित एवं सार्वभौमिक अवस्थाएं पाई जाती हैं। कोहलबर्ग द्वारा प्रतिपादित अवस्थाओं को विस्तृत रूप से पांच वर्गों में रखा जाता है—

- (i) **पूर्व नैतिक अवस्था:** यह अवस्था जन्म से लेकर दो वर्ष की आयु तक विद्यमान रहती है। इस अवस्था में उसे अपनी इच्छाओं, भावनाओं एवं संवेगों पर नियंत्रण करना नहीं आता और परिणामस्वरूप वह अपनी मर्जी के अनुसार इच्छित व्यवहार करता है। इस अवस्था में बालक से नैतिकता एवं चारित्रिक मूल्यों से संबद्ध बातों की आशा करना बेमानी है।
- (ii) **स्वकेंद्रित अवस्था:** यह अवस्था 3 से 6 वर्ष तक होती है। इस अवस्था में बालक की सभी व्यावहारिक क्रियाएं अपनी वैयक्तिक आवश्यकताओं और इच्छाओं की पूर्ति के चारों ओर केंद्रित रहती हैं। उसके लिए नैतिकता का मानदंड उसके अपने कल्याण से जुड़ा होता है।
- (iii) **परंपराओं को धारण करने की अवस्था:** यह अवस्था सात वर्ष से किशोरावस्था के आरंभिक काल तक होती है। इस अवस्था का बालक सामाजिकता के गुणों को धारण करता है। ऐसे में उसमें समाज निर्मित नियमों एवं परंपराओं के धारण करने संबंधी नैतिकता का विकास

होता है। इस अवस्था में उसे अच्छाई बुराई का ज्ञान हो जाता है तथा वह यह समझने लगता है कि किस तरह के व्यवहार से दूसरे को हानि तथा ठेस पहुंच सकती है।

(iv) **आधारहीन आत्म चेतनावस्था:** यह अवस्था किशोरावस्था से जुड़ी हुई है। इस अवस्था में बालकों का सामाजिक, शारीरिक तथा मानसिक विकास अपनी चरम पर होता है तथा उसमें आत्म-चिंतन का प्रादुर्भाव होता है। इस अवस्था में उसमें 'मैं' भावना अर्थात् मैं ऐसा व्यवहार करता हूं, यह मेरा आचरण है आदि की उसे अनुभूति होने लगती है। साथ ही उसमें अपने आचरण, व्यवहार एवं व्यक्तिगत गुणों अवगुणों के प्रति आलोचनात्मक प्रवृत्ति का भी विकास होता है। पूर्णता की चाह उसमें स्वयं से असंतुष्ट रहने का मार्ग प्रशस्त करती है। यह असंतुष्टि ही उसे समाज में होने वाली गलत कार्यों के प्रति विद्रोही रूख अपनाने के लिए प्रेरित करती है।

(v) **आधारयुक्त आत्मचेतना:** यह नैतिक विकास की चरम अवस्था है। इसका विकास बालक की भली भांति परिपक्वता ग्रहण करने के बाद होता है। इस अवस्था में जिस प्रकार के नैतिक आचरण और चारित्रिक मूल्यों की बात व्यक्ति विशेष से की जाती है उसके पीछे केवल उसकी भावनाओं का प्रवाह मात्र ही नहीं होता बल्कि वह अपनी मानसिक शक्तियों का उचित प्रयोग करते हुए अच्छी तरह सोच समझकर किसी व्यवहार या आचरण विशेष को अपने व्यक्तिगत गुणों में शामिल करता है।

लेव व्यगोट्स्की का सामाजिक विकास से संबद्ध सिद्धांत

सोवियत रूस निवासी लेव व्यगोट्स्की द्वारा प्रतिपादित इस सिद्धांत में यह बताया गया है कि बालक के सभी प्रकार के विकास में उसके सामाजिक परिवेश का विशेष योगदान होता है। समाज में उसे जिस तरह की सुविधाएं उपलब्ध होंगी उसका विकास भी उसी प्रकार का होगा। सभी प्रकार की सुविधाओं की अनुपलब्धता की स्थिति में उसके विकास पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। जन्म के समय शिशु का व्यवहार सामाजिकता से काफी दूर होता है। वह अत्यधिक स्वार्थी होता है। उसे केवल अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने की चाहत होती है। वह दूसरों की आवश्यकताओं और हित चिंतन के विषय में एकदम नहीं सोचता है। उस आयु में वह निर्जीव तथा सजीव पदार्थों में अंतर नहीं समझ पाता। अतः सामाजिक विकास के दृष्टिकोण से उससे बहुत आशा नहीं की जा सकती।

जब बालक बाल्यावस्था से किशोरावस्था में प्रवेश करता है तो उसमें लिंग संबंधी चेतना तीव्र हो जाती है। इस आयु में अधिकतर किशोर-किशोरियां अपने वय-समूह के सक्रिय सदस्य होते हैं। किशोरों में समूह के प्रति यह भावना अब केवल टोली या गिरोह विशेष तक ही सीमित नहीं रहती बल्कि यह विद्यालय, समुदाय, प्रांत और राष्ट्र तक व्यापक बन जाती है। इस अवस्था में सहानुभूति, सहयोग, सद्भावना, परोपकार और त्याग में अच्छा सामंजस्य देखने को मिलता है। वैयक्तिक विशेषताओं के अतिरिक्त सांस्कृतिक, परिवार की सामाजिक और आर्थिक स्थिति, यौन संबंधी स्वतंत्रता और जानकारी आदि सामाजिक रूचियों और सामाजिक संबंधों को प्रभावित करती है।

6. बाल केंद्रित शिक्षा एवं प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा

बालकेंद्रित शिक्षा

बालक के मनोविज्ञान को समझते हुए शिक्षा की व्यवस्था करना एवं उसकी कठिनाइयों को दूर करना ही बालकेंद्रित शिक्षा है। विभिन्न कालों में शिक्षा का स्वरूप भिन्न-भिन्न रहा है। प्राचीन काल में जहां शिक्षा का उद्देश्य बालकों के मस्तिष्क में मात्र कुछ जानकारी भरना समझा जाता था वहीं आधुनिक काल में बालक का सर्वांगीण विकास शिक्षक का परम उद्देश्य बताया गया है। इस कार्य के लिए शिक्षक को बाल मनोविज्ञान की जानकारी जरूर होनी चाहिए। शिक्षक के लिए बाल मनोविज्ञान की उपयोगिता इसलिए भी जरूरी है ताकि वह इसका प्रयोग शिक्षा

संबंधी विभिन्न क्षेत्रों यथा— अनुशासन, व्यवहार, जागरूकता आदि के क्षेत्र में कर सके। इससे यह स्पष्ट होता है कि एक शिक्षक को शिक्षा तथा छात्रों के प्रति क्या अभिवृत्ति (Attitude) होनी चाहिए।

बाल-केंद्रित शिक्षा की मुख्य विशेषताएं

बाल-केंद्रित शिक्षा की प्रकृति के भिन्नता के कारण इसकी कुछ अलग प्रकार की विशेषताएं हैं। इसकी मुख्य विशेषताएं निम्नवत् हैं—

1. **बालकों को ठीक से समझना:** जब से मनोविज्ञान ने शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश किया है, शिक्षा का स्वरूप

बाल-केंद्रित हो गया है। अब प्रत्येक बालक की ओर व्यक्तिगत रूप से अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया में ध्यान दिया जाता है। आज शिक्षा का उद्देश्य बालक के ऊपर ज्ञान थोपना नहीं वरन् उसका एकमात्र उद्देश्य बालक में निहित शक्तियों का विकास करना है। इस तरह बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना ही आज की शिक्षा का अंतिम उद्देश्य है।

ऐसे में इस बात की आवश्यकता है कि शिक्षक को बालकों के मनोविज्ञान की जानकारी हो, अन्यथा वह उन्हें क्या सिखाएगा कहना बहुत मुश्किल है। अतः शिक्षक को बालक के व्यवहार के मूलाधारों, आवश्यकताओं, मानसिक स्तर, रुचियों, योग्यताओं, व्यक्तित्व आदि का विस्तृत ज्ञान होना चाहिए। व्यवहार के मूलाधारों का ज्ञान तो सबसे अधिक आवश्यक है, क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य ही बालक के व्यवहार को परिमार्जित करना है। अतः शिक्षा बालक की प्रेरणाओं, संवेगों एवं मूल प्रवृत्तियों पर आधारित होनी चाहिए। मनोविज्ञान के ज्ञान के अभाव में शिक्षक मारपीट द्वारा बच्चों के उन दोषों को दूर करने का प्रयत्न करता है, परन्तु बालकों को समझने वाला शिक्षक यह जानता है कि इन दोषों का मूल उनकी शारीरिक, सामाजिक अथवा मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं में ही कहीं न कहीं है।

2. शिक्षण पद्धति: शिक्षा शास्त्र शिक्षक को यह बताता है कि बालकों को क्या पढ़ाया जाए, परन्तु असली समस्या यह है कि किस प्रकार पढ़ाया जाए। इस समस्या के समाधान में बाल मनोविज्ञान ही वह माध्यम है जो शिक्षक को सहायता करता है। बाल मनोविज्ञान सीखने की प्रक्रिया, विधियों, महत्वपूर्ण कारकों, लाभदायक और हानिकारक दशाओं, रुकावटों के जानने का कारण तथा प्रशिक्षण संक्रमण आदि जैसे विभिन्न तत्त्वों से परिचित कराता है। इनसे प्राप्त ज्ञान से शिक्षक बालकों को सीखने में सहायता कर सकता है। शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षण की विधियों का भी मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करता है और उनमें सुधार के उपाय बतलाता है। बाल-केंद्रित शिक्षा में शिक्षण विधि को प्रयोग में लाते समय बाल-मनोविज्ञान को ही आधार बनाया जाता है।

3. मूल्यांकन एवं परीक्षण विधि: शिक्षण से ही शिक्षक की समस्या हल नहीं हो जाती। उसे बालकों के ज्ञान और विकास का मूल्यांकन और परीक्षण करना होता है।

मूल्यांकन से परीक्षार्थी की उन्नति का पता चलता है। शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक और शिक्षार्थी बराबर यह जानना चाहते हैं कि वे कहां प्रगति कर रहे हैं और यदि उनको सफलता अथवा असफलता मिली है तो क्यों और उसमें क्या परिवर्तन किए जा सकते हैं।

4. पाठ्यक्रम की प्रकृति: समाज और व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति को ध्यान में रखते हुए स्कूल के पाठ्यक्रम की प्रकृति व्यक्तिगत विभिन्नताओं, प्रेरणाओं, मूल्यों और सीखने के सिद्धांतों के मनोवैज्ञानिक ज्ञान पर आधारित होनी चाहिए। बालकेंद्रित शिक्षा में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि पाठ्यक्रम की प्रकृति का विकास बालक की आवश्यकताओं, उसकी आयु एवं विशेष अवस्थाओं आदि जैसे उसके विशेष गुणों के अनुरूप ही हो।

5. व्यवस्थापन एवं अनुशासन का प्रयोग: बालकेंद्रित शिक्षा में कक्षा एवं विद्यालय में अनुशासन एवं व्यवस्था बनाए रखने के लिए भी बाल मनोविज्ञान सहायक के रूप में कार्य करता है।

प्रगतिशील शिक्षा

प्रगतिशील शिक्षा में मुख्य जोर शिक्षण विधि की व्यावहारिकता पर दिया जाता है। इस शिक्षण विधि में बालक के स्वयं करके सीखने की प्रक्रिया पर जोर दिया जाता है। इस शिक्षण विधा में बालक के जीवन, क्रियाओं और विषयों में एकता स्थापित की जाती है। यह बालक के जीवन की क्रियाओं को समग्र रूप से विकसित करने पर जोर देता है।

इस शिक्षा पद्धति में बालक की रुचि को महत्व दिया जाता है। जॉन डीवी ने प्रगतिशील शिक्षा के तहत शिक्षा में दो तत्त्वों को विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना है— प्रथम रुचि एवं द्वितीय प्रयास। शिक्षक को बालक की स्वाभाविक रुचियों को समझकर उसके लिए उपयोगी कार्यों की व्यवस्था करनी चाहिए। बालक को स्वयं कार्यक्रम बनाने का अवसर दिया जाना चाहिए। ताकि वे अपनी रुचियों के अनुसार कार्यक्रम बना सकें। ऐसा करने से उनमें किसी तरह का भय या दबाव नहीं रहेगा और वे कार्यक्रम को रुचि के अनुसार बना सकेंगे। फलतः स्कूल क्रिया आत्म-क्रिया बन सकेगी। जॉन डीवी के शिक्षा संबंधी इन विचारों के आधार पर ही आगे चलकर प्रोजेक्ट-प्रणाली का जन्म हुआ। प्रोजेक्ट-प्रणाली में यह उल्लेख किया गया कि बालक को ऐसे

काम दिए जाने चाहिए कि उनमें स्फूर्ति, आत्म-विश्वास, आत्म-निर्भरता और मौलिकता का विकास हो सके।

प्रगतिशील शिक्षा में शिक्षक को सम्मानजनक और महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है तथा इस बात का उल्लेख किया गया है कि शिक्षक समाज का सेवक है। इस शिक्षा पद्धति में शिक्षक से यह आशा की गई है कि वह विद्यालय में ऐसे वातावरण का निर्माण करे कि उसमें पल-बढ़कर बालक का सामाजिक व्यक्तित्व विकसित हो सके और वह लोकतंत्र का एक सफल एवं योग्य नागरिक बन सके।

प्रगतिशील शिक्षा में अनुशासन का भी महत्वपूर्ण स्थान है लेकिन अनुशासन के नाम पर बालक की स्वाभाविक प्रवृत्तियों को कुंठित करने के प्रयास को अनुचित माना गया है।

सच्चा अनुशासन एक प्रकार से सामाजिक अनुशासन है और यह बालक के विद्यालय के सामूहिक कार्यों में भाग लेने से उत्पन्न होता है। विद्यालय में ऐसे वातावरण का निर्माण किया जाना चाहिए ताकि बालक परस्पर सहयोग से रहने का अभ्यास कर सकें। विद्यालय में एक से उद्देश्य लेकर शारीरिक, सामाजिक,

बौद्धिक एवं नैतिक कार्यों में एक साथ भाग लेने से बालकों में अनुशासन का भाव उत्पन्न होता है और उनमें नियमित रूप से कार्य करने की आदत विकसित होती है। विद्यालयों में होने वाले कार्यक्रमों में बालक के चरित्र-निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है। बालक को प्रत्यक्ष रूप से उपदेश न देकर उसे सामाजिक परिवेश उपलब्ध कराया जाना चाहिए और उसके सामने ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए जाने चाहिए ताकि उसमें आत्मानुशासन उत्पन्न हो और वह सही अर्थों में सामाजिक प्राणी बन सके।

वर्तमान में शिक्षा को अनिवार्य और सार्वभौमिक बनाने पर जो जोर दिया जा रहा है वह मुख्यतः प्रगतिशील शिक्षा के सिद्धांतों के ही समान है। शिक्षा का लक्ष्य व्यक्तित्व का विकास है और प्रत्येक व्यक्ति को उसके व्यक्तित्व का विकास करने के लिए शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दिया जाना चाहिए। आधुनिक शिक्षा में वैज्ञानिक और सामाजिक प्रवृत्ति के जो तत्त्व विद्यमान हैं उनमें प्रगतिशील शिक्षा का योगदान है। इसके अनुसार शिक्षा एक सामाजिक आवश्यकता है। इसका लक्ष्य व्यक्ति और समाज दोनों का विकास है। इससे व्यक्ति का बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक और शारीरिक विकास होता है।

7. बुद्धि निर्माण का समालोचनात्मक विचार

आमतौर पर बुद्धि का प्रयोग प्रज्ञा, प्रतिभा, ज्ञान एवं समझ इत्यादि जैसे अनेक अर्थों में किया जाता है। यह वह शक्ति है, जो हमें समस्याओं का समाधान करने एवं उद्देश्यों को प्राप्त करने में सक्षम बनाती है।

बुद्धि की परिभाषा को उसके लक्षणों के आधार पर मुख्यतः पांच वर्गों में बांटा गया है—

1. सीखने की योग्यता।
2. समन्वय की योग्यता।
3. समस्या समाधान की योग्यता।
4. अमूर्त चिंतन की योग्यता।
5. समायोजन की योग्यता।

1. सीखने की योग्यता

प्रमुख परिभाषाएं: सीखने की योग्यता के आधार पर निम्न विद्वानों ने बुद्धि की परिभाषा इस प्रकार से दी है

- (i) बकिंघम के अनुसार, “सीखने की योग्यता बुद्धि है।”

- (ii) मैक्डूगल के अनुसार, “बुद्धि जन्मजात प्रवृत्ति को अतीत के अनुभव के प्रकाश में सुधारने की योग्यता है।”
- (iii) डियर बोन के अनुसार, “बुद्धि सीखने या अनुभव का लाभ उठाने की योग्यता है।”

2. समन्वय की योग्यता

प्रमुख परिभाषाएं: समन्वय की योग्यता के आधार पर निम्न विद्वानों ने बुद्धि की परिभाषा इस प्रकार से दी है—

- (i) रेक्सनाइट के अनुसार, “बुद्धि वह मानसिक योग्यता है जिसके द्वारा हम किसी उद्देश्य की पूर्ति या किसी समस्या का समाधान करने के लिए संबंधित वस्तुओं एवं विचारों को सोचते हैं।”
- (ii) वेक्सलर के अनुसार, “बुद्धि व्यक्ति की संपूर्ण शक्तियों का भोग या सार्वभौमिक योग्यता है जिसके द्वारा वह उद्देश्यपूर्ण कार्य करता है, तर्कपूर्ण ढंग से सोचता है तथा प्रभावपूर्ण ढंग से वातावरण के साथ संपर्क स्थापित करता है।”

3. समस्या समाधान की योग्यता

प्रमुख परिभाषाएं: समस्या समाधान की योग्यता के आधार पर निम्न विद्वानों ने बुद्धि की परिभाषा इस प्रकार से दी है—

- (i) रेक्सनाइट के अनुसार, “बुद्धि वह योग्यता है जो लक्ष्य की पूर्ति तथा समस्या समाधान के निमित्त हमारे मन में विचारों को जाग्रत करती है।”
- (ii) बर्ट के अनुसार, “बुद्धि में अच्छी तरह निर्णय करने, समझने तथा तर्क करने की योग्यता है।”

4. अमूर्त चिंतन की योग्यता

प्रमुख परिभाषाएं: अमूर्त चिंतन की योग्यता के आधार पर निम्न विद्वानों ने बुद्धि की परिभाषा इस प्रकार से दी है—

- (i) स्पीयरमैन के अनुसार, “बुद्धि सामवर्धिक चिंतन है।”
- (ii) विने के अनुसार, “किसी समस्या को समझना, उसके विषय में तर्क करना तथा किसी निश्चित निर्णय पर पहुंचना बुद्धि की आवश्यक क्रियाएं हैं।”
- (iii) टरान के अनुसार, “एक व्यक्ति उसी अनुपात में बुद्धिमान है जिसमें वह अमूर्त चिंतन करने की योग्यता रखता है।”

5. समायोजन की योग्यता

प्रमुख परिभाषाएं: समायोजन की योग्यता के आधार पर निम्न विद्वानों ने बुद्धि की परिभाषा इस प्रकार दी है—

- (i) कालविन के अनुसार, “एक व्यक्ति उसी अनुपात में बुद्धि प्रकट करता है जिस अनुपात में वह अपने नए वातावरण में समायोजित होने की क्रिया सीख चुका है या सीख सकता है।”
- (ii) स्टर्न के अनुसार, “नवीन परिस्थितियों में अपने विचारों को समायोजित करने की क्षमता बुद्धि है।”
- (iii) क्लूज के अनुसार, “बुद्धि नवीन एवं विभिन्न परिस्थितियों में अच्छी तरह से समायोजन करने की योग्यता है।”
- (iv) बर्ट के अनुसार, “सापेक्षतया नवीन परिस्थितियों में समायोजन करने की योग्यता को बुद्धि कहते हैं।”

बुद्धि के सिद्धांत

बुद्धि से संबद्ध विभिन्न पक्षों, यथा—बुद्धि क्या है और इसका निर्माण कैसे हुआ है? आदि प्रश्नों का उत्तर मनोवैज्ञानिक खोजने के लिए सदैव तत्पर रहे हैं। फलतः बुद्धि के उन्होंने अनेक

सिद्धांत प्रतिपादित किए जो बुद्धि के स्वरूप का पर्याप्त विवरण देते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख सिद्धांत निम्न प्रकार से हैं—

1. एक खंड का सिद्धांत।
2. दो खंड का सिद्धांत।
3. तीन खंड का सिद्धांत।
4. बहुखंड का सिद्धांत।
5. मात्रा सिद्धांत।

1. एक खंड का सिद्धांत : इस सिद्धांत के प्रतिपादक टर्मन और स्टर्न हैं। इनके अनुसार बुद्धि एक अखंड और अविभाज्य है। इस प्रकार इन्होंने बुद्धि को एक अखंड और अविभाज्य इकाई माना है।

2. दो खंड का सिद्धांत : इस सिद्धांत के प्रतिपादक स्पीयरमैन हैं। उनके अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति में दो तरह की बुद्धि होती है—सामान्य और विशिष्ट।

(i) **सामान्य योग्यता:** स्पीयरमैन के अनुसार, “सामान्य योग्यता सब व्यक्तियों में कम या अधिक मात्रा में मिलती है।” इसकी मुख्य विशेषताएं हैं—

- यह प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न होती है।
- यह उसके सभी मानसिक कार्यों में प्रयोग की जाती है।
- यह भाषा, विज्ञान, दर्शन आदि में सामान्य सफलता प्रदान करती है।
- यह योग्यता व्यक्ति में जन्मजात होती है।
- यह उसमें सदैव एक-सी रहती है।
- यह जिस व्यक्ति में जितनी अधिक होती है उतना ही वह अधिक सफल होता है।

(ii) **विशिष्ट योग्यता:** इन योग्यताओं का संबंध व्यक्ति के विशिष्ट कार्यों से होता है। इनकी मुख्य विशेषताएं हैं:

- ये योग्यताएं विभिन्न व्यक्तियों में विभिन्न और अलग-अलग मात्रा में होती हैं।
- जिस व्यक्ति में जो योग्यता अधिक होती है उसी से संबंधित कुशलता में वह विशेष अर्जित करता है।
- योग्यताएं अनेक और एक-दूसरे से स्वतंत्र होती हैं।
- ये योग्यताएं भाषा, विज्ञान, दर्शन आदि में विशेष सफलता प्रदान करती हैं।
- विभिन्न योग्यताओं का संबंध विभिन्न कुशल कार्यों में होता है।
- ये योग्यताएं अर्जित की जा सकती हैं।

3. तीन खंड का सिद्धांत : दो खंड का सिद्धांत प्रतिपादित करने के बाद स्पीयरमैन ने बुद्धि का एक खंड और बताया तथा उसने इसका नाम सामूहिक खंड या तत्त्व रखा। उसने इस खंड में ऐसी योग्यताओं को स्थान दिया जो सामान्य योग्यता से श्रेष्ठ और विशिष्ट योग्यताओं से निम्न होने के कारण उनके मध्य का स्थान ग्रहण करती हैं।

4. बहुखंड का सिद्धांत : स्पीयरमैन के बुद्धि के सिद्धांत पर आगे कार्य करके मनोवैज्ञानिकों ने 'बहुखंड का सिद्धांत' प्रतिपादित किया।

कैली ने अपनी पुस्तक में बुद्धि को निम्नलिखित खण्डों या योग्यताओं का समूह बताया है:

- शारीरिक योग्यता
- सामाजिक योग्यता
- शाब्दिक योग्यता
- संगीतात्मक योग्यता
- यांत्रिक योग्यता
- सांख्यिकीय योग्यता
- गामक योग्यता
- स्थान एवं विचार संबंधी योग्यता
- रुचि संबंधी योग्यता

5. मात्रा सिद्धांत : इस सिद्धांत के प्रतिपादक थॉर्नडाइक हैं। वह सामान्य मानसिक योग्यता के समान किसी तत्त्व को स्वीकार नहीं करते। उनके अनुसार मस्तिष्क का गुण स्नायु तंतुओं की मात्रा पर निर्भर करता है। इसका अभिप्राय है कि बुद्धि उतनी ही अच्छी होती है जितने अधिक मस्तिष्क और स्नायुमंडल के संबंध होते हैं।

आधुनिक विचारधारा को व्यक्त करने हेतु हिवटमर ने कहा है कि "यह कहने के बजाय कि व्यक्ति में बुद्धि है यह कहना अधिक उपयुक्त है कि वह अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवहार करता है।"

बुद्धि के प्रकार

कुछ विद्वानों ने (विशेषतः थॉर्नडाइक एवं गैरिट) बुद्धि का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया है—

थॉर्नडाइक के अनुसार बुद्धि का वर्गीकरण

- (i) **अमूर्त बुद्धि:** अमूर्त बुद्धि ज्ञानोपार्जन के लिए प्रयोग की जाती है। शब्दों, प्रतीकों, समस्या-समाधान आदि के

रूप में अमूर्त रूप में अमूर्त बुद्धि का प्रयोग किया जाता है।

- (ii) **मूर्त/यांत्रिक बुद्धि:** इस बुद्धि की सहायता से व्यक्ति यंत्रों तथा भौतिक वस्तुओं का परिचालन करता है। ऐसे व्यक्ति इंजीनियर, मैकेनिक, तकनीशियन आदि होते हैं।

- (iii) **सामाजिक बुद्धि:** इस बुद्धि के द्वारा व्यक्ति समाज में समायोजन करता है। विभिन्न व्यवसायों में सफलता प्राप्त करता है।

गैरिट के अनुसार बुद्धि का वर्गीकरण

- (i) **मूर्त/यांत्रिक बुद्धि:** इस बुद्धि का संबंध यंत्रों और मशीनों से होता है। जिस व्यक्ति में यह बुद्धि होती है वह यंत्रों और मशीनों के कार्य में विशेष रुचि लेता है। अतः इस बुद्धि के व्यक्ति अच्छे कारीगर मैकेनिक, इंजीनियर, औद्योगिक कार्यकर्ता आदि होते हैं।

- (ii) **अमूर्त बुद्धि:** इस बुद्धि का संबंध पुस्तकीय ज्ञान से होता है। जिस व्यक्ति में यह बुद्धि होती है, वह ज्ञान का अर्जन करने में विशेष रुचि लेता है। अतः इस बुद्धि के व्यक्ति अच्छे वकील, डॉक्टर, दार्शनिक, चित्रकार, साहित्यकार आदि होते हैं।

- (iii) **सामाजिक बुद्धि:** इस बुद्धि का संबंध व्यक्तिगत और सामाजिक कार्यों से होता है। जिस व्यक्ति में यह बुद्धि होती है, वह मिलनसार, सामाजिक कार्यों में रुचि लेने वाला और मानव-संबंध के ज्ञान से परिपूर्ण होता है। अतः इस बुद्धि के व्यक्ति अच्छे मंत्री, व्यवसायी, कूटनीतिज्ञ और सामाजिक कार्यकर्ता होते हैं।

बुद्धि-लब्धि

बुद्धि-लब्धि से बालक या व्यक्ति की सामान्य योग्यता के विकास की गति मालूम पड़ती है।

कोल एवं ब्रूस के अनुसार, "बुद्धि-लब्धि से यह ज्ञात होता है कि बालक या व्यक्ति की सामान्य योग्यता के विकास की गति कैसी है।"

कोल एवं ब्रूस के अनुसार, "बुद्धि-लब्धि से यह ज्ञात होता है कि बालक की मानसिक योग्यता में किस गति से विकास हो रहा है।

मानसिक आयु ज्ञात करने के विचार का प्रतिपादन का श्रेय ब्रिने को है। टर्मन ने ब्रिने के विचार को स्वीकार कर परीक्षण किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि मानसिक आयु बालक के मानसिक विकास की बुद्धि के बारे में नहीं बता सकती। इस गति को मालूम करने के लिए टर्मन ने बुद्धि-लब्धि निकालने का सूत्र दिया :

$$\text{बुद्धि-लब्धि} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$$

उदाहरण— यदि बालक की मानसिक आयु 20 वर्ष तथा वास्तविक आयु 16 वर्ष है तो उसकी बुद्धि-लब्धि 125 होगी, जैसे—

$$\text{बुद्धि-लब्धि} = \frac{20}{16} \times 100 = 125$$

मानसिक आयु

मानसिक आयु व्यक्ति की मानसिक परिपक्वता की ओर संकेत करती है। एक व्यक्ति की मानसिक आयु जितनी अधिक होती है तो यह माना जाता है कि उसकी विभिन्न मानसिक योग्यताओं का विकास उतना ही अधिक हुआ है अथवा परिपक्व है। उदाहरणार्थ— यदि 7 वर्ष का बच्चा 12 वर्ष के बच्चे के लिए निर्मित बुद्धि परीक्षण उतनी ही कुशलता से करता है जितना 12 वर्ष का बच्चा करता है तो 7 वर्ष के बच्चे की मानसिक आयु 12 वर्ष होगी और यदि 12 वर्ष का बच्चा 7 वर्ष के बच्चे के लिए निर्धारित परीक्षण को कर पाता है परंतु 12 वर्ष के बच्चों के लिए निर्धारित परीक्षण को नहीं कर पाता तो उसकी आयु 7 वर्ष होगी। इस प्रकार मानसिक आयु व्यक्ति के द्वारा प्राप्त विकास की सीमा की वह अभिव्यक्ति है जो एक आयु-विशेष में प्रत्याशित उसके कार्य-निष्पादन के रूप में किया जाता है।

बुद्धि परीक्षाओं का वर्गीकरण

बुद्धि परीक्षाओं को सामान्य रूप से दो वर्गों में विभाजित किया जाता है :

1. **वैयक्तिक बुद्धि परीक्षा:** यह परीक्षा एक समय में एक व्यक्ति की ली जाती है।
2. **सामूहिक बुद्धि परीक्षा:** यह परीक्षा एक समय में अनेक व्यक्तियों की ली जाती है।

बहुआयामी बुद्धि

केली एवं थर्सटन नामक मनोवैज्ञानिकों ने बताया कि बुद्धि का निर्माण प्राथमिक, मानसिक योग्यताओं के द्वारा होता है। केली के अनुसार, बुद्धि का निर्माण इन योग्यताओं से होता है—वाचिक योग्यता, गामक योग्यता, सांख्यिक योग्यता, यांत्रिक योग्यता, सामाजिक योग्यता, संगीतात्मक योग्यता, स्थानिक संबंधों के साथ उचित ढंग से व्यवहार करने की योग्यता, रुचि और शारीरिक योग्यता। थर्सटन का मत है कि बुद्धि इन प्राथमिक मानसिक योग्यताओं का समूह होता है—प्रत्यक्षीकरण संबंधी योग्यता, तार्किक व वाचिक योग्यता, सांख्यिकी योग्यता, स्थानिक या दृश्य योग्यता, समस्या समाधान की योग्यता, स्मृति संबंधी योग्यता, आगमनात्मक योग्यता और निगमनात्मक योग्यता। वैसे तो अधिकतर मनोवैज्ञानिकों ने केली एवं थर्सटन की बुद्धि के सिद्धांतों की आलोचना की, किंतु अधिकतर मनोवैज्ञानिकों ने यह भी माना कि बुद्धि का बहुआयामी होना निश्चित तौर पर संभव है। बहुआयामी बुद्धि होने के कारण ही कुछ लोग कई प्रकार के कौशलों में निपुण होते हैं।

8. भाषा और विचार

भाषा

भाषा व्यक्ति के भावों को अभिव्यक्त करने का माध्यम है। मनुष्य पशु से श्रेष्ठ इसलिए है, क्योंकि उसके पास एक भाषा है जिसे लोग समझ सकते हैं। पशु-पक्षियों की भी भाषा होती है किंतु उसे कोई समझ नहीं पाता। गूँगे-बहरे लोग भी अपने भावों को समझाने के लिए शरीर के अंगों का सहारा लेते हैं जिसे उसकी शरीर की भाषा कहा जाता है। भाषा एक ऐसा माध्यम है जिससे मनुष्य समाज में अपना एक पृथक् स्थान बनाता है जो उसके व्यक्तित्व के

निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस तरह स्पष्ट है कि भाषा जन्म के साथ उत्पन्न होती है। बच्चा जन्म के बाद रोता है जो उसकी प्रथम भाषा है। सही अर्थों में भाषा भावों के संप्रेषण का एक माध्यम है। भाषा बौद्धिक क्षमता को भी अभिव्यक्त करती है।

प्रायः हम लोग वाणी एवं भाषा दोनों को एक-दूसरे का पर्यायवाची समझते हैं उसका और प्रयोग करते हैं किंतु दोनों में बहुत अंतर होता है। भाषा एवं वाणी को हरलॉक ने निम्न रूप में स्पष्ट किया है—

“भाषा में संप्रेषण के वे सभी साधन आते हैं जिसमें विचारों और भावों को प्रतीकात्मक बना दिया जाता है जिससे कि अपने विचारों और भावों को एक-दूसरे से अर्थपूर्ण ढंग से कहा जा सके।”

“वाणी भाषा का एक स्वरूप है जिसमें अर्थ को दूसरों को व्यक्त करने के लिए कुछ ध्वनियों या शब्द उच्चारित किए जाते हैं।”

इस तरह कहा जा सकता है कि वाणी भाषा का एक विशिष्ट ढंग है। यह मनोक्रियात्मक कौशल है। वाणी केवल मांसपेशियों तथा वाचिक तंत्र में सहायक ही नहीं है अपितु इसका मानसिक पात है—जिसमें कुछ अर्थ जुड़ा रहता है। सभी बच्चों की आवाज वाणी नहीं है, वाणी वह होती है जिसमें पर्याप्त नियंत्रण होता है।

भाषा का महत्त्व

भाषा से ही व्यक्ति को समाज में सम्मान और अपमान मिलता है। इस तरह भाषा में आकर्षण एवं विकर्षण दोनों गुण होते हैं। भाषा के महत्त्व को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है:

1. **शैक्षिक उपलब्धि के महत्त्व:** कक्षा में जिन बालकों की भाषा एवं उच्चारण जितनी अच्छी होती है उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उतनी ही अच्छी होती है। भाषा के माध्यम से ही एक छात्र अपनी कक्षा से संबद्ध समस्याओं को छात्रों एवं अध्यापकों के सामने स्पष्टता से रखकर उसे समझ सकता है लेकिन जिसकी भाषा कम प्रभावशाली है उस पर कोई ध्यान नहीं देता है। प्रायः देखा जाता है कि जिसकी भाषा और लिखावट कमजोर है वे कक्षा में अन्य छात्रों से कम अंक प्राप्त करते हैं। यद्यपि उनकी बौद्धिक क्षमता में कोई कमी नहीं होती है।

2. **सामाजिक मूल्यांकन में सहजता:** बालक समाज में क्या बोलता है? कैसे बोलता है? इसका मूल्यांकन समाज के लोग सामाजिक पृष्ठभूमि में करते हैं। उसकी भाषा ही उसकी योग्यता स्तर तथा यौन उपयुक्तता का मानदण्ड होती है। इससे बालक के भावों एवं विचारों का मूल्यांकन होता है।

3. **इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक:** भाषा व्यक्ति को अपनी आवश्यकता, इच्छा, पीड़ा अथवा मनोभाव दूसरे के समक्ष व्यक्त करने की क्षमता प्रदान

करती है जिससे दूसरा व्यक्ति सरलता से उसकी आवश्यकता को समझ कर तत्संबंधी समाधान प्रदान करता है। उदाहरणार्थ—एक बालक यदि केवल रोता है अपने मनोभावों तथा आवश्यकताओं (भूख) को दूसरे के सामने व्यक्त नहीं कर पाता है तो माता-पिता को उसे समझने में कठिनाई होती है। लेकिन वही जब अपनी जुबान से बोल कर दूध या भोजन की मांग करता है तो तुरन्त इसकी पूर्ति हो जाती है और उसे संतुष्टि मिलती है।

4. **दूसरे के विचारों को प्रभावित करने में सहायक:** जिन बच्चों की भाषा प्रिय, मधुर एवं ओजस्वी होती है वे अपने समूह, परिवार अथवा समाज के व्यक्तियों को प्रभावित करते हैं। लोग उन्हीं को अधिक महत्त्व देते हैं जिनका व्यवहार प्रभावपूर्ण होता है।

5. **ध्यान आकर्षित करने में उपयोगी:** सभी बालक चाहते हैं कि लोग उनकी ओर ध्यान दें इसलिए वे अभिभावकों से प्रश्न पूछकर, कोई समस्या प्रस्तुत करके तथा विभिन्न तरीकों का प्रयोग कर उनका ध्यान अपनी ओर खींचते हैं। जो बच्चे चुपचाप रहते हैं या बोलते नहीं उनकी कभी-कभी उपेक्षा हो जाती है।

6. **आत्म-मूल्यांकन में महत्त्व:** बालक जब समाज में बोलता है तो उसके सुनने वालों की उसके प्रति क्या प्रतिक्रिया होती है, दूसरे लोग उसके विषय में क्या समझते हैं उनकी भाषा को सुनकर बालक स्वयं का मूल्यांकन करता है कि लोग उससे प्रभावित हैं या नहीं। समाज का दृष्टिकोण उसके प्रति किस प्रकार का है।

7. **सामाजिक संबंध के लिए महत्त्व:** वाणी से अपने भावों को बालक समाज में अभिव्यक्त करता है जिससे उसके विचारों, भावों को लोग समझते हैं। इससे समाज के बीच आपसी ताल-मेल विकसित होता है। जो बच्चे खुलकर अपने विचारों एवं भावों को दूसरों के सामने रखते हैं उन्हें समाज में सबसे अधिक स्वीकृति मिलती है। दूसरे बालक उसी बालक के साथ उठना-बैठना, खेलना तथा मित्रता करना पसंद करते हैं जिनकी अभिव्यक्ति होती है। जो बालक अंतर्मुखी होते हैं उनके मित्र भी नहीं होते हैं। बालक अपनी भाषा के द्वारा ही समाज में अच्छा संबंध बनाता है। इसी के द्वारा वैयक्तिक एवं सामाजिक समायोजन होता है।

भाषा के विकास के मुख्य सिद्धांत

मनुष्य की भाषा किस प्रकार विकसित होती है? उसकी प्रक्रिया क्या है? शब्दों का अर्थों में किस प्रकार समावेश होता है इसको जानने के लिए भाषा विकास के सिद्धांतों को समझना आवश्यक है। मनुष्य बोलने की योग्यता किस प्रकार अर्जित करता है। इस विषय पर विद्वानों ने अपने अध्ययन के आधार पर निम्न सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है—

1. **अनुबंधन का सिद्धांत** : भाषा विकास में अनुबंधन या साहचर्य का बहुत योगदान है। शैशवावस्था में जब बच्चे शब्द सीखते हैं तो सीखना अमूर्त नहीं होता है। वरन किसी मूर्त वस्तु से जोड़कर उन्हें शब्दों की जानकारी दी जाती है। उदाहरण पेंसिल कहने के साथ उन्हें पेंसिल दिखाया जाता है, पानी या दूध कहने पर उन्हें पानी या दूध दिखाया जाता है, चाचा या ताऊ के संकेत के सहारे प्रत्यक्ष रूप से बताया जाता है। इससे बच्चे उस विशिष्ट वस्तु या व्यक्ति से साहचर्य स्थापित कर लेते हैं और अभ्यास हो जाने पर संबंधित वस्तु या व्यक्ति की उपस्थिति पर संबंधित शब्द से संबोधित करते हैं। उद्दीपक और प्रतिक्रिया के बीच संबंध स्थापित होने को ही अनुबंधन कहा जाता है। इसलिए छोटी कक्षाओं में लिखवाने के लिए शिक्षा उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। स्किनर का कहना है कि अनुबंधन द्वारा भाषा विकास की प्रक्रिया को सरल बनाया जा सकता है।

2. **चोमस्की का भाषा अर्जित करने का सिद्धांत** : चोमस्की का कहना है कि बच्चे शब्दों की निश्चित संख्या से कुछ निश्चित नियमों का अनुकरण करते हुए वाक्यों का निर्माण करना सीख जाते हैं। इन शब्दों से नए-नए वाक्यों एवं शब्दों का निर्माण होता है। इन वाक्यों का निर्माण बच्चे जिन नियमों के अंतर्गत करते हैं, उन्हें चोमस्की ने जेनेरेटिव की संज्ञा प्रदान की है।

3. **परिपक्वता का सिद्धांत** : परिपक्वता से तात्पर्य है भाषा अवयवों एवं स्वरों पर नियंत्रण होना। बोलने में जिह्वा, गला, तालू, होठ, दांत तथा स्वर यंत्र आदि जिम्मेदार होते हैं। इनमें किसी भी प्रकार की कमजोरी या कमी वाणी को प्रभावित करती है। इन सभी अंगों में जब परिपक्वता होती है तो भाषा पर नियंत्रण होता है और अभिव्यक्ति अच्छी होती है। विद्वानों के मतानुसार भाषा का विकास स्वरयंत्र की परिपक्वता पर निर्भर

करती है, जिनकी स्वरयंत्र में परिपक्वता नहीं होती है, वे शब्दों का उच्चारण नहीं कर पाते हैं। गूंगे व्यक्तियों में स्वर यंत्रों का विकास नहीं होता इसलिए उनमें बोलने की क्षमता नहीं होती है।

4. **अनुकरण का सिद्धांत** : शर्ली, कर्टी, चैपिनीज तथा वैलेन्टाइन आदि मनोवैज्ञानिकों ने अनुकरण के द्वारा भाषा सीखने का अध्ययन किया है। इनका विचार है कि बालक अपने परिवारजनों तथा साथियों की भाषा का अनुसरण करके सीखता है जैसी भाषा जिस समाज या परिवार या समूह में बोली जाती है बच्चे उसी भाषा को सीखते हैं। यदि भाषा में किसी प्रकार का दोष है तो अनुकरण से बच्चे वह भी सीख लेते हैं। अतः इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे दोषपूर्ण भाषा न सीखने पाएं। बच्चे शिष्टाचार के साथ अश्लील एवं अशिष्ट शब्दों का भी अनुकरण कर लेते हैं। इसे सामाजिक अधिगम भी कहा जाता है। बालक समाज से ही विशाल शब्दों का भंडार सीखता है। साथ ही बोलने के तौर-तरीके भी वह समाज से ही सीखता है।

भाषा के विकास की मुख्य अवस्थाएं

भाषा के विकास की अवस्थाओं को मुख्यतः दो वर्गों में बांटा गया है—

- (i) भाषा का प्रारंभिक रूप—रोना, बलबलाना, हाव-भाव या संकेत आदि।
- (ii) वास्तविक भाषा की अभिव्यक्ति—आकलन या बोध शक्ति, शब्द भंडार, वाक्य निर्माण, शुद्ध उच्चारण आदि।

भाषा के विकास को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक

सभी बालकों में भाषायी विकास एक समान नहीं होता है। किसी में भाषायी विकास तीव्रता से तो किसी में मंदता से होता है। भाषायी विकास पर कुछ तत्त्वों का प्रभाव पड़ता है, इनमें प्रमुख तत्त्व निम्नलिखित हैं—

- (i) **व्यक्तित्व** : कुछ अध्ययनों में यह पाया गया है कि जो बच्चे उत्साही होते हैं उनमें भाषायी विकास शांत स्वभाव के बच्चों से अधिक होता है। फुर्तीले, चुस्त एवं बहिर्मुखी स्वभाव वाले बच्चों का भाषा विकास तीव्र होता है।

(ii) **परिपक्वता** : आवश्यक परिपक्वता के अभाव में भी भाषा का विकास प्रभावित होता है। हरलॉक का कहना है कि भाषा का प्रशिक्षण देते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बच्चों में आवश्यक परिपक्वता आ चुकी है या नहीं। भाषा विकास में फेफड़े, स्वरयंत्रों, जीभ, दांत, तालू, होठ तथा वाणी केंद्र (मस्तिष्क में स्थित होता है) का परिपक्व होना आवश्यक है। ये अंग जितने अधिक परिपक्व होते हैं भाषा विकास उतना ही अधिक होता है।

(iii) **सामाजिक-आर्थिक स्तर** : प्रायः ऐसा देखा जाता है कि जिन बालकों को सामाजिक-आर्थिक स्तर निम्न होता है वे देर में बोलना सीखते हैं। जरसील्ड एवं गैसिल आदि जैसे मनोवैज्ञानिकों के अध्ययन से इस बात की पुष्टि हुई कि उच्च वर्ग के शिशु जल्दी बोलना सीखते हैं, अधिक बोलते हैं तथा उनका उच्चारण भी शुद्ध होता है। डेविस, आल्सटाईन, स्कील्स आदि जैसे मनोवैज्ञानिकों ने अनाथ बच्चों के अध्ययन से पाया कि इन बच्चों में भाषायी विकास कम होता है। इनका शब्द भंडार भी कम होता है। प्रायः यह भी देखा जाता है कि ग्रामीण क्षेत्र में पढ़ने वाले बच्चों की शाब्दिक क्षमता शहरी या अन्य पब्लिक स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों से कम होती है।

(iv) **स्वास्थ्य** : जिन बच्चों का स्वास्थ्य जितना अच्छा होता है उनमें भाषा विकास की गति उतनी तीव्र होती है क्योंकि सामाजिक समूहों से उन्हें अच्छी प्रेरणा मिलती है, वे बच्चे अपने समूह के साथ खेलते हैं, अंतःक्रिया करते हैं, लेकिन बीमार बच्चे समूह में खेल नहीं पाते। शारीरिक अवयवों का भी विकास बाधित होता है। स्मिथ ने बच्चों की भाषा पर बीमारी के प्रभावों का अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला कि बीमार बच्चों में भाषायी विकास की गति धीमी होती है। इसी प्रकार का अध्ययन लॉवेल और मारकेल ने भी किया और पाया कि जो बच्चे लंबी अवधि तक बीमार रहते हैं उनमें भाषायी विकास कमजोर होता है।

(v) **प्रशिक्षण की विधियाँ** : अधिनायकवादी प्रशिक्षण जिसमें बच्चों की भावनाओं का ख्याल नहीं रखा जाता है एवं किसी चीज को डांट कर सिखाया जाता है तो ऐसे प्रशिक्षण में भाषा का विकास नहीं होता। जिस

परिवार या विद्यालय में लोकतांत्रिक विधियों का प्रयोग होता है, बालक को स्वतंत्रता होती है, उसमें भाषा का विकास तीव्रता से होता है। भाषा सिखाने के लिए मूर्त से अमूर्त, सरल से कठिन, ज्ञात से अज्ञात की ओर चलने के सिद्धांतों का पालन करना चाहिए। उदाहरणार्थ—मातृभाषा से अंग्रेजी सिखाई जाए तो आसान होता है। एक साथ एक भाषा का प्रशिक्षण हो लेकिन यह देखा जा रहा है कि भारतवर्ष के आधुनिक पब्लिक स्कूलों में शिशुओं को एक साथ दो से अधिक भाषाएं सिखाई जाती हैं जो उचित नहीं हैं। मातृभाषा का पूर्ण ज्ञान हो जाए तो उस भाषा की सहायता से दूसरी भाषा सिखाना उचित होता है।

(vi) **द्वि-भाषावाद** : यदि कोई द्विभाषा-भाषी परिवार है, उदाहरणार्थ—पिता हिन्दी बोलने वाला और माता शुद्ध बांग्ला बोलने वाली हो तो ऐसे में बच्चों का भाषा विकास प्रभावित होता है क्योंकि बच्चे भ्रमित हो जाते हैं कि वे कौन-सी भाषा सीखें। वर्तमान समय में यह देखा जा रहा है कि बच्चों की भाषा क्षमता क्षीण होती जा रही है तथा उसका बड़ा ही स्पष्ट कारण है कि हिन्दी भाषा-भाषी परिवार में उत्पन्न हुए बच्चों का 3 वर्ष की आयु में अंग्रेजी स्कूलों में प्रवेश करा दिया जाता है। इन स्कूलों में अंग्रेजी के अतिरिक्त दूसरी भाषा बोली ही नहीं जाती है और जैसे ही बालक स्कूल से घर में कदम रखता है वहां हिन्दी और भोजपुरी के अतिरिक्त अंग्रेजी की पृष्ठभूमि ही नहीं है। ऐसी स्थिति में बालक कौन-सी भाषा सीखे यह उसके सामने दुविधा होती है। अंग्रेजी भाषा का विकास हिन्दी पृष्ठभूमि में नहीं हो सकता। अतः भाषा विकास अवरुद्ध हो जाता है या इसमें अपेक्षित सफलता नहीं मिलती।

(vii) **बहुजन्मता** : किए गए एक अध्ययन में यह पाया गया है कि यदि एक साथ अधिक संतानें उत्पन्न होती हैं तो उनमें भाषायी विकास विलंब से होता है। इसका कारण है कि बच्चे एक-दूसरे का अनुकरण करते हैं और दोनों ही अपरिपक्व होते हैं। उनमें उपयुक्त प्रतिमान नहीं मिल पाता। उदाहरणार्थ—यदि एक बच्चा गलत उच्चारण करता है तो उसकी नकल करके दूसरा भी वैसा ही उच्चारण करेगा।

(viii) **लिंगीय भिन्नता** : वाणी विकास में लिंग का प्रभाव भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। इरविन और चेन ने लिंगीय भेद का अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला कि प्रथम वर्ष में बालक एवं बालिकाओं की भाषा में अंतर नहीं होता लेकिन दूसरे वर्ष से बालिकाओं की क्षमता बालकों से अधिक हो गई। बालिकाओं का भाषा प्रवाह बालकों से अच्छा रहा। बालिकाएं जल्दी बोलना भी सीखती हैं, जहां बालक छोटे-छोटे वाक्य बोलते हैं वहीं लड़कियां बड़े वाक्यों को बोलने में सक्षम हो जाती हैं। बालिकाएं बालकों की अपेक्षा शुद्ध उच्चारण करती हैं।

(ix) **बुद्धि** : हरलॉक के अनुसार, जिन बच्चों की बुद्धि-लब्धि (I.Q.) उच्च होती है उनमें भाषा विकास अपेक्षाकृत कम बुद्धि वालों से अच्छा होता है। इरविन और स्पाईकर के मतानुसार बुद्धि-लब्धि और भाषा संबंधी योग्यता में घनिष्ठ संबंध है। टरमैन, फिशर और यम्बा का मानना है कि तीव्र बुद्धि बालकों का उच्चारण और शब्द भंडार अधिक होता है। प्रायः देखा जाता है कि प्रतिभाशाली बालक अपनी अवस्था के बालकों से पहले बोलना सीख लेते हैं, उनके शब्द भंडार की क्षमता भी सामान्य बालकों से अधिक होती है तथा वे बहुत स्पष्ट और शुद्ध उच्चारण भी करते हैं।

(x) **परिवार का आकार** : अकेला बालक या छोटे परिवार में बालक की भाषा शक्ति का विकास बड़े आकार के परिवार से अच्छा होता है क्योंकि छोटे परिवार में माता-पिता बच्चे के प्रशिक्षण उनसे वार्तालाप पर अधिक ध्यान दे पाते हैं जबकि बड़े परिवार में समय कम मिलता है।

(xi) **संवेगात्मक तनाव** : जिन बच्चों के संवेगों का कठोरता से दमन कर दिया जाता है ऐसे बच्चों में भाषा विकास देर से होता है। उदाहरणार्थ—यदि एक वर्ष के शिशु को सौतेली मां कटु या कठोर स्वभाव की मिल जाए और बात-बात पर उसे झिड़कती, डांटती, पीटती तथा उपेक्षित करती रहे तो बालक का विकास प्रभावित हो जाता है तथा वह देर में एवं अस्पष्ट बोलता है।

भाषा दोष एवं उसके प्रकार

यदि बालक अपने स्वर यंत्रों पर नियंत्रण नहीं कर पाता है तो उसमें भाषा दोष उत्पन्न हो जाता है। इस भाषा दोष का

प्रभाव बालक के जीवन के अन्य क्षेत्रों पर भी पड़ता है तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी प्रभावित होती है। इन बालकों को पिछड़ा बालक कहा जाता है। भाषा दोष के मुख्य प्रकार निम्नवत् हैं—

1. अस्पष्ट उच्चारण,
2. ध्वनि परिवर्तन,
3. तीव्र अस्पष्ट,
4. हकलाना, और
5. तुतलाना।

चिंतन/विचार

चिंतन विचार करने की वह मानसिक प्रक्रिया है, जो किसी समस्या के कारण आरंभ होती है और उसके अंत तक चलती रहती है। कुछ विद्वानों द्वारा चिंतन की परिभाषा निम्न प्रकार से दी गई है—

रॉस के अनुसार, “चिंतन, मानसिक क्रिया का ज्ञानात्मक पहलू है या मन की बातों से संबंधित मानसिक क्रिया है।”

रायबर्न के अनुसार, “चिंतन, इच्छा-संबंधी प्रक्रिया है, जो किसी असंतोष के कारण आरंभ होती है और प्रयास एवं त्रुटि के आधार पर चलती हुई उस अंतिम स्थिति पर पहुंच जाती है, जो इच्छा को संतुष्ट करती है।”

बेलेण्टाइन के अनुसार, “चिंतन शब्द का प्रयोग उस क्रिया के लिए किया जाता है, जिसमें शृंखलाबद्ध विचार किसी लक्ष्य या उद्देश्य की ओर अविराम गति से प्रवाहित होते हैं।”

उपर्युक्त दी गई परिभाषाओं से स्पष्ट है कि चिंतन मानसिक क्रिया का ज्ञानात्मक पथ है। चिंतन की प्रक्रिया किसी विशेष उद्देश्य की ओर परिलक्षित होती है। इसमें इच्छा तथा असंतोष अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इच्छा तथा असंतोष मनुष्य को चिंतन के लिए बाध्य करते हैं।

चिंतन के प्रकार

चिंतन के मुख्यतः चार प्रकार हैं—

1. **कल्पनात्मक चिंतन** : इस चिंतन का संबंध पूर्व-अनुभवों पर आधारित भविष्य से होता है। जब माता-पिता बाजार जाते हैं तब बालक कल्पना करता है कि वे वहां से लौटने पर उसके लिए टॉफी लाएंगे। इस चिंतन में भाषा और नाम का प्रयोग नहीं किया जाता है।
2. **तार्किक चिंतन** : अमेरिकी मनोवैज्ञानिक जॉन डीवी ने तार्किक चिंतन को विचारात्मक चिंतन की संज्ञा दी है। यह सबसे उच्च प्रकार का चिंतन है। इसका संबंध किसी समस्या के समाधान से होता है।

3. **प्रत्ययात्मक चिंतन :** इस चिंतन का संबंध पूर्व-निर्मित प्रत्ययों से होता है, जिनकी सहायता से भविष्य के किसी निश्चय पर पहुंचा जाता है। कुत्ते को देखकर बालक अपने मन में प्रत्यय का निर्माण कर लेता है। अतः जब वह भविष्य में कुत्ते को फिर देखता है तब वह उसकी ओर संकेत करते हुए कहता है—'कुत्ता'। इस चिंतन में भाषा और नाम का प्रयोग किया जाता है।
4. **प्रत्यक्षात्मक चिंतन :** यह निम्न स्तरीय चिंतन है। अतः यह विशेष रूप से पशुओं और बालकों में पाया जाता है। इस चिंतन का संबंध पूर्व अनुभवों पर आधारित वर्तमान की वस्तुओं से होता है। माता-पिता के बाजार से लौटने पर यदि बालक को उनसे काफी दिनों तक टॉफी मिलती रहती है तो जब भी वे बाजार से लौटते हैं, तभी टॉफी का विचार उसके मस्तिष्क में आ जाता है और वह दौड़ता हुआ उनके पास जाता है।

चिंतन तथा कल्पना में अन्तर

चिंतन	कल्पना
1. इसकी सहायता से बालक समस्या के विभिन्न पहलुओं को समझने की कोशिश करता है, क्योंकि इन पहलुओं को समझे बिना समस्या का समाधान संभव नहीं हो सकता।	1. इसमें समस्या के समाधान की परिस्थिति को नए-नए रूपों में देखा जाता है।
2. इसमें तर्क की प्रधानता होती है। समस्या समाधान में तर्क की सहायता से सूक्ष्म पहलुओं को जाना जाता है।	2. इसमें तर्क का अभाव होता है।
3. बालक में चिंतन बहुधा समस्या की उपस्थिति पर आरंभ होता है। अर्थात् जब बालक के सामने कोई समस्या आती है तभी उसमें चिंतन की प्रक्रिया होती है, व्यर्थ में बालक चिंता नहीं करता है।	3. कल्पना के लिए परिस्थिति या समस्या की विशेष आवश्यकता नहीं होती है।
4. चिंतन में समस्या समाधान में प्रयत्न और भूल की क्रिया रहती है।	4. कल्पना में प्रयत्न और भूल का अभाव होता है।
5. यह वास्तविकता से संबंधित होता है।	5. कल्पना का संबंध वास्तविकता से भी हो सकता है और नहीं भी।

चिंतन तथा भाषा

चिंतन प्रक्रिया प्रतीक और चिन्हों के आधार पर चलती है। प्रतीक और चिन्हों का आधार भाषा होती है। चिंतन के समय बालक के अंदर आंतरिक भाषण होता है। कई बार चिंतन करते समय बालक बोलने लगता है। कुछ अध्ययनों में यह देखा गया है कि जिस बालक में भाषा की योग्यता जितनी अधिक होती है उसमें चिंतन की योग्यता भी उसी रूप में उतनी अधिक होती है क्योंकि भाषा-वृद्धि के साथ-साथ बालकों में ज्ञान-वृद्धि होती है और ज्ञान-वृद्धि से चिंतन शक्ति का भी विकास होता है। भाषा के द्वारा बालक चिंतन को व्यक्त भी कर सकता है। बालक भाषा के द्वारा अपने अथवा दूसरों के चिंतन को रेकार्ड कर सकता है। इस प्रकार वह अपने चिंतन का दूसरों को लाभ दे सकता है तथा दूसरों के चिंतन का स्वयं लाभ उठा सकता है। अतः कहा जा सकता है कि चिंतन के लिए भाषा आवश्यक ही नहीं अपितु उसे व्यक्त करने का साधन भी है। भाषा के अभाव में चिंतन को व्यक्त करना कठिन है। जहां भाषा से चिंतन का विकास होता है वहां चिंतन भाषा को भी विकसित करता है। अतः कहा जा सकता है कि चिंतन और भाषा दोनों में घनिष्ठ संबंध है।

चिंतन का विकास

चिंतन का विकास भाषा के विकास के कुछ समय बाद प्रारंभ हो जाता है। लगभग एक-दो वर्ष की अवस्था में बालक में चिंतन का विकास प्रारंभ हो जाता है। बालक में सर्वप्रथम प्रत्यक्षात्मक चिंतन का विकास प्रारंभ होता है। बालक के चारों ओर जो मूर्त वस्तुएं और उत्तेजनाएं होती हैं, सर्वप्रथम वह उनके संबंध में चिंतन प्रारंभ करता है। पियाजे का विचार है कि लगभग सात वर्ष की अवस्था तक बालक की प्रवृत्ति आत्मकेंद्रित प्रकार की होती है। अतः बालक अपने स्वयं के संबंध में ही चिंतन अधिक करता है। उसमें इस अवस्था के चिंतन में तार्किकता का अभाव होता है। लगभग पांच-छः वर्ष की अवस्था से बालक में कल्पनात्मक तथा प्रत्ययात्मक चिंतन प्रारंभ हो जाती है। वुडवर्थ ने इन दोनों प्रकार के चिंतनों को विचारात्मक चिंतन कहा है। बालक में इस अवस्था में प्रतीकों के माध्यम से भी चिंतन का अभाव होता है। लगभग सात वर्ष की अवस्था से लगभग पंद्रह वर्ष की

अवस्था तक चिंतन का तीव्र गति से विकास होता है। आयु बढ़ने के साथ-साथ चिंतन में तर्क की प्रधानता भी बढ़ती जाती है।

3 से 7 वर्ष की अवस्था के बालकों के चिंतन में पियाजे ने निम्नलिखित विशेषताएं बताई हैं—

- (i) इस समय उनके चिंतन का स्तर निम्न होता है। वे अधिकतर जीवन से संबंधित बातों पर चिंतन करते हैं।
- (ii) उनके चिंतन में तार्किक संगति का अभाव पाया जाता है। इस आयु के बालकों में कार्य-कारण संबंध नहीं दिखाई देता है।
- (iii) एक ही घटना के आधार पर सामान्यीकरण करना। अन्य शब्दों में, इस आयु के बालक एक घटना के आधार पर ही निष्कर्ष निकालते हैं। वह पूर्ण घटनाओं-अनुभवों का लाभ नहीं उठा पाते हैं।
- (iv) इस आयु वर्ग के बालकों के चिंतन की प्रवृत्ति आत्म-केंद्रित प्रकार की होती है। अन्य शब्दों में, उनके चिंतन का विषय स्वयं के संबंध में होता है।
- (v) इस आयु वर्ग का बालक अपने वातावरण के चारों ओर स्थित वस्तुओं को चाहे वह सजीव हो या निर्जीव सभी को चेतनामय या सजीव समझता है। अन्य शब्दों

में, उसके चिंतन में जीववाद पाया जाता है।

क्रो और क्रो के अनुसार, चिंतन की योग्यता सफल जीवन के लिए आवश्यक है। चिंतन की योग्यता के विकास में निम्नलिखित उपाय सहायक हैं—

- (i) बालकों को चिंतन के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित करना चाहिए। बालकों के भाषा ज्ञान को उच्च करने के उपाय करने चाहिए जिससे वह समय-समय पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति कर सके।
- (ii) बालकों की रुचियों के विकास पर ध्यान देना चाहिए। रुचियों के अभाव में चिंतन योग्यता कठिनाई से विकसित हो पाती है।
- (iii) शिक्षक और माता-पिता को बालकों को नवीन बातों की समय-समय पर अर्थात् उनकी आयु के अनुसार जानकारी देनी चाहिए जिससे उनमें चिंतन का विकास सुचारु रूप से चल सके।
- (iv) बालकों को उनकी आयु के अनुसार समस्या का समाधान करना भी सिखलाना चाहिए क्योंकि समस्या समाधान से भी चिंतन विकसित होता है।
- (v) तर्क एवं वाद-विवाद की भी चिंतन योग्यता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है, इनको भी सिखाने के अवसर देने चाहिए।

9. समाज निर्माण में लिंग की भूमिका

व्यक्ति एवं व्यक्ति, समुदाय एवं समुदाय, जाति एवं जाति के बीच पाई जाने वाली भिन्नता एक वैश्विक घटना है। ऐसे में एक प्रश्न उठता है कि आखिर ये भेद क्यों हैं एवं इसके लक्षण क्या हैं? इस प्रकार के भेदों का मापन शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक आधार पर किस प्रकार किया जाए?

लिंग और उसकी भूमिका

वर्तमान परिदृश्य में समानता की मांग सामयिक मुद्दा है। इस समानता का तात्पर्य नकारात्मक न होकर सकारात्मक है। यहां समानता का तात्पर्य समान शैक्षिक योग्यता, समान क्षमता, समान अधिकार, समान कुशलता तथा पढ़ाई एवं कार्य के समान अवसर से है। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि हम स्त्री-पुरुष में वर्ग के आधार पर लिंग भेद को मान्यता

नहीं देते हैं। लिंग भेद का सिद्धांत मूलतः भेद पर ही आधारित है, अर्थात् स्त्री तथा पुरुष में कुछ भेद पाए जाते हैं भले ही हम कहें कि इनके बीच सामाजिक तथा शैक्षिक आधार पर कोई भेद नहीं है। इस भेद से एक महत्वपूर्ण प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या महिलाएं शारीरिक लक्षण, कौशल, जीवन मूल्य, दक्षता के आधार पर पुरुषों से कुछ भिन्न हैं अथवा नहीं? यदि इस आधार पर इनमें कोई भिन्नता नहीं पाई जाती है तो इस बात की जांच-पड़ताल आवश्यक है कि क्यों इनके साथ कुछ क्षेत्रों में भेद-भाव किया जाता है?

लैंगिक भेद-भाव

मनोविज्ञान के अध्ययन के क्षेत्र में लिंग भेद पर आधारित विषय अन्य विषयों की तुलना में काफी रुचिकर विषय है। शिक्षा,

वैवाहिक संबंधों की सफलता, रहन-सहन तथा कार्यक्षेत्र संबंधी अनेक सामाजिक समस्याओं का संबंध इनकी सफलता से संबद्ध है। अनेक शिक्षाविदों तथा शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने महिला तथा पुरुषों की उपलब्धि की तुलना को अपने अनुसंधान का विषय-वस्तु बनाया है। इन्होंने अपने नमूनों (samples) को दो भागों—महिला और पुरुष में बांटा है। इन शोधों से प्राप्त तथ्यों के अनुसार सामाजिक तथा शारीरिक आधार पर महिला और पुरुष में भिन्नता है। इस अनुसंधान का मुख्य लक्ष्य था महिला और पुरुष के भेद को लिंग व्यवहार के आधार पर समुचित रूप से समझना। इस अनुसंधान का आधार सामान्यतः मनोवैज्ञानिक ही था। ये तथ्य इस अवधारणा की पुष्टि करते हैं कि शारीरिक बनावट के अनुसार स्त्री-पुरुष के संवेगों में भी अंतर होता है। हालांकि इस भेद का आधार सामाजिक न होकर लक्षण विशेष पर आधारित अनुसंधान है जिसमें बाह्य कारकों तथा अन्य लक्षणों के अंतःसंबंधों के परस्पर संबंधों को भी जानने एवं समझने का प्रयत्न किया गया है।

इन वर्ग भेदों में कौन-से मुख्य हैं और कौन-से गौण यह कहना बहुत मुश्किल है। जहां तक सामान्य बुद्धि की बात है वहां महिला और पुरुष वर्गों में समानता देखने को मिलती है। इनमें भेद कुछ विशेष योग्यताओं या लक्षणों को लेकर है। सामान्यतः पुरुषों में महिलाओं की तुलना में तर्क करने, वस्तुओं में समानता संबंधी खोज करने तथा सामान्य ज्ञान के क्षेत्र में कुछ श्रेष्ठता के संकेत पाए जाते हैं। पुरुष जहां स्थानिक संबंध की दृष्टि से भेद की सूक्ष्मता को पहचानने में अधिक सक्षम है वहां शाब्दिक अभिज्ञमता तथा स्मरण शक्ति के क्षेत्र में महिलाएं अधिक सक्षम हैं। अनुसंधानों से यह बात भी सामने आयी है कि छात्राओं का भाषायी विकास छात्रों की तुलना में अल्पायु से ही अधिक होता है। अनुसंधानों से इस बात की भी पुष्टि हुई है कि विद्यालयपूर्व आयु वर्ग की बालिकाओं की शब्दावली इस आयुवर्ग के बालकों की तुलना में अधिक सक्षम होती है। इतना ही नहीं छात्राओं की पठन गति भी छात्रों से अधिक होती है। सामान्यतः दोनों वर्गों की बुद्धि अथवा शैक्षिक क्षमता में इतना भेद नहीं होता है कि वे किसी प्रदत्त कार्य को न्यूनाधिक क्षमता से सम्पन्न न करें। इन तथ्यों के आधार पर यही निष्कर्ष निकलता है कि शैक्षिक कार्यक्रम तथा पाठ्यक्रम के समायोजन के समय छात्र-छात्राओं में कोई भेदभाव नहीं बरतना चाहिए।

छात्र-छात्राओं की पाठ्यचर्या में अंतर जन्मजात बौद्धिक स्तर के कारण नहीं होता है। उनमें अंतर का मुख्य कारण भावी जीवन की आवश्यकताओं के अनुसार निर्धारित होता है।

शैक्षिक अभ्यास

वर्तमान सामाजिक ढांचे में भी लड़की एवं लड़के में भिन्नता देखने को मिलती है। समाज लड़की को लड़के से कमतर आंकता है तथा उसे निश्चित रुढ़िगत कामों में लगा देता है। शिक्षण के दौरान शिक्षक भी लड़कियों पर अवांछित टिप्पणी करते हैं जो शिक्षण की नीति के प्रतिकूल है। ऐसे शिक्षकों में प्रायः यह धारणा होती है कि लड़कियों के लिए ऐसी शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिए जो उन्हें सद्गृहिणी तथा आदर्श माता बनने के लिए प्रेरक का कार्य करे। इस प्रकार का विचार न केवल व्यक्तित्व की भिन्नता संबंधी गुणों की अवहेलना करता है अपितु इस तथ्य की भी उपेक्षा करता है कि बालक-बालिकाओं को कुछ समान कौशल सिखाने की भी आवश्यकता है। जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है कि बालक तथा बालिकाएं कुछ क्षेत्रों या योग्यताओं में अवश्य भिन्न हैं और इन क्षेत्रों में ये एक-दूसरे से आगे भी निकल जाते हैं। इसी आधार पर जन्मजात योग्यताओं के अधिकतम विकास के लिए विशेष शिक्षण रीति-नीति अपनाने की आवश्यकता है तथा अभाव के क्षेत्र को भी प्रबल करने के लिए विशेष पद्धतियों का आश्रय लेने की आवश्यकता है। एक अध्यापक को अध्यापक के नाते लिंग भेद आधारित भावना के विरुद्ध साहसिक कदम उठाना चाहिए। इसके साथ-साथ लड़के-लड़कियों के बीच पाए जाने वाले वास्तविक भेदों को भी पहचानना तथा उन्हें स्वीकार करना चाहिए। साथ ही साथ अध्ययन के समय उसी प्रकार की रीति-नीति का उपयोग करना चाहिए।

आज भी लड़कियों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण परंपरागत ही है। इसका महत्वपूर्ण प्रमाण उनके प्रति अपनाए जाने वाले व्यवहार और उनकी शिक्षा-दीक्षा के संबंध में देखने को मिलता है। यद्यपि ये बातें सभी जगह लागू नहीं होती किंतु यह प्रायः देखा जाता है। इस संबंध में भी वर्ग भेद पर्याप्त रूप से देखने को मिलता है। समाज के उच्च वर्ग की अपेक्षा निम्न वर्ग से आने वाली लड़कियों के संदर्भ में इस स्तर पर और भी भेद पाया जाता है। समाज के निचले पायदान तथा अन्य अभावग्रस्त

व सुविधाविहीन सामाजिक स्तर से आने वाली लड़कियों को कुछ अन्य टिप्पणियों से भी दो-चार होना पड़ता है, जैसे- यह कि ये अभावग्रस्त परिवारों से हैं तथा यह कि ये आर्थिक दृष्टि से पिछड़े तथा दलित हैं। ऐसे में ये बातें उन्हें शैक्षिक तथा सामाजिक दृष्टिकोण से विकसित बनने में बाधा उत्पन्न करता है। इतना ही नहीं इस समुदाय के लोग यह भी सोचते हैं कि लड़कियों की पढ़ाई पर किए जाने वाले खर्च को यदि उनके

विवाह पर खर्च किया जाए तो वह अधिक लाभप्रद और उपयोगी होगा। हालांकि वर्तमान में कई राज्य सरकारों ने लड़कियों की शिक्षा के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाओं का शुभारंभ किया है फिर भी लड़कियों की एक बड़ी आबादी अभी भी विद्यालय तक नहीं पहुंच पाई है। ऐसे में लड़कियों की शिक्षा से संबंधित विभिन्न पहलुओं, यथा-सामाजिक, शैक्षिक एवं आर्थिक पर चिंतन करना शिक्षक का महत्वपूर्ण दायित्व बन जाता है।

10. सीखने के लिए एवं सीखने का मूल्यांकन

चूंकि शिक्षा का संबंध बच्चे के सर्वांगीण विकास (शारीरिक, सामाजिक, बौद्धिक एवं भावनात्मक आदि) से है। इसलिए बच्चे के विकास के सभी पहलुओं को आंके जाने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में हम बच्चे को पूरे रूप में नहीं आंकते, बल्कि विशिष्ट क्षेत्रों में केवल उसकी शैक्षिक उपलब्धियों का मूल्यांकन करते हैं। हम शिक्षार्थी का मूल्यांकन बुनियादी रूप से उसके परीक्षा परिणामों के आधार पर करते हैं।

विद्यालय आधारित मूल्यांकन

विद्यालय आधारित मूल्यांकन विद्यालय शिक्षा बोर्डों द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं के विपरीत, स्कूल स्तर पर किया जाता है। यह मूल्यांकन विद्यालय द्वारा विकसित अनुसूची और बोर्ड द्वारा जारी किए गए मार्ग-निर्देशों के अनुसार अध्यापकों द्वारा किया जाता है। यद्यपि यह मूल्यांकन हमेशा विद्यालय के स्तर पर किया जाता रहा है, किंतु इस प्रणाली में कुछ त्रुटियां उत्पन्न हो गई हैं। इन त्रुटियों के मुख्य कारण निम्न हो सकते हैं:

- (i) मूल्यांकन के स्थान एवं शिक्षा की प्रक्रिया में इसके महत्त्व के बारे में अध्यापकों की गलत धारणा।
- (ii) बाह्य परीक्षा की प्रथा का अनुकरण जो सामान्य रूप से सत्र के अंत में ली जाती है।

वर्तमान दौर में मूल्यांकन की विद्यालय-आधारित प्रणाली में, मूल्यांकन के प्रयोजन का केंद्र-बिंदु बदल गया है। अब इसमें तत्परता परीक्षण, विकास की जांच परख, संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोप्रेरक क्षेत्रों में कार्य निष्पादन का बार-बार

सुनियोजित और प्रभावकारी तरीके से मूल्यांकन किया जाना शामिल है।

अन्य शब्दों में, विद्यालय-आधारित मूल्यांकन बाल-केंद्रित, विद्यालय-केंद्रित और बहुआयामी मूल्यांकन होता है। यह सही मायने में शिक्षार्थी के सर्वतोमुखी विकास का सूत्रपात करता है। यह विद्यालय के अंदर और विद्यालय के बाहर दोनों जगहों पर जीवन में सभी प्रकार की शिक्षा प्राप्ति को प्रोत्साहित करता है। यह बाल-केंद्रित होता है, क्योंकि यह विकास के वैयक्तिक स्वरूप की दृष्टि से विद्यार्थी को एक अद्वितीय अस्तित्व मानता है। यह अपनी शिक्षा के पहले से निर्धारित लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षार्थी का एक अलग व्यक्तित्व के रूप में, अन्य शिक्षार्थियों की तुलना में केवल उसकी स्थिति के रूप में नहीं बल्कि प्रत्येक बच्चे की अपनी वैयक्तिक योग्यताओं, प्रगति और विकास के आधार पर निर्माण करता है।

विद्यालय आधारित मूल्यांकन की विशेषताएं

I. विद्यार्थी से संबद्ध विशेषताएं

- (i) यह पारंपरिक प्रणाली से अधिक विस्तृत, अधिक व्यापक और सतत होता है।
- (ii) इसका मुख्य लक्ष्य शिक्षार्थी को सुनियोजित अधिगम और विकास की ओर उन्मुख करने में सहायता देना होता है।
- (iii) यह भविष्य के जिम्मेदार नागरिक के रूप में शिक्षार्थी की आवश्यकताओं का ध्यान रखता है।

- (iv) यह अधिक पारदर्शी, भविष्यात्मक और शिक्षार्थियों, अध्यापकों और माता-पिता के बीच सहयोजन की अधिक गुंजाइश मुहैया करानेवाला होता है।
- (v) यह शिक्षार्थी को अपनी क्षमता का बेहतर तरीके से उपयोग करने में सहायता देता है।

II. अध्यापक से संबद्ध विशेषताएं

विद्यालय आधारित प्रणाली में अध्यापकों को अपने विद्यार्थियों के बारे में निम्नलिखित बातें जानने का अवसर मिलता है—

- (i) बच्चे क्या सोचते हैं?
- (ii) बच्चे क्या महसूस करते हैं?
- (iii) उनकी रुचियां और प्रवृत्तियां क्या हैं?
- (iv) इकट्ठा सीखने में बच्चों को किस प्रकार की कठिनाइयों अथवा सीमाओं का सामना करना पड़ता है?
- (v) यह विद्या अध्यापकों को ऐसे तरीकों को ढूंढने के लिए पैनी दृष्टि प्रदान करता है, जो अलग-अलग शिक्षार्थियों के लिए अपनी समस्याओं और कठिनाइयों के समाधान में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

सतत् और व्यापक मूल्यांकन (CCE)

सतत् और व्यापक मूल्यांकन का तात्पर्य विद्यार्थियों के विद्यालय आधारित मूल्यांकन की उस प्रणाली के बारे में है, जिसमें विद्यार्थियों के विकास के सभी पहलुओं की ओर ध्यान दिया जाता है।

‘सतत्’ शब्द का उद्देश्य इस बात पर बल देना है कि बच्चों की ‘संवृद्धि और विकास’ के अभिज्ञात पहलुओं का मूल्यांकन एक घटना होने के बजाए एक सतत् प्रक्रिया है, जो अध्यापन-शिक्षा-प्राप्ति की संपूर्ण प्रक्रिया के अंदर निर्मित है और शैक्षिक सत्र की समूची अवधि में फैली होती है।

‘व्यापक’ का अर्थ है कि यह योजना विद्यार्थियों की संवृद्धि और विकास के शैक्षिक और सह-शैक्षिक दोनों क्षेत्रों को समाहित करने का प्रयास करती है। चूंकि योग्यताएं, अभिवृत्तियां और अभिरुचियां अपने आपको लिखित शब्दों से भिन्न अन्य रूपों में प्रकट करती हैं, इसलिए इस शब्द में विभिन्न प्रकार के साधनों और तकनीकों (परीक्षण और गैर-परीक्षण) के उपयोग और शिक्षा-प्राप्ति के क्षेत्रों में शिक्षार्थियों

के विकास को आंकने के लक्ष्यों का उल्लेख किया गया है, यथा—

- (i) ज्ञान,
- (ii) समझना/बोध,
- (iii) अनुप्रयोग,
- (iv) विश्लेषण,
- (v) मूल्यांकन और
- (vi) सृजन।

इस प्रकार स्पष्ट है कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन एक पाठ्यचर्या संबंधी पहल है, जिसमें परीक्षण के स्थान पर संपूर्णवादी शिक्षा प्राप्ति पर जोर दिए जाने का प्रयास किया जाता है। इसका लक्ष्य अच्छे स्वास्थ्य, उपयुक्त कौशलों और वांछनीय गुणवत्ता वाले और इसके अलावा शैक्षिक उत्कृष्टता वाले अच्छे नागरिकों का निर्माण करना है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का उद्देश्य

- (i) संज्ञानात्मक, मनोप्रेरक (साइकोमोटर) और प्रभावकारी कौशलों का विकास करने में सहायता देना।
- (ii) चिंतन की प्रक्रिया पर जोर देना और कंठस्थ करने पर बल न देना।
- (iii) मूल्यांकन को अध्यापन-शिक्षा-प्राप्ति की प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाना।
- (iv) मूल्यांकन का उपयोग नियमित निदान और उसके बाद उपचारात्मक अनुदेश के आधार पर विद्यार्थियों की उपलब्धियों और अध्यापन-शिक्षा-प्राप्ति की कार्यनीतियों में सुधार करने के लिए करना।
- (v) कार्य-निष्पादन का वांछित स्तर बनाए रखने के लिए मूल्यांकन का उपयोग एक गुणवत्ता नियंत्रण साधन के रूप में करना।

अधिगम का मूल्यांकन

अधिगम के मूल्यांकन में उपलब्ध प्रमाणों के साथ कार्य करना शामिल है, जो स्टाफ और व्यापक मूल्यांकन समुदाय को विद्यार्थियों की प्रगति की जांच करने और इस सूचना का अनेक तरीकों से इस्तेमाल करने में समर्थ बनाता है। मूल्यांकन के दो स्तर हैं— (i) रचनात्मक मूल्यांकन (Formative Assessment) एवं (ii) सारांशात्मक मूल्यांकन (Summative Assessment)।

- (i) रचनात्मक मूल्यांकन : इस मूल्यांकन को सीखने/अधिगम का मूल्यांकन भी कहा जाता है। इसका उपयोग अध्यापक द्वारा विद्यार्थी की प्रगति को एक ऐसे

वातावरण में मॉनीटर करने के लिए किया जाता है, जो घबराहट पैदा करने वाला न हो और प्रोत्साहन देने वाला हो। इसमें विद्यार्थी को नियमित प्रत्युत्तर मुहैया कराना और उसे अपने कार्य-निष्पादन पर विचार करने, सलाह प्राप्त करने और उसमें सुधार करने का अवसर प्रदान करना शामिल है। इसमें विद्यार्थियों को स्व-मूल्यांकन करने अथवा अपने समकक्षों का मूल्यांकन करने की कसौटियां तय करने के एक आवश्यक भाग के रूप में शामिल किया जाता है। यदि इसे प्रभावकारी रूप से उपयोग में लाया जाए तो यह बच्चे के आत्म-सम्मान को बढ़ाते हुए और अध्यापक के कार्य भार को घटाकर, विद्यार्थी के कार्य निष्पादन में जबरदस्त सुधार कर सकता है।

रचनात्मक मूल्यांकन की विशेषताएं :

- (a) यह नैदानिक एवं उपचारात्मक है।
- (b) यह प्रभावकारी प्रत्युत्तर की व्यवस्था करता है।
- (c) यह विद्यार्थियों को स्वयं अपनी शिक्षा प्राप्ति में सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए मंच उपलब्ध कराता है।
- (d) यह अध्यापकों को मूल्यांकन के परिणाम को ध्यान में रखते हुए उन्हें अध्यापन को समायोजित करने में समर्थ बनाता है।

ii) **सारांशात्मक मूल्यांकन :** यह मूल्यांकन शिक्षा पाठ्यक्रम के समाप्त होने पर किया जाता है। सारांशात्मक मूल्यांकन यह मापता है कि विद्यार्थी ने पाठ्यक्रम से क्या सीखा है। यह मुख्य रूप से एक श्रेणीकृत (Graded) परीक्षण होता है, अर्थात् इसमें एक पैमाने के अनुसार अथवा ग्रेडों के एक सेट के अनुसार अंक दिए जाते हैं।

वह मूल्यांकन, जो मुख्यतः सारांशात्मक प्रकृति का होगा, अपने आप में बच्चे की संवृद्धि और उसके विकास का कोई संगत एवं युक्तिसंगत पैमाना नहीं होगा। अधिक-से-अधिक यह एक समय-विशेष पर उपलब्धि के स्तर को प्रमाणित करता है।

सारांशात्मक मूल्यांकन की विशेषताएं :

- (a) शिक्षा-प्राप्ति का निर्धारण।
- (b) सामान्य रूप से विद्यार्थियों द्वारा किसी यूनिट अथवा सेमेस्टर के समाप्त होने पर उसका सारांश प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है, जो उन्होंने सीखा हो अथवा न सीखा हो।

(c) इस मूल्यांकन के तरीके अधिकतर विद्यार्थियों के कार्य का मूल्यांकन करने के पारंपरिक तरीके होते हैं।

अधिगम के मूल्यांकन की विशेषताएं

- (i) यह मूल्यांकन शिक्षा-प्राप्ति के बाद किया जाता है।
- (ii) सूचना अध्यापक द्वारा एकत्र की जाती है।
- (iii) सूचना को सामान्य रूप से अंकों अथवा ग्रेडों में रूपांतरित किया जाता है।
- (iv) अन्य विद्यार्थियों के कार्य-निष्पादन के साथ तुलना की जाती है।
- (v) इसके पहले प्राप्त की गई शिक्षा पर नजर डाला जाता है।

अधिगम के अच्छे मूल्यांकन के मानदंड

- (i) वे युक्तिसंगत होते हैं (ठोस मानदंडों पर आधारित)।
- (ii) वे विश्वसनीय होते हैं (मूल्यांकन और पद्धति का सही होना)।
- (iii) वे तुलनीय होते हैं (जब उनकी तुलना अन्य विभागों अथवा विद्यालयों में हुई जांच-परख से की जाती है, तो वे ठीक पाए जाते हैं)।

अधिगम के मूल्यांकन के उद्देश्य

अधिगम के मूल्यांकन का सार यह है कि सारांशात्मक मूल्यांकन को किसी विशेष समय पर विषय-वस्तु के मानदंडों की तुलना में विद्यार्थी की शिक्षा को मापने का एक साधन समझा जाए।

सतत् और व्यापक मूल्यांकन की विशेषताएं

- (i) सतत् और व्यापक मूल्यांकन में 'सतत्' पहलू के तहत मूल्यांकन के 'सतत्' और 'आवधिक' पहलू का ध्यान रखा जाता है।
- (ii) निरंतरता का अर्थ है शिक्षा के प्रारंभ में विद्यार्थियों का निर्धारण या स्थापन मूल्यांकन और शिक्षण प्रक्रिया के दौरान रचनात्मक मूल्यांकन, जो मूल्यांकन की बहुविध तकनीकों का उपयोग करके अनौपचारिक रूप से किया जाता है।
- (iii) नियतकालिकता का अर्थ है कार्य-निष्पादन का मूल्यांकन जो यूनिट/अवधि के समाप्त होने पर बार-बार किया जाता है (सारांशात्मक)।

- (iv) सतत् और व्यापक मूल्यांकन का 'व्यापक' संघटक बच्चे के व्यक्तित्व के सर्वतोमुखी विकास के निर्धारण का ध्यान रखता है। इसमें विद्यार्थियों के विकास के शैक्षिक और इसके अलावा सह-शैक्षिक पहलुओं का निर्धारण शामिल है।
- (v) शैक्षिक पहलुओं में पाठ्यक्रम के क्षेत्र अथवा विषय-सापेक्ष क्षेत्र शामिल होते हैं, जबकि सह-शैक्षिक पहलुओं में जीवन-कौशल, सह-पाठ्यचर्या अभिवृत्तियाँ और मूल्य शामिल होते हैं।

सतत् और व्यापक मूल्यांकन : विचार एवं व्यवहार

अध्यापन-शिक्षा-प्राप्ति प्रक्रिया में, मूल्यांकन से शैक्षिक और सह-शैक्षिक पहलुओं का ध्यान रखने की अपेक्षा की जाती है। यदि कोई किसी क्षेत्र में कमजोर है तो नैदानिक मूल्यांकन किया जाना चाहिए और उपचारी उपाय अपनाए जाने चाहिए। सतत् मूल्यांकन समय-समय पर बच्चे, अध्यापकों और माता-पिता को उपलब्धि के बारे में जागरूक बनाने में सहायता देता है। यदि उपलब्धि में कोई कमी हुई हो तो वे उसके संभावित कारणों की जांच कर सकते हैं और शिक्षा के उस क्षेत्र में जिसमें अधिक जोर देने की आवश्यकता हो उपचारी उपाय कर सकते हैं।

सतत् और व्यापक मूल्यांकन का मुख्य जोर विद्यार्थियों की निरंतर संवृद्धि और उनके बौद्धिक, भावनात्मक, शारीरिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास सुनिश्चित करने पर होता है और इसलिए यह विद्यार्थी की केवल शैक्षिक उपलब्धियों को आंकने तक सीमित नहीं होता। इस मूल्यांकन का उपयोग

शिक्षार्थियों को अन्य कार्यक्रमों के लिए अभिप्रेरित करने, सूचना प्रदान करने, प्रत्युत्तर (Feedback) की व्यवस्था करने और शिक्षा-प्राप्ति में सुधार करने के लिए अनुवर्ती कार्रवाई करने और शिक्षार्थी के विवरणों की एक व्यापक तस्वीर प्रस्तुत करने के एक साधन के रूप में किया जाता है।

सतत् और व्यापक मूल्यांकन (CCE) के महत्वपूर्ण कार्य

- (i) यह अध्यापक को प्रभावकारी कार्यनीतियाँ आयोजित करने में सहायता देता है।
- (ii) सतत् और व्यापक मूल्यांकन शिक्षार्थी की प्रगति की सीमा और मात्रा को नियमित रूप से आंकने में सहायता देता है (विशिष्ट शैक्षिक और सह-शैक्षिक क्षेत्रों के संदर्भ में योग्यता और उपलब्धि)।
- (iii) सतत् और व्यापक मूल्यांकन अभिरुचियों और प्रवृत्ति वाले क्षेत्र को अभिज्ञात करता है। यह अभिवृत्तियों और मूल्य प्रणालियों में होने वाले परिवर्तनों का पता लगाने में सहायता देता है।
- (iv) यह विषयों, पाठ्यक्रमों और जीवनवृत्तियों (Carrier) के चुनाव के बारे में, भविष्य के लिए फैसला करने में सहायता देता है।
- (v) यह शैक्षिक और सह-शैक्षिक क्षेत्रों में विद्यार्थियों की प्रगति के बारे में सूचना/रिपोर्ट देता है और इस प्रकार शिक्षार्थी की भावी सफलताओं के बारे में पूर्वानुमान लगाने में सहायता देता है।

11. शिक्षार्थी के पढ़ाई स्तर के मूल्यांकन के लिए उचित प्रश्न-पत्र की आवश्यकता

किसी भी शिक्षार्थी के पढ़ाई के स्तर की जांच में एक अच्छे प्रश्न-पत्र की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस प्रश्न-पत्र के माध्यम से ही शिक्षक शिक्षार्थियों के विकास का मूल्यांकन करता है। एक प्रश्न-पत्र के निम्न कार्य होते हैं—

- (i) यह उच्च उपलब्धि प्राप्त छात्रों एवं निम्न उपलब्धि प्राप्त छात्रों के बीच अंतर स्पष्ट करता है।
- (ii) यह प्राप्तांकों के आधार पर शिक्षार्थी के वर्गीकरण में सहायक होता है।
- (iii) यह शिक्षार्थी के शैक्षिक-प्रारूप का संपूर्णता में मूल्यांकन करने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

उपर्युक्त बातों से स्पष्ट है कि प्रश्न-पत्र एक शिक्षार्थी के मूल्यांकन प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है। प्रश्न-पत्र निर्माण में कुछ खास बातों का ध्यान आवश्यक है, यथा— प्रश्न-पत्र अपने पूर्व निर्धारित प्रकार्यों पर खरा उतरे एवं प्रश्न-पत्र की प्रकृति सृजनात्मक हो आदि। अतः एक निर्धारित योजना के अनुसार प्रश्नों का संकलन करना चाहिए।

परंपरागत प्रश्न-पत्र के दोष

एक अच्छे प्रश्न-पत्र का निर्माण काफी श्रम-साध्य, समयबद्ध एवं सुनियोजित प्रक्रिया है। वर्तमान में अध्यापक जो प्रश्न-पत्र तैयार करते हैं वह प्रायः पारंपरिक प्रश्नों का ही अनुसरण

करते हैं। इन पारंपरिक प्रश्नों में कमियां पाई जाती है। पारंपरिक प्रश्नों में निम्न प्रकार की कमियां पाई जाती है—

- (i) पारंपरिक प्रश्न-पत्रों में घिसे-पिटे प्रश्नों की अधिकता रहती है। ये प्रश्न प्रायः निबंधात्मक एवं पाठ्य-पुस्तकोन्मुखी होते हैं। इस प्रकार के प्रश्न छात्रों की समस्याओं व उनकी वास्तविक क्षमताओं का मूल्यांकन करने में सक्षम साबित नहीं होते।
- (ii) पारंपरिक प्रश्नों का प्रकार निबंधात्मक होने से प्रश्नों की संख्या कम होती है जिससे वे पाठ्यक्रम का अधिकांश भाग पूरा नहीं कर पाते।
- (iii) कुछ प्रश्न ऐसे होते हैं जिनसे विद्यार्थियों में जानकारीयों को स्मरण तथा कंठस्थ करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है। ऐसे प्रश्नों में पाठ्यक्रम समग्र रूप से समाहित नहीं होते। साथ ही ऐसे प्रश्न छात्रों की समझ और कौशल की जांच करने में समर्थ नहीं होते।
- (iv) 'व्याख्या करें', 'स्पष्ट करें', 'आप क्या जानते हैं', 'संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए', 'संक्षिप्त विवरण दें', 'विवेचना करें' आदि जैसे निर्देशक शब्द किसी भी प्रश्न-पत्र को अस्पष्ट बना देते हैं। ऐसे प्रश्नों में छात्र प्रायः यह निश्चित नहीं कर पाते कि क्या उत्तर देना है।
- (v) पारंपरिक प्रश्नों में प्रतीकों और आकृतियों के परिकलन (Calculation) और भौतिक कौशल पर अत्यधिक बल रहता है जबकि गणितीय ज्ञान और उनके अनुप्रयोग आदि से संबद्ध प्रश्नों पर एकदम ध्यान नहीं दिया जाता है।

प्रश्न-पत्रों के दोषों को दूर करने के उपाय

- (i) निर्देशात्मक प्रकृति के प्रश्नों में अस्पष्टता नहीं होनी चाहिए।
- (ii) अंक देने की प्रक्रिया वस्तुनिष्ठ होनी चाहिए। इसके लिए परीक्षकों को कुंजी (Key) तथा अंक देने की योजना भी उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
- (iii) प्रश्न-पत्र को इस तरह से तैयार किया जाना चाहिए कि छात्रों का विभिन्न कोणों से मूल्यांकन किया जा सके।
- (iv) प्रश्नों को तैयार करने में उसकी भाषा की सरलता तथा स्पष्टता का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए ताकि विद्यार्थी को यह पता चले कि प्रश्न के उत्तर में क्या लिखना है।
- (v) प्रश्न लघु-उत्तरीय प्रकार (Short Answer Type) और अति लघु-उत्तरीय प्रकार (Very Short Answer Type) का होना चाहिए। इससे पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछने में सहूलियत होती है और छात्रों में समग्र अध्ययन की प्रवृत्ति का विकास होता है। कुछ निबंधात्मक प्रकार (Essay Type) के प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं।

एक अच्छे प्रश्न-पत्र की विशेषताएं/गुण

- (i) विश्वसनीयता।
- (ii) वैधता।
- (iii) प्रयोज्यता।
- (iv) परिणामों की व्याख्या।
- (v) प्रारूप।



Target Sarkari Naukri अभ्यास प्रश्न

1. एक शिक्षक अपने लोकतांत्रिक स्वभाव के कारण विद्यार्थियों को पूरी कक्षा में कहीं भी बैठने की अनुमति देता है। कुछ शिक्षार्थी एक-साथ बैठते हैं और चर्चा करते हैं या सामूहिक पठन करते हैं। कुछ चुपचाप बैठकर अपने-आप पढ़ते हैं। एक अभिभावक को यह पसंद नहीं आता। इस स्थिति से निबटने का निम्न में से कौन-सा तरीका सबसे बेहतर हो सकता है?

- A. अभिभावकों को प्रधानाचार्य से अनुरोध करना चाहिए कि वे उनके बच्चे का अनुभाग बदल दें
- B. अभिभावकों को शिक्षक पर विश्वास व्यक्त करना चाहिए और शिक्षक के साथ समस्या पर चर्चा करनी चाहिए
- C. अभिभावकों को उस विद्यालय से अपने बच्चे को निकाल लेना चाहिए

- D. अभिभावकों को प्रधानाचार्य से शिक्षक की शिकायत करनी चाहिए
2. वह अवस्था जब बच्चा तार्किक रूप से वस्तुओं व घटनाओं के विषय में चिंतन प्रारंभ करता है, है
- A. औपचारिक-संक्रियात्मक अवस्था
B. पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था
C. मूर्त-संक्रियात्मक अवस्था
D. संवेदी-प्रेरक अवस्था
3. 'मन का मानचित्रण' संबंधित है
- A. साहसिक कार्यों की क्रिया-योजना से
B. मन का चित्र बनाने से
C. मन की क्रियाशीलता पर अनुसंधान से
D. बोध (समझ) बढ़ाने की तकनीक से
4. विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की सीखने सम्बन्धी समस्याओं को संबोधित करने का सबसे बेहतर तरीका है
- A. महँगी और चमकदार सहायक सामग्री का प्रयोग करना
B. सरल और रोचक पाठ्य-पुस्तकों का प्रयोग करना
C. कहानी-कथन पद्धति का प्रयोग करना
D. अक्षमता के अनुरूप विभिन्न शिक्षण-पद्धतियों का प्रयोग करना
5. पियाजे के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन-सी अवस्था में बच्चा अमूर्त संकल्पनाओं के विषय में तार्किक चिंतन करना आरंभ करता है?
- A. औपचारिक-संक्रियात्मक अवस्था (11 वर्ष एवं ऊपर)
B. संवेदी-प्रेरक अवस्था (जन्म-02 वर्ष)
C. पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था (02-07 वर्ष)
D. मूर्त-संक्रियात्मक अवस्था (07-11 वर्ष)
6. निम्न में से कौन-सा बच्चे की सामाजिक-मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के साथ संबद्ध नहीं है?
- A. संवेगात्मक सुरक्षा की आवश्यकता
B. शरीर से अपशिष्ट पदार्थों का नियमित रूप से बाहर निकलना
C. सान्निध्य (संगति) की आवश्यकता
D. सामाजिक अनुमोदन अथवा सराहना की आवश्यकता
7. वह कौन-सा कथन है जहाँ बच्चे के 'संज्ञानात्मक' विकास को सबसे बेहतर तरीके से परिभाषित किया जा सकता है?
- A. विद्यालय एवं कक्षा पर्यावरण
B. सभागार
C. घर
D. खेल का मैदान
8. निम्न में से कौन-सा बुद्धिमान बच्चे का लक्षण नहीं है?
- A. वह जो प्रवाहपूर्ण एवं उचित तरीके से संप्रेषण करने की क्षमता रखता है
B. वह जो अमूर्त रूप से सोचता रहता है
C. वह जो नए परिवेश में स्वयं को समायोजित कर सकता है
D. वह जो लंबे निबंधों को बहुत जल्दी रटने की क्षमता रखता है
9. "बच्चे दुनिया के बारे में अपनी समझ का सृजन करते हैं।" इसका श्रेय को जाता है।
- A. पैवलॉव
B. कोह्लबर्ग
C. स्किनर
D. पियाजे
10. शिक्षा के क्षेत्र में 'पाठ्यचर्या' शब्दावली की ओर संकेत करती है।
- A. विद्यालय का संपूर्ण कार्यक्रम जिसमें विद्यार्थी प्रतिदिन अनुभव प्राप्त करते हैं
B. मूल्यांकन-प्रक्रिया
C. कक्षा में प्रयुक्त की जाने वाली पाठ्य सामग्री
D. शिक्षण-पद्धति एवं पढ़ाई जाने वाली विषय-वस्तु
11. आकलन को 'उपयोगी और रोचक' प्रक्रिया बनाने के लिए के प्रति सचेत होना चाहिए।
- A. विद्यार्थियों को बुद्धिमान या औसत शिक्षार्थी की उपाधि देना
B. शैक्षिक और सह-शैक्षिक क्षेत्रों में विद्यार्थी के सीखने के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए विविध तरीकों का प्रयोग करना
C. प्रतिपुष्टि (फीडबैक) देने के लिए तकनीकी भाषा का प्रयोग करना
D. अलग-अलग विद्यार्थियों में तुलना करना
12. निम्न में किसने कहा है कि शिशु अपने एवं अपने संसार के बारे में अधिकांश बातें खेल के माध्यम से सीखता है?
- A. क्रो एवं क्रो
B. स्ट्रेंग
C. जॉन डीवी
D. गेसल

13. "विकास कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है।" यह विचार किससे सम्बन्धित है?
- A. निरंतरता का सिद्धांत
B. एकीकरण का सिद्धांत
C. अंतःक्रिया का सिद्धांत
D. अंतःसम्बन्ध का सिद्धांत
14. निम्नलिखित में से किस अवस्था में बच्चे अपने समवयस्क समूह के सक्रिय सदस्य हो जाते हैं?
- A. प्रौढ़ावस्था
B. पूर्व बाल्यावस्था
C. बाल्यावस्था
D. किशोरावस्था
15. बच्चों के बौद्धिक विकास की चार विशिष्ट अवस्थाओं की पहचान की गई
- A. एरिकसन द्वारा
B. रिकनर द्वारा
C. पियाजे द्वारा
D. कोह्लबर्ग द्वारा
16. वह स्तर जिसमें बच्चा किसी वस्तु एवं घटना के बारे में तार्किक रूप से सोचना शुरू करता है, कहा जाता है
- A. संवेदन प्रणोद अवस्था
B. औपचारिक क्रियात्मक अवस्था
C. पूर्व क्रियात्मक अवस्था
D. मूर्त क्रियात्मक अवस्था
17. बच्चों के बौद्धिक विकास के चार सुस्पष्ट स्तरों को पहचाना गया था
- A. कोह्लबर्ग द्वारा
B. एरिकसन द्वारा
C. स्कीनर द्वारा
D. पियाजे द्वारा
18. विद्यार्थियों को विद्यालय में खेलना क्यों उचित है?
- A. यह उन्हें शारीरिक रूप से सशक्त बनाएगा
B. यह शिक्षकों के लिए काम आसान करेगा
C. यह समय बिताने में सहायक होगा
D. यह सहयोग एवं शारीरिक संतुलन का विकास करेगा
19. परिवार एक साधन है
- A. अनौपचारिक शिक्षा का
B. औपचारिक शिक्षा का
C. गैर-औपचारिक शिक्षा का
D. दूरस्थ शिक्षा का
20. एक शिक्षक विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों को विकसित कर सकता है

- A. महान व्यक्तियों के बारे में बोलकर
B. अनुशासन की अनुभूति को विकसित कर
C. आदर्श रूप से बर्ताव कर
D. उन्हें अच्छी कहानियाँ सुनाकर
21. एक शिक्षक के लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है?
- A. कक्षा में अनुशासन बनाए रखना
B. कक्षा में समयानुवर्ती होना
C. विद्यार्थियों की कठिनाइयों को दूर करना
D. एक सुवक्ता होना
22. शिक्षा की किण्डरगार्टन पद्धति का प्रतिपादन किया
- A. टी.पी. नन ने
B. स्पेंसर ने
C. फ्रोबेल ने
D. माण्टेसरी ने
23. बचपन का सांप्रतिक दृष्टिकोण की मान्यता है
- A. बहुत तरीके से बच्चे प्राप्त वयस्कों के बराबर होते हैं
B. बच्चों को युवा प्राप्तवयस्कों के रूप में सबसे अच्छा माना जाता है
C. बचपन आधारिक रूप से 'प्रतीक्षा अवधि' है
D. बचपन वृद्धि एवं परिवर्तन की एक अनूठी अवधि है
24. असंगठित घर से आनेवाला बच्चा सबसे अधिक कठिनाई का अनुभव करेगा
- A. सुनिर्मित पाठों में
B. स्वतंत्र अध्ययन में
C. नियोजित निर्देश में
D. अभ्यास पुस्तिकाओं में
25. चरित्र का विकास होता है
- A. इच्छाशक्ति द्वारा
B. बर्ताव एवं व्यवहार द्वारा
C. नैतिकता द्वारा
D. इनमें से सभी
26. शिक्षक का बर्ताव होना चाहिए
- A. प्रशंसात्मक
B. शिक्षाप्रद
C. आदर्शवादी
D. निदेशात्मक
27. बालिका शिक्षा को महत्ता देना उचित है, कारण
- A. बालिकाएँ बालकों से अधिक बुद्धिमती हैं
B. बालिकाएँ बालकों से अल्पसंख्यक हैं
C. अतीत में बालिकाओं को बुरी तरह से विभेदित किया जाता था
D. किसी सामाजिक परिवर्तन के नेतृत्व में केवल बालिकाएँ समर्थ हैं

28. यदि कोई विद्यार्थी आपका सम्मान नहीं करता है तो आप
 A. उसकी उपेक्षा करेंगे
 B. परीक्षा में कम अंक देंगे
 C. उसके अभिभावकों से बात करेंगे
 D. उसे डांटेंगे
29. निम्न में से किस स्तर में बच्चे अपने समकक्षी वर्ग के सक्रिय सदस्य बनते हैं?
 A. किशोरावस्था B. वयस्कावस्था
 C. प्राक् बाल्यावस्था D. बाल्यावस्था
30. एक प्रसामान्य 12 वर्ष उम्र के बच्चे में सबसे अधिक होना संभव है
 A. कुल प्रेरक समन्वय में कठिनाई
 B. वयस्कों को खुश करने के बारे में दुश्चिन्ता की अनुभूति
 C. अब और यहाँ में उसकी रुचियों को सीमित करना
 D. समकक्षी के अनुमोदन के लिए बेचैनी
31. बाल विकास की परिभाषा का अध्ययन क्षेत्र है जो
 A. मानवीय सामर्थ्यों में परिवर्तन का परीक्षण करता है
 B. जीवन अवधि के दौरान व्यवहार की व्याख्या ढूँढ़ेगा
 C. बच्चों व वयस्क तथा वरिष्ठ नागरिकों के साथ तुलना करेगा
 D. किसी बच्चे का संज्ञानात्मक, सामाजिक तथा दूसरे सामर्थ्यों का क्रमिक विकास के लिए उत्तरदायी होगा
32. प्राथमिक शिक्षक के लिए बाल मनोविज्ञान का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि
 A. यह बच्चों को अनुशासित बनाने में सहायता करता है
 B. परीक्षा के परिणाम में उन्नति होती है
 C. यह बच्चों को अभिप्रेरित करने के लिए सुविधाजनक तरीका बन जाता है
 D. यह बच्चों के व्यवहार को समझने में शिक्षक की सहायता करता है
33. विद्यार्थी में अवांछित व्यवहार को किंचित परिवर्तन करने में सबसे प्रभावी पद्धति है
 A. विद्यार्थी को दण्ड देना
 B. अभिभावकों के ध्यान में इसे लाना
 C. अवांछित व्यवहार के कारणों को ढूँढ़ना एवं उपचार का प्रबंधन करना
 D. इसकी उपेक्षा करना
34. किसी विद्यार्थी की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है
 A. उत्तरदायित्व की अनुभूति B. ईमानदारी
 C. सहभागिता D. आज्ञाकारिता
35. बुनियादी स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा देना बेहतर है, क्योंकि यह
 A. बच्चों में आत्मविश्वास का विकास करेगा
 B. अधिगम को सरल बनाएगा
 C. बौद्धिक विकास में सहायता करेगा
 D. प्राकृतिक वातावरण में बच्चों को सीखने में सहायता करेगा
36. शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए
 A. विद्यार्थियों में व्यावसायिक कुशलता का विकास करना
 B. विद्यार्थियों में सामाजिक जागरूकता का विकास करना
 C. विद्यार्थियों को परीक्षा के लिए तैयार करना
 D. व्यावहारिक जीवन के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना
37. 'खिलौनों की आयु' कहा जाता है?
 A. पूर्व बाल्यावस्था को
 B. उत्तर बाल्यावस्था को
 C. शैशवावस्था को
 D. इनमें से सभी
38. निम्न में से कौन-सी पूर्व बाल्यावस्था की विशेषता नहीं है?
 A. दल/समूह में रहने की अवस्था
 B. अनुकरण करने की अवस्था
 C. प्रश्न करने की अवस्था
 D. खेलने की अवस्था
39. उत्तर बाल्यावस्था में बालक भौतिक वस्तुओं के किस आवश्यक तत्व में परिवर्तन समझने लगते हैं?
 A. द्रव्यमान
 B. द्रव्यमान और संख्या
 C. संख्या
 D. द्रव्यमान, संख्या और क्षेत्र

40. विकास का अर्थ है :
- परिवर्तनों की उत्तरोत्तर शृंखला
 - अभिप्रेरणा के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की उत्तरोत्तर शृंखला
 - अभिप्रेरणा एवं अनुभव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की उत्तरोत्तर शृंखला
 - परिपक्वता एवं अनुभव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की शृंखला।
41. विकास के सन्दर्भ में से कौन-सा कथन सत्य नहीं है?
- विकास की प्रत्येक अवस्था के अपने खतरे हैं
 - विकास उकसाने/बढ़ावा देने से नहीं होता है
 - विकास सांस्कृतिक परिवर्तनों से प्रभावित होता है
 - विकास की प्रत्येक अवस्था की अपनी विशेषताएँ होती हैं
42. निम्न में से कौन-सा विकासात्मक कार्य उत्तर बाल्यावस्था के उपयुक्त नहीं है?
- सामान्य खेलों के लिये आवश्यक शारीरिक कुशलताएँ सीखना
 - पुरुषोचित या स्त्रियोचित सामाजिक भूमिकाओं को प्राप्त करना
 - वैयक्तिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करना
 - अपने हमउम्र बालकों के साथ रहना सीखना
43. सामान्य परिपक्वता से पहले प्रशिक्षित करना प्रायः
- सामान्य कौशलों के निष्पादन के संदर्भ में बहुत लाभकारी होता है
 - कुल मिलाकर हानिकारक होता है
 - दीर्घकालिक दृष्टि से लाभकारी होता है
 - लाभकारी हो या हानिकारक, यह इस पर निर्भर करता है कि प्रशिक्षण में किस प्रकार की विधि का प्रयोग किया गया है।
44. पाँच वर्ष का राजू अपनी खिड़की के बाहर तूफान को देखता है। बिजली चमकती है और कड़कने की आवाज आती है। राजू शोर सुनकर उछलता है। बार-बार यह घटना होती है। फिर कुछ शान्ति के पश्चात् बिजली कड़कती है। राजू बिजली की गर्जना सुनकर उछलता है। राजू का उछलना सीखने के किस सिद्धान्त का उदाहरण है?
- शास्त्रीय अनुबन्धन
 - क्रियाप्रसूत अनुबन्धन
 - प्रयत्न एवं भूल
 - इनमें से कोई नहीं
45. 6 से 10 वर्ष की अवस्था में बालक रुचि लेना प्रारम्भ करते हैं :
- धर्म में
 - मानव शरीर में
 - यौन सम्बन्धों में
 - विद्यालय में
46. कौन सिद्धान्त व्यक्त करता है कि मानव मस्तिष्क एक बर्फ की बड़ी चट्टान के समान है जो कि अधिकांशतः छिपी रहती है एवं उसमें चेतन के तीन स्तर हैं?
- गुण सिद्धान्त
 - प्रकार सिद्धान्त
 - मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त
 - व्यवहारवाद सिद्धान्त
47. समायोजन से तात्पर्य स्वयं का विभिन्न परिस्थितियों में अनुकूलन करना है ताकि सन्तुष्ट किया जा सके
- दूसरों को
 - प्रेरकों को
 - उद्देश्यों को
 - आवश्यकताओं को
48. विद्यार्थियों के अच्छा मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए निम्न में से कौन-सा तरीका अधिक महत्वपूर्ण है?
- सहशैक्षिक क्रियाओं का प्रावधान
 - अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता
 - रुचियों की भिन्नता
 - अध्यापक की भूमिका एवं विद्यालयी वातावरण
49. क्रियात्मक अनुसन्धान के सम्बन्ध में निम्न में से कौन-सा कथन सही नहीं है?
- यह अध्यापकों एवं शिक्षा व्यवसाय से जुड़े लोगों के द्वारा किया जाता है
 - यह किसी विशिष्ट समस्या के समाधान के लिए किया जाता है
 - व्यापक स्तर पर निर्णय लेने के लिए सूचना संकलन का कार्य इसमें किया जाता है
 - स्थानीय स्तर पर रोजमर्रा की समस्याओं के समाधान के लिये क्रियात्मक अनुसन्धान किया जाता है
50. दबाव को कम करने एवं परीक्षाओं में सफलता के लिए आवश्यक है
- कम अवधि की परीक्षाओं में अंतरण
 - विद्यालयी शिक्षा की विभिन्न चरणों में परीक्षाओं का आयोजन
 - वार्षिक एवं अर्द्धवार्षिक परीक्षाएँ
 - विभिन्न प्रवेश परीक्षाओं के लिए विभिन्न एजेन्सियों की स्थापना

51. मूल्यांकन का उद्देश्य है :

- A. बालकों को धीमी गति से सीखने वाले एवं प्रतिभाशाली बालकों के रूप में लेबल करना
- B. जिन बालकों को उपचारात्मक शिक्षा की आवश्यकता है, उनकी पहचान करना
- C. अधिगम की कठिनाइयों व समस्या वाले क्षेत्रों का पता लगाना
- D. उत्पादक जीवन जीने के लिए शिक्षा किस सीमा तक तैयार कर पाई है, का पुष्टिपोषण प्रदान करना

52. प्राथमिक विद्यालयों के बालकों के लिए निम्न में किसे बेहतर मानते हैं?

- A. वीडियो अनुरूपण
- B. प्रदर्शन
- C. स्वयं के द्वारा किया गया अनुभव
- D. इनमें से सभी

53. निम्न में से कौन-सा कथन विकास के बारे में सत्य नहीं है?

- A. विकास अन्तःक्रिया का फल है
- B. विकास एक व्यवस्थित शृंखला का अनुगामी है
- C. विकास एक व्यक्तिगत प्रक्रिया है
- D. विकास विशिष्ट से सामान्य की ओर होता है

54. बालकों की सोच अमूर्तता की अपेक्षा मूर्त अनुभवों एवं प्रत्ययों से होती है। यह अवस्था है :

- A. 7 से 12 वर्ष तक
- B. 12 से वयस्क तक
- C. 2 से 7 वर्ष तक
- D. जन्म से 2 वर्ष तक

55. मानव विकास किन दोनों के योगदान का परिणाम है?

- A. अभिभावक एवं अध्यापक का
- B. सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों का
- C. वंशक्रम एवं वातावरण का
- D. इनमें से कोई नहीं

56. निम्न में से कौन प्याजे के अनुसार बौद्धिक विकास का निर्धारक तत्व नहीं है?

- A. सामाजिक संचरण
- B. अनुभव
- C. सन्तुलनीकरण
- D. इनमें से कोई नहीं

57. गिलफोर्ड ने 'अभिसारी चिन्तन' पद का प्रयोग किसके समान अर्थ में किया है?

A. बुद्धि

B. सृजनात्मकता

C. बुद्धि एवं सृजनात्मकता

D. इनमें से कोई नहीं

58. निम्न में से कौन-सा कथन रुचि के बारे में सत्य नहीं है?

- A. रुचियाँ जन्मजात और अर्जित दोनों होती हैं
- B. रुचियाँ समय के अनुसार बदलती रहती हैं
- C. रुचियाँ योग्यताओं एवं अभिक्षमताओं से सम्बन्धित नहीं होती हैं
- D. रुचियाँ व्यवहार में आकर्षण एवं विकर्षण के प्रतिबिम्ब नहीं हैं

59. अभिवृत्ति है

- A. एक भावात्मक प्रवृत्ति जो अनुभव के द्वारा संगठित होकर किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु के प्रति पसंदगी या नापसंदगी के रूप में प्रतिक्रिया करती है
- B. एक ऐसी विशेषता जो व्यक्ति की योग्यता का परिचायक है जिसे किसी प्रदत्त क्षेत्र में विशिष्ट प्रशिक्षण, ज्ञान अथवा कौशल से सीखा जा सकता है
- C. व्यक्ति की बीजभूत क्षमता जो कि विशिष्ट प्रकार की होती है
- D. इनमें से कोई नहीं

60. व्यक्तित्व एवं बुद्धि में वंशानुक्रम की

- A. नाममात्र की भूमिका है
- B. महत्वपूर्ण भूमिका है
- C. अपूर्वानुमेय भूमिका है
- D. आकर्षक भूमिका है

61. जिन इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती, उनका भण्डारगृह निम्न में से कौन-सा है?

- A. इदम्
- B. अहम्
- C. परम अहम्
- D. इदम् एवं अहम्

62. रक्षा तंत्र बहुत सहायता करता है :

- A. हिंसा से निपटने में
- B. दबाव से निपटने में
- C. थकान से निपटने में
- D. अजनबियों से निपटने में

53. बालक प्रसंगबोध परीक्षण 3 वर्ष से 10 वर्ष की आयु के बालकों के लिए बनाया गया है। इस परीक्षण में कार्ड में प्रतिस्थापित किये गये हैं?
- A. सजीव वस्तुओं के स्थान पर निर्जीव वस्तुओं को
 - B. लोगों के स्थान पर जानवरों को
 - C. पुरुषों के स्थान पर महिलाओं को
 - D. वयस्क के स्थान पर बालकों को
64. निम्न में से कौन-सा कथन सही नहीं है?
- A. आवश्यकता वंचना की शारीरिक अवस्था नहीं है
 - B. अन्तर्नोद आवश्यकता का मनोवैज्ञानिक परिणाम है
 - C. आवश्यकता एवं अन्तर्नोद समान नहीं हैं, बल्कि समानान्तर हैं
 - D. मूलप्रवृत्तियाँ आन्तरिक जैविक बल हैं
65. क्रियात्मक अनुसन्धान का उद्देश्य है
- A. नवीन ज्ञान की खोज
 - B. शैक्षिक परिस्थितियों में व्यवहार विज्ञान का विकास
 - C. विद्यालय तथा कक्षा की शैक्षिक कार्य प्रणाली में सुधार लाना
 - D. इनमें से सभी
66. प्राइमरी स्तर पर छात्रों को मातृभाषा के माध्यम से पढ़ाना अच्छा होता है क्योंकि:
- A. इससे बच्चों को शिक्षा स्वाभाविक वातावरण में मिलती है
 - B. इससे अध्यापक को अनुभवों को बांटने में सुविधा होती है
 - C. उपरोक्त दोनों
 - D. उपरोक्त में से कोई नहीं
67. छात्रों में "श्रम का महत्त्व" भावना का क्या अर्थ है?
- A. शारीरिक श्रम करने से मान सम्मान नहीं घटता
 - B. कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता
 - C. सभी काम समान रूप से इज्जत वाले हैं
 - D. उपरोक्त सभी
68. शिक्षा का माध्यम ऐसी भाषा को बनाना चाहिए :
- A. जिस पर जन साधारण का आधिपत्य हो
 - B. जो बाद में नौकरी के लिए उपयोगी हो
 - C. जो समृद्ध हो
 - D. जिसमें अच्छा सादृश्य उपलब्ध हो
69. क्या आप समझते हैं कि छात्र शिक्षक विरोधी होते हैं:
- A. हां, क्योंकि शिक्षक उन्हें अनुशासित रखने का प्रयास करता है
 - B. नहीं, उनका विरोध मात्र उस व्यवस्था से होता है जो उनकी आवश्यकताओं की उपेक्षा करती है
 - C. हां, क्योंकि वे स्वतन्त्र वातावरण में जीना चाहते हैं जिसका अध्यापक अवसर नहीं देता
 - D. नहीं, यह सोचना ही गलत है
70. आपके विचार में शिक्षा तभी सार्थक होगी जब वह :
- A. पाठ्यक्रम केन्द्रित हो
 - B. छात्र केन्द्रित हो
 - C. समाज केन्द्रित हो
 - D. रोजगार केन्द्रित हो
71. क्या आपके विचार में शिक्षक का व्यक्तित्व आकर्षक होना चाहिए?
- A. हां, ताकि वह छात्रों को अपने व्यक्तित्व से भी प्रभावित कर सके
 - B. हां, ताकि लोग उससे बात करने से हिचकिचाएं
 - C. नहीं, इसकी कोई आवश्यकता नहीं है
 - D. हां, ताकि वह समाज में सबसे अलग दिखाई दे
72. खुला स्कूल व्यवस्था के सम्बन्ध में आपका क्या विचार है?
- A. यह शिक्षा के प्रसार का अच्छा साधन है
 - B. इससे उन छात्रों को भी शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल जाता है जो किसी कारणवश पढ़ना छोड़ चुके होते हैं
 - C. इससे घर बैठे पाठ्य सामग्री प्राप्त हो जाती है
 - D. (A) तथा (B) दोनों
73. स्कूल पाठ्यक्रम में जनसंख्या शिक्षा शामिल करने का लाभ यह है कि :
- A. इससे छात्रों को जनसंख्या विस्फोट के कारण उपजी समस्याओं से अवगत कराया जा सकेगा
 - B. इससे छात्र आगे अपने परिवार को सुखी बना सकेंगे
 - C. इससे छात्र जनसंख्या नियन्त्रण की विधियों के विषय में जानेंगे
 - D. उपरोक्त सभी
74. शिक्षक की योग्यता एवं आचरण का सबसे अच्छा मूल्यांकन करते हैं :
- A. उनके प्रधानाचार्य
 - B. विशेषज्ञ

- C. उनके शिष्य
D. समाज के सम्भ्रांत लोग
75. आपके विचार में शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए :
A. बालकों का सर्वांगीण विकास
B. शिक्षा ग्रहण करने के बाद नौकरी
C. छात्रों को साक्षर बनाना
D. छात्रों की मानसिक योग्यता का विकास
76. भारत में विभिन्न छात्रों के बीच शिक्षा की विषमता के क्या कारण हैं ?
A. निजी और सरकारी दोनों प्रकार के स्कूलों में शिक्षा का स्तर भिन्न-भिन्न होना
B. विभिन्न राज्यों में पाठ्यक्रमों के बीच असमानता
C. देश के विभिन्न भागों में मूल्यांकन के स्तर का भिन्न-भिन्न होना
D. (A) तथा (B) दोनों
77. यदि कोई छात्र अपनी आशा से कम अंक पाता है तो उसे आप क्या कह कर सांत्वना देंगे ?
A. तुम्हें अपने परिश्रम में विश्वास रखना चाहिए
B. परीक्षा में अंक कम मिलने के पीछे परीक्षक की लापरवाही भी हो सकती है
C. हो सकता है तुम्हारे उत्तर अति विचित्र होने के कारण परीक्षक को समझ में न आये हों
D. उपरोक्त सभी
78. अच्छे पारिवारिक परिवेश वाले बच्चे ही आगे बढ़ पाते हैं इस संदर्भ में आपका मत है कि :
A. इनके बच्चों में सभी सुख-सुविधाएं मौजूद रहती हैं
B. इनके बच्चों के ऊपर कोई बोझ नहीं रहता
C. इनके बच्चे अच्छे लोगों के संपर्क में रहते हैं
D. अच्छे पारिवारिक परिवेश में क्लेश नहीं मिलता
79. किसी कार्य योजना को बनाते समय बहुत सी बातों को 'तब की तब सोची जायेगी', उक्ति पर छोड़ा जाता है इस पर आप क्या सोचते हैं?
A. एक निराशावादी विचार
B. एक आशावादी विचार
C. एक श्रेष्ठतम विचार
D. एक मूर्खतापूर्ण विचार
80. छात्रों में असामाजिक गुण विकसित होते हैं आपका विचार है :
A. विद्यालय के परिसर में
B. घर की चारदीवारी के अंदर
C. बुरी संगत में
D. शिक्षकों तथा अभिभावकों के दण्डात्मक उपचार से
81. किसी व्यक्ति का चरित्र सबसे ज्यादा प्रभावित होता है, आप क्या मानते हैं ?
A. पारिवारिक परिवेश से
B. विद्यालय परिवेश से
C. मित्रों के साथ रहने से
D. छात्रावास के परिवेश से
82. कुछ बच्चे अपने से बड़ों के प्रति आदरसूचक शब्दों का प्रयोग नहीं करते हैं तो आप :
A. मानवीय गुणों के बारे में व्याख्यान देंगे
B. उन्हें शिष्ट व्यवहार करने के लिए प्रेरित करेंगे
C. बड़ों के प्रति सम्मान व आदर करने के लिए कहेंगे
D. उन्हें डांटकर बड़ों के प्रति आदर सूचक शब्दों का प्रयोग करने को कहेंगे
83. बच्चों में सामान्य ज्ञान विकसित करने के लिए आप :
A. सामान्य ज्ञान बढ़ायेंगे
B. सामान्य ज्ञान जानने के लिए प्रेरित करेंगे
C. रोज समाचार-पत्र पढ़ने के लिए कहेंगे
D. पुस्तकालयों में जाने के लिए कहेंगे
84. विद्यालय में 'पर्यावरण शिक्षा' से आपका अभिप्राय है :
A. छात्रों में पर्यावरण का ज्ञान हो जाये
B. छात्रों का मनोरंजन हो
C. पर्यावरण को दूषित होने से बचाया जा सके
D. छात्रों पर अतिरिक्त बोझ डालना
85. सरकारी स्कूलों में शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए आप का क्या सुझाव है?
A. उत्पाद की गुणवत्ता में कमी को अध्यापक की लापरवाही से जोड़ना
B. अध्यापकों पर शिकंजा कसने के लिए नए कानून बनाना।
C. मूल्यांकन प्रक्रिया में सुधार।
D. उपरोक्त सभी।
86. स्कूली शिक्षा का निजीकरण आप की दृष्टि में कैसा है?
A. उचित नहीं है
B. आवश्यक है क्योंकि सरकार शिक्षा का इतना बड़ा भार अपने कंधों पर अकेले नहीं ले सकती।

- C. सरकार का अपने कंधों पर दायित्वों से भागना है।
D. उपरोक्त कोई नहीं।
87. भारत में सतत मूल्यांकन प्रणाली स्कूलों में लागू न होने का कारण है :
A. योजनाबद्ध शिक्षण का न होना
B. सरकार की शिक्षा के प्रति उदासीनता
C. प्रधानाचार्यों का शिक्षा विभाग के बंधे टके नियमों पर चलना
D. (A) तथा (C) दोनों
88. सम्मान प्राप्त करने के लिए दूसरों को सम्मान देना अति आवश्यक है यह उक्ति लागू होती है :
A. कार्यालयों एवं कार्यस्थलों में
B. केवल सामाजिक परिस्थितियों में
C. स्कूलों सहित सभी स्थानों पर समान रूप से
D. केवल स्कूलों में
89. वर्तमान आधुनिक शिक्षा एवं उसका स्वरूप है :
A. छात्रों के लिए लगभग व्यर्थ
B. छात्रों को दिशा देने में असमर्थ
C. अत्यन्त उपयुक्त एवं भिन्नताओं पर आधारित
D. छात्रों के लिए गलत शेष सब के लिए सही
90. शिक्षा के क्षेत्र में आप उपयुक्त एवं योग्य व्यक्तियों को किस प्रकार प्रेरित करेंगे ?
A. उन्हें उपयुक्त पद देकर
B. प्रशंसा द्वारा
C. शोध, प्रोत्साहन एवं पुरस्कार देकर
D. अच्छे वेतन द्वारा
91. वर्तमान में किस प्रकार की शिक्षा छात्रों तथा समाज के लिए लाभप्रद है?
A. रोजगार परक व्यावसायिक शिक्षा
B. नैतिक मूल्यों को उजागर करने वाली धार्मिक शिक्षा
C. प्रौद्योगिक का ज्ञान देने वाली शिक्षा
D. विशेषज्ञता प्रदान करने वाली शिक्षा
92. शिक्षकों को राष्ट्रीय भावना के विकास हेतु क्या कदम उठाना चाहिए ?
A. राष्ट्रीयता के विरोधी तत्त्वों का दमन करना चाहिए
B. विद्यालय में ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए जिससे छात्रों में राष्ट्रीय भावना जागे
C. राष्ट्रीय भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए
D. पूरे राष्ट्र के लिए एक ही जैसे विषय वस्तु की वकालत करनी चाहिए
93. एक अध्यापक के रूप में आप जाति एवं वंश के नाम पर भेदभाव को कैसा समझते हैं ?
A. इस व्यवस्था का सम्बन्ध धर्म एवं आस्था से है इसलिए इसे समाप्त नहीं किया जा सकता
B. यह अवैज्ञानिक सोच है जिसको वर्तमान समाज में कोई स्थान नहीं दिया जा सकता
C. इस भावना को समाज से अविलम्ब समाप्त होना चाहिए
D. (A) तथा (C) दोनों
94. बच्चों में मौलिक चिन्तन की शक्ति :
A. विकसित की जा सकती है
B. जन्मजात होती है
C. स्वअध्ययन से बढ़ती है
D. (A) तथा (C) दोनों
95. आपके विचार में चिन्तन शक्ति विकसित करने का क्या उपाय है?
A. छात्रों को समस्या समाधान विधि से पढ़ाया जाये
B. छात्रों को खोज एवं ब्रेन स्टार्मिंग विधि से पढ़ाया जाये
C. छात्रों में स्व-अध्ययन की आदत का विकास किया जाये
D. उपरोक्त सभी
96. किसी अनुत्तीर्ण छात्र को उत्तीर्ण करने के लिए दबाव डाला जाए तो आप :
A. परिस्थितिवश छात्र को उत्तीर्ण कर देंगे
B. छात्र को किसी दशा में उत्तीर्ण नहीं करेंगे
C. सहयोगियों से परामर्श कर कदम उठावेंगे
D. विद्यालय से अवकाश ले लेंगे
97. आप विद्यालय में नये हैं कक्षा में अध्यापन के समय छात्र और बाहर सहकर्मी आपसे सन्तुष्ट प्रतीत नहीं होते हैं आप:
A. प्रधानाचार्य से निर्देश लेंगे
B. विषय की तैयारी करके पढ़ावेंगे
C. सहकर्मियों की सन्तुष्टि को प्राथमिकता देंगे
D. सोचेंगे कि शुरू में तो ऐसा होता ही है

98. बच्चों की शिक्षा में यह अधिक आवश्यक है कि :
 A. बच्चों को गलत काम करने पर दंडित किया जाये
 B. बच्चों का सर्वांगीण विकास हो
 C. बच्चों को पर्याप्त स्नेह दिया जाये
 D. बच्चों में सही आदतें डाली जायें
99. एक छात्र की दृष्टि से विद्यालय में छात्र-संघ संगठन के बारे में आपकी धारणा है :
 A. इनसे कोई लाभ नहीं है
 B. विद्यालय में दादागिरी फैलती है
 C. शिक्षकों के अन्यायों के विरुद्ध लड़ने का एक साधन है
 D. छात्रों में नेतृत्व की भावना बढ़ती है
100. छात्रों को मूल्यों की शिक्षा देना आवश्यक है, क्योंकि :
 A. इससे उनका बौद्धिक विकास बढ़ेगा
 B. माता-पिता प्रसन्न होंगे
 C. उनमें सद्गुणों के प्रति आस्था और सजगता बढ़ेगी
 D. यह भी एक शिक्षा है
101. छात्रों में श्रम के महत्त्व के विकास हेतु:
 A. शिक्षक को स्वयं श्रम करना चाहिए
 B. श्रम के महत्त्व पर भाषण देना चाहिए
 C. छात्रों को समय-समय पर श्रम करने का अवसर देना चाहिए
 D. छात्रों को श्रमजीवी लोगों के उदाहरण देने चाहिए
102. आदर्श और नैतिकता के सम्बन्ध में आपका विचार है :
 A. आदर्श और नैतिकता विद्यालय की चार दीवारी के अंदर तक ही सीमित है
 B. आदर्श और नैतिकता पुस्तकों तक ही सीमित है
 C. आदर्श और नैतिकता शिक्षकों की जवान तक ही सीमित है
 D. आदर्श और नैतिकता का अभी भी पालन हो रहा है
103. किसी छात्र में असामाजिक गुण दिखता है तो आप सोचते हैं कि ऐसा :
 A. शिक्षकों के अकुशल व्यवहार के कारण है
 B. माता-पिता के दुर्व्यवहार के कारण है
 C. असामाजिक गुणों के कारण है
 D. दूषित सामाजिक परिवेश के कारण है
104. छोटे बच्चों को शिक्षा देना जरूरी है परन्तु उनके ऊपर किस प्रकार का बोझ अपेक्षित नहीं है?
 A. लिखने का बोझ
 B. विद्यालय जाने का बोझ
 C. गृहकार्य का बोझ
 D. पढ़ने का बोझ
105. बच्चों को कहानी सुनाकर पढ़ाना चाहिए। आपका विचार है कि :
 A. कहानी विषय को रोचक बनाती है
 B. कहानी बच्चों के मस्तिष्क को केन्द्रित करती है
 C. कहानी बच्चों को सिखाने में अधिक सक्षम क्रियाकलाप है
 D. कहानी से शिक्षण कार्य नियंत्रित रहता है
106. आपके अनुसार प्रभावी संप्रेषण संभव हो सकता है :
 A. आपके उचित शब्द प्रयोग से
 B. आपके विस्तृत ज्ञान से
 C. श्रोता के स्तर को जानकर
 D. जोर से बोलकर
107. शिशु शिक्षा के संबंध में आप की राय है :
 A. स्त्रियां ही शिशुओं की अच्छी शिक्षक हो सकती हैं
 B. शिशु शिक्षा की जिम्मेदारी माँ के ऊपर होनी चाहिए
 C. शिशु शिक्षा छात्रावास में उत्तम होगी
 D. शिशु शिक्षा के लिए मनोवैज्ञानिक पद्धति उपयुक्त है
108. आप देश की दिशा बदलने में किसकी भूमिका महत्वपूर्ण मानते हैं ?
 A. उच्च विद्यालयों के शिक्षकों की
 B. शिक्षकों के रचनात्मक कार्यों की
 C. शिक्षक तो केवल छात्रों की दिशा बदल सकता है
 D. शिक्षक केवल पढ़ा सकता है
109. एक शिक्षक के रूप में आप किस भावना को बढ़ाने में मदद करेंगे?
 A. भेदभाव की भावना को
 B. जाति-धर्म के नाम पर कोई भेदभाव नहीं हो
 C. एक-दूसरे की मदद करने की भावना हो
 D. ईर्ष्या की भावना को
110. हमारी शिक्षा-प्रणाली तथा उसके गिरते स्तर में सुधार न होने का कारण है :
 A. शिक्षा के प्रति सरकारी तन्त्र की उदासीनता
 B. योग्य अध्यापकों का चयन न होना
 C. जवाबदेही की भावना का अभाव
 D. उपरोक्त सभी

111. विद्यालय के वार्षिक कार्यक्रमों में आपने देखा कि किसी एक अध्यापक को प्रधानाचार्य की ओर से कोई दायित्व नहीं दिया गया तो आप :
- इस मामले को अध्यापक संघ में उठायेंगे
 - प्रधानाचार्य से जाकर बात करेंगे कि ऐसा क्यों है
 - स्वयं भी दायित्व निभाने से इनकार कर देंगे
 - इस पर कोई ध्यान नहीं देंगे
112. तीन या चार वर्ष के बालक के लिए उचित दण्ड हो सकता है :
- उसे डण्डे से भयभीत करना
 - उसे कक्षा में खड़ा कर देना
 - उसे उसके पिता की उपेक्षा का भय दिलाना
 - उसे उसकी माता की उपेक्षा का भय दिलाना
113. आपकी नजर में कौन सबसे अच्छा अध्यापक है ?
- जो श्यामपट्ट का अच्छा प्रयोग करता हो
 - जो सुस्पष्ट बोलता है
 - जो विद्यार्थियों को कक्षा में शोर नहीं मचाने देता
 - जो विषय वस्तु के मुश्किल पक्षों को भी आसान करके समझाता हो
114. शिक्षक छात्र के लिए :
- पिता की स्थिति में होता है
 - माता की स्थिति में होता है
 - मित्र व हितैषी की स्थिति में होता है
 - उपरोक्त सभी
115. शिक्षक का वह गुण जो उसे अन्य व्यवसायियों से अलग करता है वह है उसकी :
- कर्मठता
 - अध्ययनशीलता
 - भाषण देने में निपुणता
 - उपरोक्त तीनों
116. शिक्षक को शिक्षा के क्षेत्र में पाई जाने वाली समस्याओं का जानना अति आवश्यक है क्योंकि :
- वह इनके समाधान के लिए अपनी राय दे सकता है
 - इससे अध्यापक की संवेदनशीलता बढ़ती है और वह अधिक निष्ठा से काम कर सकता है
 - वह प्रधानाचार्य को इसकी जानकारी देने के लिए उत्तरदायी है
 - उसे ही समाज को बदलना है
117. एक शिक्षक को ज्ञान के अलावा अपने विद्यार्थियों को और क्या सिखाना चाहिए?
- समय का सदुपयोग
 - लक्ष्य प्राप्ति के लिए अथक प्रयास
 - विपरीत परिस्थितियों में भी संयम व संतुलन न खोना
 - उपरोक्त सभी
118. बच्चों के पढ़ाई के प्रति गम्भीर न होने का कारण है :
- जीवन के स्पष्ट लक्ष्य का अभाव
 - शिक्षा के द्वारा उन्हें पुष्ट-पोषण न मिलना
 - अशिक्षित पारिवारिक परिवेश
 - (A) तथा (B) दोनों
119. शिक्षा के स्वरूप के सम्बन्ध में आपका क्या विचार है?
- शिक्षा सभी को मिलनी चाहिए
 - शिक्षा ऐसी हो जो व्यक्ति को आगे चलकर स्वावलम्बी बनाये
 - शिक्षा ऐसी हो जो देश के सभी नागरिकों को एक सूत्र में बांध सके
 - उपरोक्त सभी
120. आप अपने बच्चे का प्रवेश ऐसी संस्था में कराने का प्रयत्न करेंगी जिसमें :
- कठोर अनुशासन हो
 - समृद्ध व्यक्तियों के बच्चे पढ़ते हों
 - नकल करके पास होने की सुविधा हो
 - छात्र के चतुर्मुखी विकास पर ध्यान दिया जाता हो
121. किस विद्वान ने सीखने (पाठ योजना) के पांच चरण (Five steps in learning) बताए थे?
- फ्रोबेल
 - कमीनियस
 - प्लेटो
 - हर्बर्ट
122. पाठशाला जिस समुदाय के बच्चों के लिए होती है उसकी आवश्यकता के अनुरूप ही पाठशाला की:
- पाठ्यचर्या (curriculum) होनी चाहिए
 - इमारत होनी चाहिए
 - शिक्षण विधि होनी चाहिए
 - शिक्षा का स्तर होना चाहिए
123. पठन-पाठन विधि के निम्नलिखित चरणों में से कितने चरण पर अध्यापक को सबसे अधिक समय देना चाहिए?

- A. तैयारी B. प्रस्तुतीकरण
C. तुलना D. सामान्यीकरण
124. किसी छात्र की उपलब्धि का मूल्यांकन किस आधार पर किया जाना चाहिए?
- A. कक्षा के सबसे तेज (मेधावी) छात्र के साथ तुलना करके
B. कक्षा के सामान्य छात्र से की जाने वाली अपेक्षा के साथ तुलना करके
C. उस छात्र की इससे पहले क्या उपलब्धि थी—उसके साथ तुलना करके
D. उपरोक्त सभी के साथ तुलना करके
125. मार्गदर्शन (guidance) :
- A. स्वयं को बेहतर तरीके से समझने में सहायता करता है
B. निर्णय करने में सहायता करता है
C. (क) और (ख) दोनों
D. उपरोक्त में से कोई भी नहीं
126. शिक्षा की प्रोजेक्ट विधि का आधार है:
- A. कक्षा की व्यवस्था ठीक रखने का सिद्धांत
B. विद्यार्थियों की प्रतिभा का मूल्यांकन का सिद्धांत
C. करके सीखने का सिद्धांत
D. विश्लेषण क्षमता के लिए विकास का सिद्धांत
127. आप अपनी कक्षा के छोटे बच्चों को बाजार में खरीदारी करने और नकद भुगतान करने का व्यावहारिक अभ्यास कराने की दृष्टि से छोटा-बाजार लगाने का आयोजन करते हैं। आपके स्कूल के प्रधानाध्यापक आपको इस आयोजन की अनुमति नहीं देते। ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे?
- A. प्रधानाध्यापक की अनुमति न मिलने पर भी आप आयोजन करेंगे। क्योंकि यह आयोजन बच्चों को एक नया अनुभव देने के लिए है
B. आप बच्चों को प्रधानाध्यापक के पास जाने और उनसे अनुमति मांगने के लिए उकसाएंगे
C. आप स्वयं प्रधानाध्यापक से मिलकर उन्हें इस आयोजन के महत्व के बारे में समझाकर उनकी अनुमति प्राप्त करने की कोशिश करेंगे
D. आप स्कूल के अन्य अध्यापकों को साथ लेकर शिक्षा विभाग के अफसरों से मिलेंगे और उनको बताएंगे कि प्रधानाध्यापक किस प्रकार उनके मार्ग में दिक्कतें पैदा करता है

128. कौशल के विकास (Development of skills) के सम्बन्ध में आपकी क्या राय है?
- A. समान बौद्धिक आयु के बच्चे समान गति से सीखते हैं
B. हो सकता है कि समान बौद्धिक आयु के बच्चे समान गति से न सीख सकें
C. समान गति से सीखने वाले बच्चों की बौद्धिक आयु समान होती है
D. उपरोक्त तीनों
129. यदि स्कूल में पूरे समय तक बच्चों को शिक्षा कार्यक्रमों में पूरी तरह व्यस्त रखा जाए, तो आपके ख्याल से कौन-सी समस्या पैदा नहीं होगी?
- A. गृह-कार्य देने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी
B. छात्रों को स्कूल के बाद ट्यूशन पढ़ने की जरूरत नहीं होगी
C. अनुशासनहीनता नहीं पैदा होगी
D. छात्रों में पढ़ने के प्रति रुचि में कमी नहीं आएगी
130. शिक्षा के क्षेत्र में फ्राबेल का सबसे महत्वपूर्ण योगदान था:
- A. पब्लिक स्कूल B. किंडरगार्टन
C. विकलांगों की शिक्षा D. शिक्षा की प्रोजेक्ट विधि
131. छात्रों की पढ़ाई के सम्बन्ध में मासिक रिपोर्ट अभिभावकों को भेजने से क्या लाभ होता है?
- A. कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि अधिकांश अभिभावक उन्हें देखते ही नहीं
B. लाभ के बजाय हानि की आशंका होती है क्योंकि कुछ अभिभावक रिपोर्ट देखकर शिक्षक से लड़ने के लिए स्कूल आ सकते हैं
C. अध्यापक और अभिभावक के बीच छात्र की प्रगति के सम्बन्ध में संवाद बना रहता है
D. छात्र के प्रति शिक्षक का उत्तरदायित्व बढ़ जाता है
132. बुद्धि-लब्धि परीक्षण (I.Q. Testing) आंदोलन का अग्रदूत कौन था?
- A. अल्फ्रेड बिनेट B. राबर्ट हटचिन्स
C. मारिया मान्टेसरी D. एडलर
133. प्रश्न पूछने की कौन-सी विधि को आप उचित समझते हैं?
- A. शिक्षक को प्रश्न कम-से-कम दो बार दोहरा देना चाहिए ताकि कोई छात्र यह न कहे कि उसे प्रश्न सुनाई नहीं पड़ा

- B. प्रश्न पूछने के बाद छात्र को सोचने का मौका दीजिए, उसके बाद छात्र को उत्तर देने को कहिए
- C. बेहतर है कि दो सम्बन्धित प्रश्नों को एक में मिलाकर पूछा जाए
- D. उपरोक्त सभी
134. निःशुल्क और अनिवार्य प्राइमरी शिक्षा लागू होने के फलस्वरूप:
- A. बालकों में साक्षरता बढ़ी है
- B. देश में साक्षरता बढ़ी है
- C. ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता बढ़ी है
- D. उपरोक्त तीनों
135. भाषा सीखने का प्रभावी उपाय है:
- A. पाठ्य-पुस्तकें पढ़ना B. सहायक पुस्तकें पढ़ना
- C. अखबार पढ़ना D. वार्तालाप करना
136. पाठशाला में नित्य सब बच्चों का एकत्रीकरण और प्रार्थना (assembly and prayer) जरूरी है क्योंकि:
- A. इस समय सब बच्चे एक-दूसरे से मिलने व बातचीत करने का अवसर पाते हैं
- B. इस समय प्रधानाध्यापक या अन्य अध्यापक सब बच्चों को सम्बोधित कर सकते हैं और उन्हें आवश्यक सूचना/निर्देश दे सकते हैं
- C. इससे समय की पाबंदी और अनुशासनबद्ध ढंग से लाईन में खड़े होने की ट्रेनिंग मिलती है
- D. इससे पता लग जाता है कि कितने छात्र उपस्थित हैं
137. कोई छात्र लगातार काफी समय तक स्कूल से अनुपस्थित रहता है तो इस पर आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी?
- A. आप जानना चाहेंगे कि वह अनुपस्थित क्यों है
- B. वह किसी वजह से अनुपस्थित होगा
- C. कोई प्रतिक्रिया नहीं होगी क्योंकि छात्र की उपस्थिति या अनुपस्थिति से आपको कोई लगाव नहीं
- D. यह अध्यापक का काम नहीं है कि वह पता लगाये कि छात्र क्यों अनुपस्थित है
138. क्या आप इस पक्ष में हैं कि समय-समय पर स्कूलों का निरीक्षण (inspection) हो क्योंकि:
- A. ऐसे अवसरों पर स्कूल में पढ़ाई की ओर ध्यान न देकर दिखावटी वातावरण बनाने की ओर ध्यान दिया जाता है जिससे सफाई हो जाती है और सब काम पूरे (up date) हो जाते हैं
- B. निरीक्षण के भय से कुछ न कुछ अच्छे काम होते ही हैं
- C. शिक्षा विभाग के बड़े अफसरों से चर्चा करने का अवसर मिलता है
- D. उपरोक्त सभी
139. छात्र केन्द्रित शिक्षण का आशय है:
- A. प्रत्येक छात्र की आवश्यकता का ध्यान रखना
- B. छात्रों को मनमानी करने की छूट देना
- C. सभी छात्रों को निःशुल्क शिक्षा देना
- D. शिक्षण में छात्रों का पूर्ण सहयोग लेना
140. खेल के माध्यम से शिक्षा:
- A. मनोवैज्ञानिक है
- B. अमनोवैज्ञानिक है
- C. रचनात्मक प्रवृत्ति को दबाती है
- D. समूह प्रवृत्ति (herd instinct) को दबाती है
141. शिक्षा की खेल विधि का अर्थ है:
- A. खेल क्रियाओं द्वारा शिक्षा
- B. खेल क्रियाओं द्वारा मनोरंजन
- C. खेल की शिक्षा
- D. क्रियाशीलता पर जोर
142. कक्षा में आप कैसे प्रश्न करना पसंद करेंगे?
- A. जिनका उत्तर सभी छात्र दे सकें
- B. जिनका उत्तर कोई भी छात्र न दे सके
- C. जिनका उत्तर शायद ही कोई छात्र दे सके
- D. जिनका उत्तर देने के लिए छात्रों को कुछ सोचना पड़े
143. अभ्यास से:
- A. याद होता है
- B. ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण होता है
- C. गृह-कार्य नियमित करने की आदत पड़ती है
- D. ज्ञान प्राप्त होता है
144. प्रयोजनवाद ने किसे जन्म दिया?
- A. बेसिक शिक्षा
- B. प्रोजेक्ट विधि
- C. शिक्षा की खेल विधि
- D. व्यावसायिक शिक्षा
145. शिक्षा में प्रयोजनवाद की विचारधारा का प्रवर्तक कौन था:

- A. किलपैट्रिक B. जॉन डीवी
C. विलियम जेम्स D. पेस्टालॉजी
146. "बच्चों के लिए सबसे उत्तम शिक्षक वह है, जो स्वयं बालक जैसा हो।" यह कथन किसका है?
A. मेन्केन B. जॉन लाक
C. रुसो D. अरस्तु
147. अनौपचारिक शिक्षा (non formal education) किनके लिए है?
A. जो शिक्षा पूरी करने से पहले स्कूल छोड़ चुके हों
B. उन बच्चों के लिए जो कहीं कोई काम कर रहे हैं
C. उन बच्चों के लिए जो स्कूल नहीं जाते
D. उपरोक्त सभी
148. एक प्रभावी संसूचक के रूप में आप सबसे पहले निम्न कदमों में से किस पर विचार करेंगे?
A. संचार माध्यमों का चयन
B. संचार के उद्देश्य निर्दिष्ट करना
C. मूल्यांकन प्रक्रिया की योजना बनाना
D. उपरोक्त में से कोई नहीं
149. कक्षा के भौतिक वातावरण को बेहतर बनाने के लिए निम्न में से किसे महत्व दिया जाना चाहिए?
A. वायु प्रदूषण पर नियन्त्रण
B. ध्वनि प्रदूषण पर रोकथाम
C. उपरोक्त दोनों
D. उपरोक्त में से कोई नहीं
150. कक्षा के शोरगुल को नियंत्रित रखने के लिए सम्प्रेषण की कौन-सी पद्धति सबसे अच्छी है?
A. 'बात मत करो' बार-बार कहना
B. विद्यार्थियों की आवाज से भी ऊंची आवाज में बोलना
C. शान्त होकर एक-एक बच्चे पर नजर डालना
D. शोरगुल की परवाह किए बिना शिक्षण आरम्भ कर देना
151. बुद्धिलब्धि (I.Q.) की जांच क्यों आवश्यक है?
A. ताकि छात्रों को कक्षा में उनकी बुद्धि के आधार पर विभिन्न वर्गों में बांटा जा सके और उनकी विशेष क्षमताओं को ध्यान में रखकर शिक्षण किया जा सके
B. ताकि मानसिक रूप से अपंग छात्रों को सामान्य स्कूलों में प्रवेश से रोका जा सके
C. ताकि मेधावी छात्रों की पहचान करके उनके लिए विशेष शिक्षण का प्रबंध किया जा सके
D. A तथा C दोनों
152. जब छात्र अध्यापक द्वारा पूछे गए प्रश्नों का लिखित या मौखिक उत्तर देते हैं तो:
A. इससे छात्रों की कमजोरियों का पता चलता है
B. इससे अध्यापक की कमियों का पता चलता है
C. इससे उद्देश्य प्राप्ति करने में सहायता मिलती है
D. उपरोक्त सभी
153. कुछ अध्यापक कक्षा में अनावश्यक व्याख्या करते हैं और वही बात बार-बार दुहराते हैं, यह:
A. समय को नष्ट करना है
B. संप्रेषण सिद्धांतों को न मानना है
C. कमजोर छात्रों के लिए आवश्यक है
D. उपरोक्त सभी
154. स्कूल अनुशासन के सम्बन्ध में निम्न में कौन-सा कथन सही है?
A. अनुशासन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का एक अंग है
B. अनुशासन का उद्देश्य छात्रों को दण्ड देना नहीं होता बल्कि यह सुधारात्मक प्रक्रिया है
C. अनुशासन स्थापित करने के लिए छात्रों को सदैव कड़ा दंड देना चाहिए
D. उपरोक्त सभी
155. छात्रों में आपराधिक प्रवृत्ति एवं युवा अपराधिता का प्रमुख कारण है:
A. कुसमायोजन
B. आवश्यकताओं की पूर्ति न होना
C. मानसिक मन्दता
D. उपरोक्त सभी
156. कक्षा नायक का चयन करते समय अध्यापक को किस बात को ध्यान में रखना चाहिए?
A. छात्र की बौद्धिक क्षमता को
B. छात्र की अनुशासन के प्रति निष्ठा को
C. अन्य छात्रों की पसन्द को
D. छात्र की शैक्षिक उपलब्धि को

157. भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य में शिक्षण एक चुनौती से भी अधिक है:
- धर्मान्धता एवं विवेकहीनता के कारण
 - जातीय विभेद के कारण
 - साम्प्रदायिक द्वेष के कारण
 - उपरोक्त सभी
158. शिक्षक आचार संहिता है:
- शिक्षण कार्यों की सरकारी दस्तावेज
 - शिक्षकों के मानक व्यवहारों की सूचक पुस्तिका
 - शिक्षकों को नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाली पुस्तिका
 - उपरोक्त में से कोई नहीं
159. शिक्षक की योग्यताओं, प्रयासों एवं उसके व्यवहार का सही मूल्यांकन किया जा सकता है:
- प्रधानाचार्य द्वारा
 - विशेषज्ञों द्वारा
 - उसके छात्रों द्वारा
 - उसके साथियों द्वारा
160. छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न किया जा सकता है:
- विज्ञान की शिक्षा के द्वारा
 - दर्शन एवं मनोविज्ञान की शिक्षा द्वारा
 - तर्क संगत विचारों के प्रस्तुतीकरण द्वारा
 - उपरोक्त सभी
161. विद्यालय के विकास हेतु क्या कदम उठाया जाना चाहिए?
- अच्छे प्राचार्य एवं अध्यापक का चयन किया जाना चाहिए
 - भवन व वातावरण को सुन्दर बनाया जाना चाहिए
 - बच्चों व अभिभावकों को वरीयता देना
 - कर्मचारियों का विकास
162. शिक्षक के लिए बालमनोविज्ञान का ज्ञान क्यों आवश्यक है?
- इससे अध्यापक का शिक्षण मनोवैज्ञानिक नियमों एवं सिद्धांतों के अनुरूप हो जाता है
 - इससे हमें किसी बच्चे पर शोध कार्य करने में आसानी हो जाती है
 - इससे बच्चों की जन्मजात विशेषताओं को जानने का पूरा अवसर मिलता है
 - इससे अध्यापक को छात्रों को प्रेरित करने का ढंग मालूम होता है
163. सामाजिक समायोजन का कठिन काल कहा जाता है:
- बाल्यावस्था के बाद के चरण को
 - पूर्व किशोरावस्था को लड़कियों एवं लड़कों दोनों के संदर्भ में
 - किशोरावस्था को
 - उपरोक्त में से कोई नहीं
164. पूर्व प्राथमिक स्तर के बालकों एवं बालिकाओं में यौन खेलों के प्रदर्शन की व्याख्या की जा सकती है:
- एक गम्भीर समस्या जिसके दूरगामी प्रभाव हानिकारक हो सकते हैं
 - एक उत्सुकतापूर्ण सामान्य व्यवहार जो समझ आने पर अपने आप ठीक हो जाएगा
 - एक ऐसा व्यवहार जो बालक को अपने माता-पिता से जीन में मिला है
 - उपरोक्त सभी
165. स्कूल अनुशासन में निम्न में से किसे प्राथमिकता दी जाती है?
- नापसंदीदा व्यवहारों पर अंकुश
 - सामाजिक नियमों का सहर्ष परिपालन
 - प्रधानाचार्य के आदेशों का अनुपालन
 - छात्रों का योजनाबद्ध विकास
166. कक्षा-शिक्षण को प्रभावशाली/सार्थक बनाने का एक उपाय है:
- काफी मात्रा में गृह-कार्य देना
 - छुट्टी होने के बाद छात्रों को रोककर उनसे वार्तालाप करना
 - शिक्षण के तत्काल बाद छात्रों से उस सम्बन्ध में प्रश्न पूछना
 - बच्चों से कह देना कि यदि पाठ उनकी समझ में न आया हो, तो आप पाठ दोबारा पढ़ा देंगे
167. एक शिक्षक के रूप में आप अतिरिक्त उत्तरदायित्व लेना किसलिए स्वीकार करेंगे?
- नए अनुभव के लिए
 - प्रधानाध्यापक को खुश करने के लिए
 - छात्रों में लोकप्रिय बनने के लिए
 - प्रशासन को सहयोग देने के लिए
168. आप आकस्मिक परीक्षा लेना उचित समझते हैं, क्योंकि:
- इसके कारण विद्यार्थियों में भय बना रहता है

- B. इसके लिए आपको घर से कोई तैयारी करके जाने की जरूरत नहीं होती
- C. आकस्मिक परीक्षा के बहाने उस दिन पढ़ाने से मुक्ति मिल सकती है
- D. उससे छात्रों की योग्यता और उनके ज्ञान का सही अनुमान लगाया जा सकता है
169. शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए निम्नलिखित में से क्या आवश्यक है?
- A. अध्यापकों का उच्च वेतन
- B. छात्रों का सतत् मूल्यांकन
- C. पाठ्य-पुस्तकों का सतत् मूल्यांकन
- D. पाठ्यक्रम में संशोधन
170. छात्रों का विश्वास प्राप्त करने हेतु शिक्षक को उनके साथ:
- A. पिता जैसा व्यवहार करना चाहिए
- B. माता जैसा व्यवहार करना चाहिए
- C. गुरु जैसा व्यवहार करना चाहिए
- D. मित्र जैसा व्यवहार करना चाहिए
171. आजकल छात्रों में पढ़ाई की लगन नहीं देखी जाती है। इसका कारण है:
- A. उन्हें पढ़ाई के लिए समुचित प्रेरणा नहीं मिल पाती
- B. उन्हें लगता है कि पढ़ने के बाद भी उनका भविष्य उज्ज्वल नहीं होगा
- C. उन्हें पढ़ाई का वातावरण नहीं मिलता
- D. उनका ख्याल है कि परीक्षा पास करने हेतु विशेष लगन से पढ़ाई करने की आवश्यकता नहीं है
172. शिक्षा शास्त्री बेकन तथा जॉन डेवी दोनों का विचार था कि शिक्षा का उद्देश्य बालक को:
- A. आदर्श नागरिक बनाना है
- B. समाज के लिए उपयोगी बनाना है
- C. जीविकोपार्जन हेतु सक्षम बनाना है
- D. उदार बनाना है
173. शिक्षा का उद्देश्य है—बालक का सर्वोन्मुखी विकास। इस विकास में निम्नलिखित में से कौन-सा एक शामिल नहीं है?
- A. शारीरिक विकास
- B. बौद्धिक विकास
- C. नैतिक और आध्यात्मिक विकास
- D. आर्थिक विकास
174. बच्चों में अपसमायोजन (maladjustment) और कुंठा (frustration) तब उत्पन्न होता है, जब:
- A. उन्हें पाठशाला नहीं भेजा जाता
- B. उनकी मनोवैज्ञानिक या भौतिक आवश्यकताओं की उपेक्षा की जाती है
- C. उनके मां-बाप उन्हें अत्यधिक प्यार-दुलार देते हैं
- D. वे परीक्षा में पास नहीं हो पाते
175. निम्नलिखित में कौन-सा बुद्धि (intelligence) का लक्षण नहीं है?
- A. यह जन्मजात होती है
- B. यह मनुष्य को सीखने में सहायता करती है
- C. यह अर्जित की जा सकती है
- D. ज्ञान और बुद्धि अलग-अलग हैं
176. क्या आप समझते हैं कि बालकों और बालिकाओं दोनों के लिए समान (एक ही) पाठ्यचर्या हो?
- A. जी हां, दोनों में कोई अन्तर नहीं होना चाहिए
- B. जी नहीं, बालिकाओं के लिए पाठ्यचर्या उनकी शारीरिक एवं भावनात्मक आवश्यकता के अनुरूप होनी चाहिए
- C. जी हां, रोजगार के योग्य बनाने की शिक्षा दोनों के लिए समान जरूरी है
- D. जी नहीं, दोनों की पाठ्यचर्या बिल्कुल अलग-अलग होनी चाहिए
177. किस किस्म के प्रश्न को आप सबसे अधिक प्रबोधक मानते हैं?
- A. जो बच्चों का ध्यान आकृष्ट करे
- B. जो सीधा सटीक हो
- C. जो समस्या प्रधान हो और हल ढूंढने को प्रेरित करे
- D. जो अगली परीक्षा में आने वाला हो
178. पाठ्यचर्या के निर्माण में मुख्य रूप से किस बात का ध्यान रखा जाता है?
- A. छात्रों के परिवेश का
- B. शिक्षण विधियों का
- C. शिक्षा के उद्देश्यों का
- D. पाठ्य-सामग्री का
179. बाल मनोविज्ञान की सहायता से शिक्षक किस बात का ज्ञान प्राप्त कर सकता है?
- A. छात्रों की अभिरुचि
- B. छात्रों का चेतन और अचेतन व्यवहार
- C. छात्रों की क्षमता
- D. उपरोक्त तीनों

180. बच्चों के लिए तैयार की गई पाठ्यचर्या (Curriculum):
- सार्थक होनी चाहिए
 - ऐसी होनी चाहिए, जिसमें लोचशीलता हो
 - उत्पादकता-उन्मुख होनी चाहिए
 - उपरोक्त तीनों
181. बच्चों में अपसमायोजन (maladjustment) और कुंठा (frustration) को समझने और उनका उपचार करने हेतु शिक्षक को बड़ी सहायता मिलती है:
- पाठशाला के प्रधानाध्यापक से
 - बच्चों के अभिभावकों से
 - बाल मनोविज्ञान के अध्ययन से
 - बच्चों के साथ मित्रवत् व्यवहार करने से
182. 'छात्रों की सहायता से पाठ का विस्तार' का क्या अर्थ है?
- पाठ को पढ़ाने में छात्रों की सहायता लेना
 - पाठ के बारे में छात्रों को अधिकाधिक बताना
 - पाठ के बारे में छात्रों से प्रश्न पूछना और उनके उत्तर देना
 - पाठ से सम्बन्धित छात्रों की पूर्व जानकारी में नई जानकारी जोड़कर विस्तारपूर्वक शिक्षण देना
183. जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये आवश्यक है—
- भाग्यशाली होना
 - अधिक धन होना
 - अधिकारी के परिवार में जन्म लेना
 - परिस्थितियों से सुन्दर समायोजन
184. शिक्षकों द्वारा शैक्षिक-क्रियात्मक अनुसंधान करने के विषय में आपका मत है कि—
- पठन-पाठन कार्य बाधित होता है
 - अध्यापक पढ़ाने के लिये है न कि अनुसंधान के लिये
 - शैक्षिक विकास में इसकी कोई उपयोगिता नहीं है
 - यह अध्यापन कार्य को परिष्कृत करने में सहायक होता है
185. आपके कक्षा शिक्षण में एक छात्र आपसे प्रश्न पूछता है, जिसका उत्तर देने में आप अपने को असमर्थ पाते हैं, ऐसी स्थिति में आप—
- उस छात्र पर ध्यान नहीं देंगे
 - प्रश्न ही गलत है कहकर छात्र को संतुष्ट करेंगे
 - छात्र को डांटकर बैठा देंगे
 - दूसरे दिन सही उत्तर बताने का वायदा करेंगे
186. कुछ छात्र आपसे रिक्त वादन (घण्टा) में किसी पाठ को पढ़ना चाहते हैं, ऐसी दशा में आप—
- कक्षा में पढ़ाने को कह देंगे
 - कह देंगे कि थके हैं, अतः पढ़ा नहीं सकते
 - घर आकर पढ़ने को कहेंगे
 - यथा सामर्थ्य वहीं पढ़ा देंगे
187. जो अध्यापक अपने कर्तव्य की उपेक्षा करके अपने अधिकारियों को प्रसन्न करने में लगे रहते हैं, वे प्रायः लाभान्वित होते हैं और अपने साथियों से आगे बढ़ जाते हैं ऐसे परिवेश में आप—
- अपने अन्य साथियों का अनुसरण करेंगे
 - अपने साथियों से ईर्ष्या करेंगे
 - कुंठित होकर अपने कर्तव्य के प्रति उदासीन हो जायेंगे
 - हानि लाभ की चिन्ता किए बिना अपने कर्तव्य का पालन करते रहेंगे
188. आप विद्यालय के पुस्तकालय में मनोरंजक पत्रिका पढ़ रहे हैं, कुछ समय बाद आपको कक्षा-शिक्षण भी करना है, ऐसी स्थिति में आप उस समय—
- कक्षा में नहीं जायेंगे
 - पत्रिका पढ़ लेने के बाद में जायेंगे
 - छात्रों को स्वयं पढ़ने के लिये कह देंगे
 - कक्षा लेने के बाद पत्रिका पढ़ेंगे
189. आपकी कक्षा में छात्रों के बैठने के लिये पर्याप्त काष्ठोपकरण नहीं है, कक्षाध्यापक के रूप में आप—
- प्राचार्य से प्रबन्ध करने को कहेंगे
 - शेष छात्रों को घर जाने देंगे
 - अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से उतने में ही समायोजित करा देंगे
 - अभिभावकों को स्थिति से अवगत करायेंगे
190. पत्राचार द्वारा शिक्षा के बारे में आपका विचार है—
- शिक्षा प्रसार का अच्छा प्रयास है
 - परीक्षा देने वालों के लिए आर्थिक लाभ का साधन है
 - इसमें छात्रों को प्रतिदिन विद्यालय नहीं जाना पड़ता
 - इसमें घर बैठे पाठ्य-सामग्री प्राप्त हो जाती है

191. कक्षा में छात्रों को अनुशासित करने का सबसे प्रभावी उपाय है—
 A. वांछित दण्ड B. भरपूर मनोरंजन
 C. कुशल नियन्त्रण D. कुशल अध्यापन
192. कक्षा में आने पर अध्यापक को सर्वप्रथम—
 A. पिछला गृह कार्य देखना चाहिए
 B. छात्रों से उसकी दिनचर्या पूछनी चाहिए
 C. अगला पाठ पढ़ाना चाहिए
 D. छात्रों की राय लेकर कार्य करना चाहिए
193. आप अनुभव करते हैं कि आज के वैज्ञानिक और कम्प्यूटर युग में छात्रों को आध्यात्मिकता के बारे में अवगत कराना—
 A. पुराना विचार है B. आवश्यक है
 C. अनावश्यक है D. असम्भव है
194. आप विद्यालय में छात्रों में सहयोग की भावना विकसित करने के लिये क्या करेंगे?
 A. सभी शिक्षक मिलजुल कर कार्य करेंगे
 B. इससे सम्बन्धित उदाहरण प्रस्तुत करेंगे
 C. मिलजुल कर कार्य करने के महत्त्व को बतायेंगे
 D. विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन करेंगे
195. छात्रों को यौन शिक्षा सम्बन्धी शिक्षा देने के लिए उसे पाठ्यक्रम में समावेश करने के बारे में आपका मत है कि—
 A. इससे छात्रों में गलत वातावरण का विकास होगा
 B. समाज में जागृति के लिये आवश्यक है
 C. समाज में फैली भ्रान्तियाँ दूर होंगी
 D. इससे उत्पन्न होने वाली बुराइयों से बचा जा सकता है
196. विश्वविद्यालय स्तर पर छात्रों को यौनशिक्षा देने के संदर्भ में आपका मत है कि—
 A. भारत में किसी भी स्तर पर यह उपयोगी नहीं है
 B. इससे प्रगतिशील होने का बोध होता है
 C. यौन शिक्षा से छात्र-छात्राओं में झिझक मिटती है
 D. समझ का विकास हो जाता है, इसलिए यह शिक्षा दी जा सकती है
197. छात्रों को जनसंख्या सम्बन्धी शिक्षा देने के लिये उसे पाठ्यक्रम में समावेश करने के बारे में आपका मत

है कि—

- A. यह आवश्यक है
 B. यह अनावश्यक है
 C. इसे केवल प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में रखा जाना चाहिए
 D. विश्वविद्यालय स्तर पर ही रखा जाना चाहिए
198. आपके विचार से शिक्षा में हो रहे हास को रोकने के लिये आवश्यक है—
 A. विद्यालय में पुलिस की व्यवस्था की जाये
 B. विद्यालय में खेल की समुचित व्यवस्था की जाये
 C. छात्र/छात्राओं में गृह कार्य के प्रति अभिभावकों की जागरूकता
 D. अध्यापकों द्वारा नियमित कक्षा-शिक्षण
199. छात्रों को गृह कार्य समय से करने के लिए आप क्या करेंगे?
 A. गृह कार्य के महत्त्व को बतायेंगे
 B. छात्र को उसकी योग्यतानुसार गृह कार्य देंगे
 C. यथासंभव छात्रों की सहायता करेंगे
 D. उनको कार्य करने की प्रेरणा देंगे
200. कक्षा में पढ़ाते समय यदि कोई छात्र अनचाहा व्यवहार करे, तो आप उसे—
 A. कक्षा छोड़कर बाहर जाने को कहेंगे
 B. समझायेंगे
 C. शारीरिक दण्ड देंगे
 D. प्रधानाचार्य के पास ले जायेंगे
201. मैं अवकाश के क्षणों का उपयोग करना पसन्द करता हूँ—
 A. टी.वी. देखने में
 B. सैर-सपाटा करने में
 C. पुस्तकों के अध्ययन में
 D. मनोरंजन के अन्य साधनों में
202. आप स्वयं तम्बाकू का सेवन करते हुए छात्रों को उसकी बुराइयाँ बता रहे हैं एक छात्र आपसे प्रश्न करता है कि सर आप भी तो इसका सेवन करते हैं, तो आप—
 A. छात्र को डाँटकर बैठा देंगे
 B. छात्र को अनसुना कर देंगे
 C. इस विषय पर भविष्य में भाषण नहीं देंगे
 D. स्वयं तम्बाकू का सेवन छोड़ देंगे

203. मुझे ऐसी पुस्तकें अच्छी लगती हैं, जिनमें—
 A. मनोरंजन की सामग्री हो
 B. घरेलू नुस्खे लिखे हों
 C. ज्ञानवर्धक मनोरंजक सामग्री हो
 D. किस्से-कहानियाँ हों
204. विद्यालय की खेल टीम को आपकी सलाह होगी—
 A. अपने कैप्टन की बात माने
 B. खेल को टीम भावना से खेले
 C. खेलते समय अपने ऊपर नियन्त्रण रखे
 D. उपरोक्त सभी सुझाव
205. छात्रों में बड़ों के प्रति आदर की भावना के विकास के लिए—
 A. शिक्षक को स्वयं अपने से बड़ों के प्रति आदर प्रदर्शित करना चाहिए
 B. कक्षा में उपयुक्त उदाहरण देना चाहिए
 C. आदर भाव के महत्व को बताना चाहिए
 D. अभिभावकों को वह जिम्मेदारी स्वीकार करनी चाहिए
206. आप बहुत असमन्जस में पड़ जाते हैं जब आपसे कहा जाता है कि—
 A. मंच पर खड़े होकर कुछ बोलें
 B. अपरिचितों के साथ बैठें
 C. जैसा दूसरे कर रहे हैं वैसा ही करें
 D. सुनें और तर्क करें
207. छात्रों को प्रभावित करने का सरल उपाय है—
 A. उनको भयभीत करके
 B. अपनी विद्वता का प्रदर्शन करके
 C. अपने आचरण को आदर्श रखकर
 D. प्रधानाचार्य का सहयोग लेकर
208. 'एक अध्यापक के रूप में शिक्षक अभिभावक एसोसिएशन' में आप—
 A. सक्रिय भाग लेंगे
 B. प्रधानाचार्य का पक्ष प्रस्तुत करेंगे
 C. स्कूल की गलत नीतियों का भण्डाफोड़ करेंगे
 D. अभिभावकों को सावधान रहने के लिए कहेंगे
209. एक सफल अध्यापक के लिए आवश्यक है—
 A. वह देखने में सुन्दर हो
 B. मीठी भाषा बोलता हो
 C. छात्रों की सभी बातें मानता हो
 D. छात्रों को भली प्रकार विषय ज्ञान देता हो
210. अध्यापक को अपनी जानकारी नवीनतम बनाने के लिए—
 A. दैनिक समाचार-पत्रों को नियमित पढ़ना चाहिए
 B. विषय से सम्बन्धित नवीन साहित्य का अध्ययन करना चाहिए
 C. शैक्षिक गोष्ठियों में भाग लेना चाहिए
 D. उपरोक्त सभी कार्य करने चाहिए
211. किसी छात्र को पीट देने के बाद पता चलता है कि वह निर्दोष था, तो ऐसे में आप—
 A. कोई चिंता नहीं करेंगे
 B. पश्चाताप करेंगे
 C. छात्र से क्षमा याचना करेंगे
 D. छात्र से एकान्त में अपनी भूल प्रकट करेंगे
212. एक शिक्षक की पसन्द का वह छात्र होता है जो—
 A. उच्च परिवार का हो
 B. अधिक स्वस्थ हो
 C. अधिक आज्ञापालक हो
 D. अधिक क्रियाशील हो
213. एक प्रखर बुद्धि बालक यदि कक्षा में अनुशासनहीन हो रहा हो, तो—
 A. उसकी परवाह नहीं की जानी चाहिए
 B. उसे कठोर दण्ड दिया जाना चाहिए
 C. उसके अभिभावक से शिकायत की जानी चाहिए
 D. उसकी समस्या को समझकर प्रयास किया जाना चाहिए
214. एक छात्र कक्षा में लगातार दो वर्षों से अनुत्तीर्ण हो रहा है कक्षाध्यापक के रूप में आप—
 A. उसे डांट-फटकार कर सुधारने का प्रयास करेंगे
 B. उसे किसी व्यापार को अपनाने की सलाह देंगे
 C. उसकी असफलता के कारणों का पता लगायेंगे
 D. उसे आगे पढ़ने के लिये मनाकर देंगे
215. विद्यालय में बढ़ती अनुशासनहीनता को समाप्त किया जा सकता है—
 A. नियमों का कड़ाई से पालन कराकर
 B. अनुशासनहीन छात्रों को निष्कासित करके
 C. अनुशासन के महत्व पर प्रार्थना स्थल पर नित्य भाषण देकर
 D. शिक्षकों द्वारा अनुशासन के प्रति उदाहरण प्रस्तुत करके

216. यदि पढ़ाया गया कोई अध्याय कक्षा की छात्राओं की समझ में न आया हो, तो अध्यापिका को चाहिए कि वह—
 A. उसे पुनः पढ़ाये
 B. दुबारा पढ़ाने में समय बर्बाद न करे
 C. छात्राओं से कहे कि कुंजी से देख लें
 D. ऐसा भय दिखा दें कि छात्राएँ दुबारा प्रश्न ही न पूछें
217. किसी अनुत्तीर्ण छात्र को उत्तीर्ण करने के लिये दबाव डाला जाये तो आप—
 A. परिस्थितिवश छात्र को उत्तीर्ण कर देंगे
 B. छात्र को किसी दशा में उत्तीर्ण नहीं करेंगे
 C. सहयोगियों से परामर्श कर कदम उठावेंगे
 D. विद्यालय से अवकाश ले लेंगे
218. शुभ या अशुभ अवसरों पर दूसरों के घर जाकर आप—
 A. खामोश रहेंगी
 B. अपनी बात कहेंगी
 C. दूसरों की बात सुनेंगी
 D. समय के अनुसार कुछ कहेंगी
219. आपके विद्यालय में वार्षिकोत्सव हो रहा है, उस समय आप—
 A. विद्यालय आकर उत्सव देखेंगी
 B. घर पर रुककर कार्य करेंगी
 C. वार्षिकोत्सव में भाग लेंगी
 D. धन और समय की बर्बादी मानकर आलोचना करेंगी
220. छोटे बालकों के लिये 'मध्याह्न भोजन योजना' के बारे में आपकी राय है—
 A. यह एक अच्छी योजना है
 B. लोगों के खाने-कमाने का धंधा है
 C. छात्रों के बजाय इसका लाभ दूसरों को मिलता है
 D. इसे तुरन्त बन्द कर देना चाहिए
221. विद्यालय में दण्ड दिये जाने के बारे में आपके विचार हैं—
 A. कभी भी शारीरिक दण्ड नहीं दिया जाना चाहिए
 B. आर्थिक दण्ड दिया जाना चाहिए
 C. बिना दण्ड के कोई व्यवस्था नहीं चल सकती है
 D. अपरिहार्य होने पर ही कोई दण्ड दिया जाना चाहिए
222. यदि कोई आपकी नेक सलाह नहीं मानता है, तो आप—
 A. उससे नाराज होंगे
 B. डांट कर भगा देंगे
 C. एक बार पुनः समझाने का प्रयास करेंगे
 D. शान्त हो जायेंगे
223. यदि आपको अधिकार मिल जाये तो सर्वप्रथम आप करना चाहेंगे—
 A. अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा
 B. सबके लिये धन की व्यवस्था
 C. सामाजिक वानिकी योजना
 D. गाँव-गाँव में कुटीर उद्योग लगवाना
224. शिक्षक के कार्यों का सही मूल्यांकन होता है—
 A. छात्रों द्वारा B. अभिभावकों द्वारा
 C. अधिकारियों द्वारा D. प्रधानाचार्य द्वारा
225. एक शिक्षिका के रूप में उसी का चयन होना चाहिए जिसमें—
 A. शिक्षिका बनने की शैक्षिक योग्यता हो
 B. शिक्षिका बनने की रुचि हो
 C. शिक्षण की अभिरुचि हो
 D. बच्चों को नियन्त्रण करने की योग्यता हो
226. बच्चों में अच्छा संस्कार डालने के लिए उन्हें—
 A. कान्वेन्ट स्कूल में पढ़ाना चाहिए
 B. यदा-कदा दण्ड भी देना चाहिए
 C. स्नेहमय व्यवहार देना चाहिए
 D. अच्छा वातावरण प्रदान करना चाहिए
227. विद्यालय में शारीरिक दण्ड के सम्बन्ध में मेरा मत है कि इसे—
 A. कभी नहीं दिया जाना चाहिए
 B. कक्षा में दिया जाना चाहिए
 C. प्रार्थना-स्थल पर दिया जाना चाहिए
 D. अपरिहार्य स्थितियों में ही दिया जाना चाहिए
228. दूरदर्शन के वे कार्यक्रम मुझे अच्छे लगते हैं, जिनमें होता है—
 A. हास्य प्रोग्राम
 B. भक्ति सीरियल
 C. रुचिकर और उपयोगी ज्ञान
 D. उपरोक्त में से कोई नहीं

229. यदि मुझे किसी परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करना हो, तो मैं—
 A. सभी छात्रों को उत्तीर्ण कर दूंगा
 B. उदारतापूर्वक अंक दूंगा
 C. अंक देने में कड़ा रुख अपनाऊंगा
 D. उत्तर के अनुरूप अंक दूंगा
230. मेरी राय में आजकल के हालातों को देखते हुए वही व्यक्ति सफल हो सकता है—
 A. जिसकी ऊँची पहुँच हो
 B. जिसके पास असीमित धन हो
 C. जिसे अपने विवेक पर पूरा भरोसा हो
 D. जिसके सिद्धान्त लचीले हों
231. आपके विचार में शिक्षा का प्रयोजन है—
 A. छात्र की मानसिक योग्यता का विकास
 B. छात्र को साक्षर बनाना
 C. उसका सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करना
 D. उसे किसी व्यवसाय योग्य बनाना
232. आज की इस तेज गति से बदलते हुए समाज में जहाँ चारों तरफ मशीनों और औद्योगीकरण का ही महत्व है, छात्रों को मानव मूल्यों और आध्यात्मिकता के बारे में अवगत कराना—
 A. असम्भव है
 B. आवश्यक है
 C. अनावश्यक है
 D. रूढ़िवादिता का द्योतक है
233. आप जिस क्षेत्र में पढ़ाते हैं वहाँ अन्धविश्वास की कई मान्यतायें प्रचलित हैं। वहाँ के निवासी उन्हें सहज तोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं, तो आप—
 A. जितना हो सकेगा करेंगे
 B. अपने लिए कोई सिरदर्द नहीं लेंगे
 C. क्षेत्र के साक्षर लोगों की सहायता से उन्हें समझाने का प्रयास करेंगे
 D. समाज में आगे आकर उन मान्यताओं को तोड़ेंगे
234. 'नारी स्वतन्त्रता' का अर्थ है—
 A. नारी संगठनों को महत्व देना
 B. स्त्रियों को घर के दायित्व से मुक्त करना
 C. स्त्रियों को अधिक सरकारी नौकरियों में स्थान देना
 D. स्त्रियों को अपनी योग्यता और रुचि के अनुसार कार्य करने की आजादी
235. उस परीक्षा भवन में जहाँ परीक्षार्थी आपका रिश्तेदार है, और आप वहाँ निरीक्षण कार्य कर रहे हैं, तो ऐसी स्थिति में आप—
 A. अवसर का लाभ उठाने के लिए उस परीक्षार्थी की मदद करेंगे
 B. भवन में लचीला रुख अपनायेंगे ताकि अन्य छात्र उसकी मदद कर दें
 C. उसके ऊपर कड़ी निगरानी रखेंगे
 D. नियमित रूप से अपना निरीक्षण कार्य करेंगे
236. विद्यालय में वाद-विवाद प्रतियोगिता के परिणामों को लेकर हंगामा हो जाता है, तो आप—
 A. भविष्य में चाहेंगे कि विद्यालय में वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित न की जाये
 B. निर्णायकों के चयन में सभी विद्यालयों/संस्थाओं को प्रतिनिधित्व देंगे
 C. आलोचना की परवाह न करते हुए अपना कार्य करेंगे
 D. सोचेंगे कि जो हारता है वह ऐसा ही करता है
237. कक्षा-शिक्षण करते समय आपके छात्र प्रायः उतना ध्यान नहीं देते जितना अन्य शिक्षकों की कक्षा में देते हैं, ऐसी स्थिति में आप—
 A. छात्रों से बार-बार ध्यान देने को कहेंगे
 B. विषय को अधिक रोचक बनायेंगे
 C. छात्रों पर क्रोध करेंगे
 D. जैसा पढ़ा रहे हैं, वैसा ही पढ़ाते रहेंगे
238. अध्यापन के अतिरिक्त विद्यालय के जिन कार्यक्रमों में मैं अपने को शामिल करना चाहती हूँ, वे हैं—
 A. विद्यालय की सफेदी एवं बागवानी
 B. सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं पुस्तकालय
 C. सांस्कृतिक एवं लोक कल्याण कार्यक्रम
 D. प्रशासनिक व्यवस्था एवं साक्षरता अभियान
239. आपके कक्षा-शिक्षण के समय में यदि एक छात्र प्रायः बैठकर गणित के पदों को हल करता है, तो आप उसे—
 A. कक्षा से बाहर कर देंगे
 B. कक्षा में लज्जित करेंगे
 C. इसका कारण ज्ञात करेंगे
 D. प्रधानाचार्य के सम्मुख ले जायेंगे

240. शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है—
 A. बच्चे की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास
 B. बच्चे के विषय ज्ञान में वृद्धि
 C. बच्चे को शिष्टाचार सिखाना
 D. बच्चे का चारित्रिक विकास करना
241. शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है—
 A. छात्रों को ज्ञान देना
 B. बालकों को नौकरी के योग्य बनाना
 C. बालकों को अनुशासित बनाना
 D. बालकों का सर्वांगीण विकास करना
242. विद्यालय विलम्ब से पहुँचने पर प्रधानाचार्य द्वारा उपस्थिति पंजिका पर विलम्ब चिन्ह लगा देने पर आप—
 A. अपनी गलती स्वीकार कर लेंगे और दूसरे दिन से समय पर आने का प्रयास करेंगे
 B. प्रधानाचार्य को देर से आने का कारण बतायेंगे
 C. विलम्ब से आने वाले अन्य अध्यापकों का उदाहरण प्रस्तुत करेंगे
 D. उसे गम्भीरता से नहीं लेंगे
243. यदि आपको प्रधानाचार्या का पद मिल जाये, तो आपका लक्ष्य होगा—
 A. अपनी विरोधी अध्यापिकाओं को निकाल देना
 B. देर से आने वाली अध्यापिकाओं का वेतन काट लेना
 C. उच्च अधिकारियों से मेलजोल बढ़ाना
 D. पूरी शक्ति के साथ विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था का संचालन करना
244. श्यामपट्ट पर आपकी अपठनीय लिखावट को यदि कोई छात्र बार-बार संकेत करता है, तो ऐसी दशा में आप—
 A. छात्र को डाँटकर चुप कर देंगे
 B. उसे स्वीकार कर लेंगे
 C. दूसरे दिन सुधार के साथ तैयारी करके कक्षा में जायेंगे
 D. छात्र को कक्षा के बाद मिलने को कहेंगे
245. विषय-वस्तु से सम्बन्धित पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देना आपको रुचिकर लगता है—
 A. समझा कर देने में
 B. उदाहरणों की सहायता से समझाने में
 C. अन्य विषयों से उलझाकर बताने में
 D. उपर्युक्त सभी ढंगों में
246. आपके लेख को आपका मित्र अपने नाम से प्रकाशित करा देता है, तो आप—
 A. उसके विरुद्ध लिखापट्टी करेंगे
 B. सबके सामने उसकी आलोचना करेंगे
 C. भविष्य में किसी के साथ ऐसा न करने की चेतावनी देंगे
 D. शान्ति से उससे बात करके उसे उसके व्यवहार का ज्ञान करायेंगे
247. आपके शहर में शिक्षा से सम्बन्धित सेमीनार हो रही है तो आप क्या करेंगे?
 A. बिना प्राचार्य की अनुमति लेकर भाग लूंगा
 B. प्राचार्य की अनुमति लूंगा
 C. विद्यालय से अवकाश लूंगा
 D. उसके प्रति कोई रुचि नहीं लूंगा
248. आपको मालूम हुआ है कि आपके प्रधानाचार्य संस्था में कुछ गलत कार्य कर रहे हैं तो आप—
 A. उन्हें समझाने का प्रयास करेंगे
 B. उस तरफ से अनदेखी करेंगे
 C. उच्चाधिकारियों से शिकायत करेंगे
 D. साथियों से परामर्श करके ही कोई निर्णय लेंगे
249. आपकी राय में शिक्षक के लिए आवश्यक है—
 A. सम्पत्ति और भौतिक सुख
 B. सुन्दर स्वास्थ्य और सुखी परिवार
 C. आत्मबल और सुरक्षा
 D. सम्मान और स्वाभिमान
250. लगातार असफल होने पर आप—
 A. उसे दुबारा करने का साहस नहीं कर पाती हैं
 B. असफलता के कारकों से बदला लेने का प्रयास करती हैं
 C. चुनौती के रूप में दुगुने उत्साह के साथ करती हैं
 D. असफलता के कारणों को भूलने का प्रयास करती हैं
251. परीक्षा समीप आने पर पाठ्यक्रम पूरा न होने की दशा में अध्यापक को चाहिए कि वह—
 A. छात्रों को कहे कि वह स्वयं पाठ्यक्रम पूरा कर लें
 B. कुछ चुने हुए प्रश्न हल करवा दें
 C. छात्रों को घर बुलाकर पाठ्यक्रम पूरा करें
 D. विद्यालय में अतिरिक्त समय देकर पाठ्यक्रम पूरा कर दें

252. आजकल समाज का कुप्रभाव विद्यालयों पर पड़ने का डर है, उसे दूर करने हेतु आपका दृष्टिकोण होगा—
 A. आशावादी B. निराशावादी
 C. कोई मतलब नहीं D. अन्य शिक्षकों की भांति
253. विद्यालय में विज्ञान की प्रयोगशालाओं में पर्याप्त उपकरण नहीं हैं ऐसे में आप छात्रों को—
 A. विज्ञान न पढ़ने की सलाह देंगे
 B. जैसा हो उसी से काम निकालेंगे
 C. प्रधानाचार्या से कहेंगे कि बिना उपकरणों के पढ़ाई संभव नहीं है
 D. छात्रों से अपनी व्यवस्था अपने आप करने को कहेंगे
254. “विज्ञान के विकसित साधनों से शिक्षा में लाभ के स्थान पर हानि अधिक हुई है” इस कथन से आप—
 A. पूर्णतः सहमत हैं
 B. अंशतः सहमत हैं
 C. असहमत हैं
 D. विज्ञान और शिक्षा का कोई मेल नहीं है
255. बच्चों में साहस की भावना विकसित करने हेतु शिक्षक को—
 A. उपदेश देना चाहिए
 B. साहस की कहानियां सुनाना चाहिए
 C. लड़ाई की ट्रेनिंग देनी चाहिए
 D. कुछ नहीं करना चाहिए
256. एक छात्र अपने पिता के गलत कर्मों के कारण कक्षा में हीन भावना से ग्रस्त है कक्षा में आप—
 A. उससे उसके पिता के समाचार पूछते रहेंगे
 B. उसे गलत कार्यों से अलग रहने की प्रेरणा देंगे
 C. सामान्य छात्रों को उससे अलग रहने के लिये कहेंगे
 D. उसे उसके हाल पर छोड़ देंगे
257. एक शिक्षक के पास बच्चों के सभी स्तर के अभिभावक आते हैं जो अपने बच्चों की प्रगति सुनकर प्रसन्न होते हैं उनकी प्रसन्नता और संतुष्टि के लिए आप—
 A. बच्चों को होशियार बतायेंगे
 B. बच्चों की तुलना होशियार व्यक्तियों से करेंगे
 C. कहेंगे कि आप बहुत भाग्यशाली हैं
 D. गुणों के साथ कमियां भी बतायेंगे
258. कक्षा में कुछ छात्र उद्दण्ड हैं जो सही छात्रों को पढ़ने में बाधा उत्पन्न करते हैं, आप सोचते हैं कि—
 A. इस परिस्थिति की अनदेखी किया जाए
 B. उद्दण्ड छात्रों से मेलजोल बढ़ाया जाए
 C. उद्दण्ड छात्रों को हर कीमत पर दबाया जाए
 D. पढ़ने वाले छात्रों को उनसे लड़ने के लिए प्रेरित किया जाये
259. छात्रों की विद्यालय में नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए—
 A. विद्यालय को एक आनन्द का स्थान बनाया जाये
 B. छात्रों को अधिक गृहकार्य दिया जाए
 C. छात्रों को अपनी रुचि के अनुसार कार्य करने की छूट दे दी जाये
 D. अभिभावकों की नियमित बैठक बुलाई जाए
260. आजकल छोटे-छोटे बच्चों पर पुस्तकों का बोझ अधिक होता है, इसके हानिकारक होने के सम्बन्ध में आपकी राय है—
 A. छात्र प्रत्येक पुस्तक का अध्ययन नहीं कर सकता है
 B. पुस्तकों के अनायास भार से बच्चों के मस्तिष्क का विकास अवरुद्ध होता है
 C. छात्र में अध्ययन के प्रति अरुचि पैदा हो जाती है
 D. छात्रों के कंधे की हड्डी पर कुप्रभाव पड़ता है
261. मुझे बहुत परेशानी होती है जब मुझसे कहा जाता है—
 A. छुट्टी के दिन पढ़ने को
 B. किसी विषय पर बोलने को
 C. नये विषय की तैयारी करने को
 D. बिना तर्क दूसरे की बात स्वीकार करने को
262. अकेले बस में यात्रा करते समय मुझे घबड़ाहट होती है—
 A. प्रायः B. कभी नहीं
 C. कभी-कभी D. अनिश्चित
263. किसी अपरिचित के साथ बात करते समय मुझे घबड़ाहट होती है—
 A. प्रायः B. कभी-कभी
 C. कभी नहीं D. स्वाभाविक है
264. घर पर किसी अपरिचित मेहमान के आने पर मैं प्रायः—
 A. उनका परिचय पूछती हूँ
 B. घर के अन्दर चली जाती हूँ
 C. घबरा जाती हूँ
 D. उसकी कोई परवाह नहीं करती हूँ

265. मैं उनको मित्र बनाना पसन्द करती हूँ जिनका शौक है—
 A. अभिनय करना
 B. रोज सिनेमा देखना
 C. गप-शप मारना
 D. पालतू जानवरों की देखभाल करना
266. पहली कक्षा में बच्चे शोर कर रहे हैं उन्हें शान्त करने के लिए—
 A. डांट देंगे
 B. मैदान में जाकर खेलने को कहेंगे
 C. कहानी सुनायेंगे
 D. कुछ नहीं करेंगे
267. मैं अवकाश के क्षणों का उपयोग करना चाहूंगी—
 A. बागवानी करना/घर की सजावट करना/पत्रिकाएं पढ़ना
 B. लेखन/चुनाव प्रचार/फिल्म देखना
 C. संगीत सीखना/सोना/गपशप करना
 D. चित्रकारी करना/खाना बनाना/अतिथि सत्कार
268. शिशुओं के लिए शिशुशाला में आवश्यक है—
 A. भाषा पढ़ाना
 B. कहानियाँ सुनाना
 C. खेल के अवसर प्रदान करना
 D. सामान्य ज्ञान देना
269. पाठ्यक्रम निर्माण में किस बात को मुख्य रूप से ध्यान में रखा जाता है?
 A. शिक्षा के उद्देश्यों को B. छात्रों को
 C. पाठ्यवस्तु को D. शिक्षण विधियों का
270. समय चक्र (Time-Table) में विषयों के वितरण का क्या आधार होना चाहिए?
 A. विद्यालय की सुविधानुसार
 B. छात्रों की रुचि के आधार पर
 C. विषयों की कठिनाई के आधार पर
 D. कोई आधार नहीं होना चाहिए
271. “तुलसी जग में दो बड़े दामोदर और दाम, दामोदर बैठे रहें दाम करे सब काम”—शिक्षा के क्षेत्र में भी यह युक्ति पूरी तरह से—
 A. सत्य है B. असत्य है
 C. आंशिक रूप से सत्य है D. कटु सत्य है
272. शिक्षक को अनुसंधान की ओर अपनी रुचि रखनी चाहिए, क्योंकि इससे—
 A. शिक्षक के ज्ञान का विकास होता है
 B. शिक्षक अपने कार्य में व्यस्त रहता है
 C. शिक्षक सदैव अध्ययनशील रहता है
 D. उपरोक्त सभी कार्य संभव होते हैं
273. आपको कक्षा आठ का समय चक्र (Time-Table) बनाने के लिये कहा जाता है प्रयोगात्मक कार्य के लिये अधिक घण्टे देने के लिए आप प्रधानाचार्य को इस पक्ष में क्या दलील देंगी?
 A. प्रयोगात्मक कक्षा में बच्चों को नया माहौल मिलता है
 B. इससे छात्रों को वह सब करके सीखने का अवसर मिलता है, जो वे कक्षा में पढ़ते हैं
 C. प्रयोगात्मक कक्षा में बच्चों को खेलने के लिये काफी समय मिल जाता है
 D. प्रयोगात्मक कक्षा में अध्यापकों पर पढ़ाने की जिम्मेदारी कम हो जाती है
274. शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु—
 A. विद्यालयों को और अधिक धन उपलब्ध कराया जाये
 B. सभी विद्यालयों को राजकीय विद्यालय बना दिया जाये
 C. प्रत्येक विद्यालय हेतु उपयुक्त भौतिक संसाधन उपलब्ध कराये जायें
 D. कक्षा-शिक्षण नियमित रूप से होने की व्यवस्था की जाये
275. शिक्षा में सुधार हेतु आपकी राय में महत्वपूर्ण है—
 A. विद्यालय में पठन-पाठन का वातावरण बनाना
 B. समाचार-पत्रों में व्यापक प्रचार करना
 C. अभिभावकों की शिक्षा में रुचि सुनिश्चित करना
 D. सरकार पर जोर डालना
276. बच्चों को गृह कार्य देने का उद्देश्य होता है—
 A. उन्हें घर पर खेलने से रोकना
 B. उन्हें अध्ययन में नियमित बनाना
 C. उनके अभिभावकों को प्रभावित करना
 D. विद्यालय के नाम को उठाना
277. आजकल छात्रों के मूल्यांकन हेतु विद्यालयों में निबन्धात्मक प्रश्नों के स्थान पर वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का प्रयोग अधिक से अधिक किया जा रहा है, क्योंकि इसमें—

- A. कम लिखना पड़ता है
B. जांचना आसान होता है
C. कागज कम खर्च होता है
D. ज्यादा पाठ्यक्रम कवर किया जा सकता है
278. हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली शिक्षित बेरोजगार बढ़ाने वाली प्रणाली है, क्योंकि—
A. शिक्षा से मात्र सैद्धान्तिक ज्ञान ही दिया जा सकता है
B. शिक्षा लार्ड मेकाले की नीतियों पर आधारित है
C. शिक्षा व्यवसायोन्मुखी नहीं है
D. उपरोक्त सभी
279. विद्यार्थियों के सीखने की कठिनाइयों को दूर किया जा सकता है—
A. अधिक सुविधायें प्रदान करके
B. अधिक अभ्यास कराकर
C. अधिक समय देकर
D. कारणों को जानकर और उसके अनुसार योजना बनाकर
280. बाल मनोविज्ञान का ज्ञान एक प्राथमिक शिक्षक के लिए आवश्यक है क्योंकि इससे—
A. बच्चों को अनुशासित करने में सहायता मिलती है
B. परीक्षाफल में सुधार होता है
C. बच्चों को प्रेरित करने में सुविधा होती है
D. बच्चों के व्यवहार को समझने में सहायता मिलती है
281. विद्यालयों में छात्रों को अनुशासित रखने के लिए आप—
A. छात्रों को अनुशासन पर अच्छी पुस्तकें पढ़ने को कहेंगे
B. अनुशासन पर लेख लिखवायेंगे
C. अनुशासित छात्रों को पुरस्कृत करेंगे
D. स्वयं अनुशासन में रहेंगे
282. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत नवोदय विद्यालयों की व्यवस्था क्यों की गई है?
A. इससे गांवों के बच्चों को अध्ययन करने का अवसर मिलेगा
B. शहर और गांव के अच्छी योग्यता वाले छात्र अध्ययन कर सकेंगे
C. शहर और गांव दोनों के बच्चे अध्ययन कर सकेंगे
D. शहरी छात्रों के लिए
283. कुछ वर्षों बाद पाठ्य-पुस्तकें बदल देनी चाहिए, क्योंकि—
A. छात्रों को नई पुस्तकें अच्छी लगती हैं
B. एक पुस्तक पढ़ाते-पढ़ाते शिक्षक ऊब जाता है
C. ज्ञान में निरन्तर वृद्धि होती है
D. सरकार/प्रकाशक को आर्थिक लाभ होता है
284. आप अध्यापन व्यवसाय अपनाना चाहते हैं क्योंकि—
A. इससे अच्छा कोई दूसरा व्यवसाय आपकी नजर में नहीं है
B. आपको शिक्षक का कार्य पसन्द है
C. आपके खानदान में लोग शिक्षक रहे हैं
D. शिक्षक रहते हुए आय के अतिरिक्त कार्य किए जा सकते हैं
285. आज की शिक्षा प्रणाली शिक्षित बेरोजगारी बढ़ाने वाली प्रणाली है, क्योंकि—
A. शिक्षा से मात्र सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त होता है
B. व्यावसायिक प्रशिक्षण शिक्षा का अंग नहीं है
C. शिक्षा का उद्देश्य स्पष्ट नहीं है
D. उपर्युक्त सभी
286. शिक्षक को शिक्षा के क्षेत्र में प्रचलित समस्याओं को जानना आवश्यक है, क्योंकि—
A. शिक्षक ही उसके समाधान के बारे में कुछ कर सकता है
B. वह अन्य शिक्षक को बता सकता है
C. इससे वे सरकार को उसके बारे में बता सकते हैं
D. इससे शिक्षक को शिक्षा के बारे में जानकारी हो सकती है
287. राष्ट्रीय पर्व जैसे 15 अगस्त और 26 जनवरी पर विद्यालय में उपस्थित होने के संबंध में आपका विचार है—
A. आदेश का अनुपालन है
B. मनोरंजन के साधन हैं
C. कोई लाभ नहीं है
D. राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को सुदृढ़ करने में प्रोत्साहन मिलता है
288. अपने देश की बढ़ती हुई जनसंख्या एवं संसाधनों के अभाव में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत शिक्षा के स्तरोन्नयन के कार्यक्रम आपके विचार में—
A. अव्यावहारिक हैं
B. साहसपूर्ण एवं प्रशंसनीय प्रयास हैं

- C. परम्परागत कार्यक्रमों का एक नया रूप है
D. अध्यापकों के कार्यभार को बढ़ाना है
289. आपके विचार से सह-शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है—
A. शिक्षा पर होने वाले व्यय को कम करना
B. एक दूसरे को समझने का सुअवसर देना
C. बालिकाओं के लिए अलग से स्कूल न खोलना
D. बालिकाओं की हीन भावनाओं पर अंकुश लगाना
290. अपने देश की बढ़ती हुई जनसंख्या एवं संसाधनों के अभाव में प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रम पर अधिक बल देना आपके विचार से—
A. मनोरंजन का साधन है
B. अव्यावहारिक है
C. साहसपूर्ण एवं प्रशंसनीय व्यवहार है
D. अध्यापकों को रोजगार के अवसर प्रदान करना है
291. छात्रों को मूल्यों की शिक्षा देना आवश्यक है, क्योंकि—
A. इससे उनका बौद्धिक विकास बढ़ेगा
B. माता-पिता प्रसन्न होंगे
C. उनमें सद्गुणों के प्रति आस्था और सजगता बढ़ेगी
D. यह भी एक शिक्षा है
292. विद्यालय में 'पर्यावरण शिक्षा' की व्यवस्था आपके विचार से—
A. छात्रों में पर्यावरण-चेतना जगाने के लिए आवश्यक है
B. छात्रों पर अतिरिक्त बोझ बढ़ाना है
C. उनके मनोरंजन का साधन है
D. अध्यापकों को कार्य देना है
293. विद्यालय में 'पर्यावरण शिक्षा' दी जा सकती है—
A. भाषण द्वारा
B. लेखों द्वारा
C. खेल-कूद द्वारा
D. स्वयं अपनाकर
294. आपके विचार से विद्यालय में नैतिक शिक्षा प्रदान करने के लिए आवश्यक है—
A. प्रतिदिन अध्यापकों द्वारा नैतिकता पर भाषण
B. नैतिक शिक्षा से सम्बन्धित साहित्य बांटना
C. समय-समय पर अभिभावकों को नैतिकता के बारे में सजग कराना
D. अध्यापक अपने आचरण को संयमित और नियमित रखे
295. अध्यापक का स्थान समाज में सम्माननीय होता है, क्योंकि—
A. अध्यापक सरलता और ज्ञान के प्रतीक होते हैं
B. बिना उनकी कृपा से कोई डाक्टर या इंजीनियर नहीं
C. वे राष्ट्र के भाग्य निर्माता होते हैं
D. वे राजनीतिज्ञों और बड़े आदमियों के गुरु होते हैं
296. समाज में व्याप्त कुरीतियों और अंधविश्वासों का कारण है—
A. धार्मिक कट्टरता
B. जातिप्रथा और वर्ग भेद
C. निर्धनता
D. जागरुकता की कमी और अशिक्षा
297. मेरी राय में प्रत्येक छात्र का प्रगति-पत्र उसके अभिभावक को अवश्य देना चाहिए, क्योंकि—
A. इससे छात्रों में डर बना रहता है
B. द्यूशन मिलने की संभावना रहती है
C. अभिभावकों को बच्चों की प्रगति का पता चलता है
D. छात्र के प्रति हमारी जिम्मेदारी समाप्त हो जाती है
298. शिक्षा में हो रहे हास को रोकने के लिए आवश्यक है—
A. शिक्षा पद्धति में सुधार की व्यवस्था
B. बालकों के गृह-कार्यों के प्रति अभिभावकों की जागरुकता
C. अध्यापकों द्वारा नियमित कक्षा-शिक्षण
D. अध्यापकों की संख्या में वृद्धि
299. अपने देश में बढ़ती हुई जनसंख्या एवं संसाधनों के अभाव में शिक्षा में गुणात्मक विकास के कार्यक्रम आपके विचार में—
A. कक्षा-शिक्षण में बाधक हैं
B. अव्यावहारिक हैं
C. साहसपूर्ण प्रयास है
D. समय की बर्बादी है
300. अध्यापक का महत्व समाज में कम होने का कारण है—
A. अध्यापक की कम आमदनी
B. अध्यापकों की राजनीति में रुचि लेना
C. अध्यापक का अपने पेशे से उदासीन होना
D. अध्यापकों का अधूरा विषय ज्ञान होना

301. आपकी राय में अच्छे माता-पिता वे हैं जो अपने बच्चों को देते हैं—
 A. आवश्यकतानुसार धन और सुविधा
 B. उनकी आवश्यकताओं की सभी वस्तुएं
 C. अच्छा भोजन और वस्त्र
 D. नियमित रूप से अपना कुछ समय और स्नेह
302. आजकल लोग जितना श्रम करते हैं, उसे अधिक पाना चाहते हैं, आपकी राय में यह—
 A. बढ़ती हुई महंगाई का प्रतिफल है
 B. लोक जीवन में मूल्यों के हास का परिचायक है
 C. श्रम के प्रति उदासीनता है
 D. आर्थिक प्रगति का द्योतक है
303. सड़क पर बच्चों को आपस में झगड़ा करते देख कर आप—
 A. समझा बुझा कर झगड़ा शान्त करेंगे
 B. डांट कर भगा देंगे
 C. लोगों से फैसला करने को कहेंगे
 D. परिस्थिति को अनदेखा करके चले जायेंगे
304. समाज के प्रति छात्रों में उत्तरदायित्व की भावना के विकास करने हेतु—
 A. समय-समय पर भाषण देने चाहिए
 B. कक्षा में ऐसे लोगों के उदाहरण देने चाहिए
 C. उत्तरदायित्व के महत्व को बताना चाहिए
 D. छात्रों को समाज में ऐसे लोगों के सम्पर्क में रखना चाहिए
305. भरसक प्रयासों के बावजूद जब सफलता न मिले तो समझना चाहिए—
 A. भाग्य में ऐसा ही लिखा था
 B. कि बाहरी मदद नहीं मिल पाई
 C. बिना असफलता के सफलता नहीं मिलती
 D. प्रयासों में कहीं कोई कमी रह गई थी
306. आपकी राय में शिक्षा एक—
 A. साक्षर बनाने का साधन है
 B. राष्ट्रीय कर्तव्य है
 C. व्यवसाय है
 D. समाज सुधार का साधन है
307. शिक्षक संगठन का निम्नलिखित में से क्या कार्य होना चाहिए—
 A. शिक्षकों की समस्याओं पर विचार करना
 B. केवल अर्थ संबंधी समस्याओं पर विचार करना
 C. शिक्षा और अन्य शिक्षकों की समस्याओं पर विचार करना
 D. अन्य संगठनों के साथ तालमेल रखना
308. आज की बदलती परिस्थिति में सपुस्तक परीक्षा प्रणाली उपयुक्त है, क्योंकि इसमें—
 A. नकल का प्रश्न नहीं उठता
 B. पढ़ना नहीं पड़ता
 C. छात्रों की मानसिक सक्रियता बढ़ती है
 D. छात्र अनुशासित रहते हैं
309. आज विद्यालयी शिक्षा की अपेक्षा कोचिंग शिक्षा अधिक प्रभावी हो रही है, आपके विचार में इसका मुख्य कारण है—
 A. शिक्षकों का कम वेतन
 B. विद्यालयों में योग्य शिक्षकों की कमी
 C. विद्यालयी शिक्षा के प्रति विश्वास की कमी
 D. विद्यालयों में समुचित पठन-पाठन का अभाव
310. प्राथमिक स्तर पर स्त्रियों के लिए शिक्षक का कार्य करना अच्छा है, क्योंकि—
 A. वे केवल छोटे बच्चों को ही पढ़ा सकती हैं
 B. वे गाना गा सकती हैं
 C. उनकी आवाज मधुर होती है
 D. वे बच्चों की देख-रेख मां की तरह कर सकती हैं
311. अधिकांश विद्यालयों में आजकल पढ़ाई, लिखाई का उचित वातावरण नहीं है, इसके लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी है—
 A. छात्रगण
 B. अध्यापकगण
 C. नेतागण
 D. उपर्युक्त सभी
312. यदि अपने छोटे भाई को पढ़ाते समय बार-बार कितने प्रश्न का हल बताने पर भी उसकी समझ में न आए तो आप—
 A. उसे दण्ड देंगे
 B. पुनः समझाने का प्रयास करेंगे
 C. पढ़ाना बन्द कर देंगे
 D. स्वयं पर खीजेंगे
313. यदि कोई अभिभावक अपने बच्चे के बारे में यह शिकायत करें कि उसे जान बूझ कर छमाही परीक्षा में कम अंक दिये गए हैं, तो आप—

- A. प्रधानाचार्य से सम्पर्क करने की राय देंगे
B. मामले की छानबीन का आश्वासन देंगे
C. सम्बन्धित विषयाध्यापक से मिलने की सलाह देंगे
D. वार्षिक परीक्षा में मदद का आश्वासन देंगे
314. आजकल लोग जितना परिश्रम करते हैं उससे अधिक वेतन चाहते हैं, मेरी राय में यह—
A. आर्थिक प्रगति का संकेत है
B. मनुष्य का स्वभाव है
C. आर्थिक दृष्टिकोण से समय की मांग है
D. सामाजिक अन्याय है
315. निम्न में से किस कार्य में आपकी अधिक रुचि है—
A. चुनाव प्रचार करना
B. छात्र संघ का चुनाव लड़ना
C. लेख और कहानियाँ लिखना
D. टीवी पर मैच देखना
316. मेरी राय में धार्मिकता का आशय है—
A. नियमित रूप से पूजा-पाठ करना
B. अपने धर्म को सबसे बड़ा मानना
C. भाग्य पर पूरी तरह से निर्भर रहना
D. सबके कल्याण के लिए कार्य करना
317. धार्मिक सहिष्णुता का अर्थ होता है—
A. सभी धर्मों का आदर करना
B. सभी धर्मों में रुचि लेना
C. सब कुछ ईश्वर पर छोड़ देना
D. दूसरों से अपना धर्म मनवाने का प्रयास करना
318. “नाच न जाने आंगन टेढ़ा”, मुहावरे का अभिप्राय है—
A. अपनी कमजोरियों को भरसक छिपाना
B. अपनी असफलताओं के लिए दूसरों को दोष देना
C. खराब व्यक्ति सदैव दूसरों को खराब कहता है
D. जिसे काम नहीं आता वह बहाने बनाता है
319. एक अच्छे विद्यालय के लिए आवश्यक है कि वह स्थित हो—
A. ग्रामीण क्षेत्र में
B. शहर के मध्य में
C. एकान्त में
D. कहीं भी
320. प्रदूषण की समस्या प्रभावी ढंग से हल करने के लिए—
A. लोगों को जागरूक बनाना चाहिए
B. इस क्षेत्र में अधिक धन खर्च करना चाहिए
C. कड़े कानून बनाने चाहिए
D. विदेशी मदद लेनी चाहिए
321. “प्रकृति सर्वोत्तम शिक्षक है” इस कथन का अभिप्राय है कि—
A. अध्यापक को प्रकृति से शिक्षा लेनी चाहिए
B. प्रकृति के मध्य अध्यापक स्वाभाविक रूप से पढ़ा सकता है
C. प्रकृति के नियमों के अनुसार छात्र सहज ढंग से सीखते और अनुभव करते हैं
D. बच्चों को प्राकृतिक वातावरण में छोड़ दिया जाना चाहिए
322. आपकी राय में सहयोगियों से अच्छे सम्बन्ध रखने के लिए आवश्यक है कि—
A. उनकी खुशामद करते रहना चाहिए
B. उनकी गलतियों पर ध्यान न दिया जाये
C. उनके सुख-दुःख में हाथ बंटाया जाये
D. उनके सामने उनकी प्रशंसा की जाये
323. आप जानते हैं कि सही बात कहने से परेशानियाँ आती हैं, तो—
A. भी सही बात करते रहना चाहिए
B. अवसर देखकर ही कोई बात कहनी चाहिए
C. जिसको जैसा प्रिय लगे वही कहना चाहिए
D. किसी को कोई राय नहीं देनी चाहिए
324. भारतीय प्रजातंत्र के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा शिक्षा का कम महत्वपूर्ण उद्देश्य है?
A. कक्षा में प्रजातंत्र को पढ़ाना
B. विद्यार्थियों में नेतृत्व के गुणों को विकसित करना
C. विद्यार्थियों में प्रजातांत्रिक नागरिकता को विकसित करना
D. विद्यार्थियों में व्यावसायिक क्षमता को विकसित करना
325. एकल शिक्षक वाले विद्यालयों की समस्या—
A. उनको समाप्त करने से होगी
B. उनमें सुधार करने से न कि समाप्त करने से होगी
C. सामाजिक बुराई के रूप में उनके विरोध करने से होगी
D. केवल हमारे देश में ही है

326. एक अध्यापक के रूप में आप जिस कक्षा को पढ़ा रहे हैं उसका एक विद्यार्थी बेहोश हो जाता है, तो आप क्या करेंगे?
- A. दूरभाष से विद्यार्थी के अभिभावक को सूचित कर उनका इन्तजार करेंगे
B. प्रधानाचार्य के कार्यालय में जाकर उन्हें सूचित करेंगे
C. उस विद्यार्थी को प्राथमिक उपचार देकर नजदीकी डॉक्टर से सम्पर्क करेंगे
D. उसके घर जाने की व्यवस्था करेंगे
327. यदि आप शिक्षा में सुधार लाना चाहते हैं, तो कहाँ से शुरू करेंगे?
- A. प्राथमिक स्तर B. माध्यमिक स्तर
C. स्नातक स्तर D. ये सभी
328. विद्यालयी पाठ्यक्रम में 'एस.यू.पी.डब्ल्यू.' को लगाया गया-
- A. विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग की रिपोर्ट की अनुशंसा पर
B. कोठारी शिक्षा आयोग की रिपोर्ट की अनुशंसा पर
C. माध्यमिक शिक्षा आयोग की रिपोर्ट की अनुशंसा पर
D. इशहार भाई पटेल पुनःनिरीक्षण शिक्षा समिति की अनुशंसा पर
329. निम्नलिखित में से किस विश्वविद्यालय की स्थापना 1857 में की गई?
- A. कलकत्ता (कोलकाता) B. बम्बई (मुम्बई)
C. मद्रास (चेन्नई) D. उपर्युक्त तीनों
330. भारत में शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य है-
- A. नौकरी के लिए तैयारी करना
B. राष्ट्रीय हित की सुरक्षा करना
C. शैक्षिक रूप से दृढ़ बनाना
D. हितकर ज्ञान देना
331. शिक्षा के लिए सबसे अनुकूल है-
- A. सामाजिक स्त्रीकरण B. जाति
C. सामाजिक वर्ग D. गतिशीलता
332. भारतीय शिक्षा के गिरते स्तर के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा कारण सर्वाधिक उत्तरदायी है?
- A. कम योग्यता के अध्यापक
B. शिक्षा में सर्वाधिक राजनीतिक हस्तक्षेप
C. पर्याप्त कोष का अभाव
D. सरकारी उदासीनता
333. भारत में प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक बाध्यकारी कारण है?
- A. क्षेत्रीय राजनीति
B. सार्वभौमीकरण पर व्यय की लागत
C. सामान्यतः राजनीति
D. अध्यापकों की कमी
334. प्राइवेट और पब्लिक तथा राजकीय और अन्य प्रकार के विद्यालयों के अस्तित्व के साथ-साथ जिस चीज को बल मिला, वह है-
- A. उच्च और मध्यम वर्ग के मध्य बाधा को
B. अमीर और गरीब के बीच बाधा को
C. उपर्युक्त (A) तथा (B) को
D. जाति प्रथा को
335. बच्चे के लिए सबसे महत्वपूर्ण अनौपचारिक अध्यापक है-
- A. उसके साथी B. उसका पिता
C. उसकी माँ D. उसके भाई-बहिन
336. केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार मंडल की सर्वप्रथम स्थापना हुई-
- A. 1925 में B. 1950 में
C. 1920 में D. 1948 में
337. जिन्दगी में जब आपको सफलता मिलती है तो आप क्या सोचते हैं?
- A. मुझे कठिन मेहनत से यह सफलता प्राप्त हुई
B. प्रभु की कृपा से मुझे सफलता प्राप्त हुई
C. मुझे मेरी तकदीर की वजह से सफलता मिली
D. मेरे विरोधियों के व्यवधान उत्पन्न करने के बावजूद मुझे सफलता मिली
338. विद्यालय छात्रावास में विभिन्न प्रान्तों के विद्यार्थी रहते हैं। छात्रावास के विद्यार्थी सामान्यतः उनको दिये जाने वाले भोजन से सन्तुष्ट नहीं हैं तब आप एक वार्डन के रूप में-
- A. विभिन्न प्रान्तों के छात्र प्रतिनिधियों की एक सभा करायेंगे और यह जानने का प्रयत्न करेंगे कि उनके असंतोष के क्या कारण हैं
B. छात्रों से कहेंगे कि वे अपनी पसन्द का भोजन बनाकर आपको दें

- C. छात्रों के साथ भोजन करेंगे और नियमित रूप से यह देखेंगे कि छात्र भली प्रकार भोजन ग्रहण कर रहे हैं या नहीं
- D. चक्रानुक्रम में वरिष्ठ छात्रों को यह उत्तरदायित्व देंगे कि वे भोजन का मीनू निर्धारित करें और इस बात का ध्यान रखें कि भोजन संतुलित हो, विभिन्न प्रान्तों के छात्रों की पसंद का हो और निर्धारित बजट के अन्तर्गत हो
339. आपकी कक्षा में एक लड़का और एक लड़की को लेकर समस्या उत्पन्न हो गई है, आपकी प्रतिक्रिया होगी-
- A. प्रधानाचार्य को सूचित करना
- B. संरक्षक को सूचित करना
- C. दोनों को बैठकर समस्या का समाधान करना
- D. सह-शिक्षा को बन्द करना
340. उच्च शिक्षा पर अभी भी वर्चस्व है-
- A. मातृ-भाषा का B. अंग्रेजी का
- C. हिन्दी का D. इन सभी का
341. यदि समान वेतन हो तो सबसे अच्छा व्यवसाय है-
- A. अनुसंधानकर्ता का B. इंजीनियर का
- C. डॉक्टर का D. अध्यापक का
342. बालक जन्मजात क्रियाशील होता है इसलिए उसे प्रेरित करना चाहिए-
- A. खेलों के लिए
- B. रचनात्मक कार्यों के लिए
- C. ज्ञानार्जन के लिए
- D. शारीरिक विकास के लिए
343. आजकल शिक्षा के गिरते स्तर का मुख्य कारण है-
- A. राजनीतिक हस्तक्षेप
- B. छात्राओं की अनुशासनहीनता
- C. अभिभावकों की विद्यालय कार्यों के प्रति उदासीनता
- D. अध्यापिकाओं की अपने उत्तरदायित्व के प्रति उदासीनता
344. मुझे अपनी सहेली पर तब क्रोध आता है जब वह-
- A. किसी निर्दोष को दोष देती है
- B. मेरी बात नहीं मानती है
- C. अपने स्वार्थ की बात करती है
- D. मेरे साथ विद्यालय नहीं जाती है
345. यदि कोई शिशु अपने साथी को मारता-पीटता है, तो आप-
- A. उसे मारने पीटने से मना करेंगे
- B. उसे दण्ड देंगी
- C. उसकी शिकायत प्रधानाचार्य से करेंगी
- D. कारण की पृष्ठभूमि को समझकर ऐसा प्रयास करेंगी कि वह आगे ऐसा न करे
346. विद्यालय विलम्ब से पहुँचने पर प्रधानाचार्या द्वारा उपस्थिति पंजी पर निशान लगा देने पर आप-
- A. अपनी गलती स्वीकार कर लेंगी
- B. दूसरे दिन से समय से आने का प्रयास करेंगी
- C. प्रधानाचार्य से देरे से आने की सफाई देंगी
- D. विलम्ब से आने वाली अन्य अध्यापिकाओं का उदाहरण प्रस्तुत करेंगी
347. यह कहना कि "मैं अच्छी तरह कार्य नहीं कर सकूँगा" प्रतीक है-
- A. अपने-आप की अक्षमता
- B. असफलता की भावना से प्रभावित
- C. अपनी सम्भावनाओं से अनभिज्ञता
- D. विनम्रता की भावना
348. आपके अनुसार कक्षा में वातावरण कैसा होना चाहिए?
- A. सख्त
- B. अन्तर्मुखी व संयमित
- C. छात्र एवं अध्यापक दोनों का बराबर योगदान हो
- D. उपर्युक्त में से कोई नहीं
349. शिक्षण प्रणाली कैसी होनी चाहिए?
- A. बाल-केन्द्रित
- B. मूल्य-केन्द्रित
- C. शिक्षण-छात्र केन्द्रित
- D. उपर्युक्त में से कोई नहीं
350. प्राथमिक शिक्षा का प्रथम लक्ष्य है-
- A. छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए तैयार करना
- B. छात्रों में राष्ट्रीय जागरूकता का संचार करना
- C. छात्रों को उनके अधिकारों के प्रति आगाह कराना
- D. छात्रों के सर्वांगीण विकास की पृष्ठभूमि तैयार करना
351. बेरोजगारी उन्मूलन के लिए उत्तम योजना है-
- A. बालकों को प्रारम्भिक शिक्षा के तत्पश्चात् उनके पैतृक व्यवसायों का प्रशिक्षण प्रदान करना

- B. भारतीय विद्यालयों में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को लागू करना
C. बालकों को उच्च शिक्षा में जाने से रोकना
D. बालकों को चरित्र निर्माण की शिक्षा प्रदान करना
352. पूर्व-प्राथमिक शालाओं में महिला-शिक्षिकाओं की नियुक्ति इसलिए की जाती है, क्योंकि वे होती हैं-
A. मातृत्व स्नेही B. मधुर सम्भाषण पूर्ण
C. अनुशासनपूर्ण D. सौंदर्यपूर्ण
353. धार्मिकता का अर्थ है-
A. धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन करना
B. धार्मिक चिन्हों का प्रयोग करना
C. धार्मिक मदान्धता में लिप्त रहना
D. सभी के कल्याण में रत रहना
354. पूर्व प्राथमिक विद्यालय में शिक्षा का आधार होना चाहिए-
A. खेल विधि
B. पाठ्य पुस्तक विधि
C. प्रयोगशाला विधि
D. भाषण विधि
355. निरन्तर शिक्षा के पतन के लिए दोषी है-
A. राजनीतिक हस्तक्षेप
B. अराजकता एवं अनुशासनहीनता
C. अभिभावकीय उदासीनता
D. अध्यापकों में लुप्त होती कर्तव्य-निष्ठा
356. मैं प्रायः अपने घनिष्ठ मित्रों में सम्मिलित करती हूँ-
A. परिश्रमी व्यक्तियों को
B. प्रत्येक परिस्थिति में सामंजस्य बनाए रखने वाले सहयोगियों को
C. राजनीतिक पहुँच वाले सहयोगियों को
D. प्रधानाचार्य के चापलूसों को
357. एक विद्यार्थी के लिए किसी विषय को अच्छी प्रकार से समझने के लिए सबसे महत्वपूर्ण चीज है-
A. अध्यापक द्वारा कक्षा में दिए गए नोट्स
B. अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों के बीच दिए गए विषय पर कराया गया विचार-विमर्श
C. अध्यापक द्वारा दी गई पाठ्य-सामग्री
D. अध्यापक की विद्वता
358. विद्यालय को विद्यार्थियों के लिए पाठ्य-सहाय्यी (को-क्यूरीकुलर) गतिविधियों की व्यवस्था करनी चाहिए, क्योंकि-
A. पाठ्यक्रम सम्बन्धी गतिविधियाँ बिना पूरक गतिविधियों के अधूरी होती हैं
B. पाठ्यक्रम सम्बन्धी (क्यूरीकुलर) और सह-पाठ्यक्रम सम्बन्धी अनुभव का सटीक मिश्रण पाठ्य-सामग्री और संदर्भ को ठीक से समझने में मदद करता है
C. हर व्यक्ति सह-पाठ्यक्रम सम्बन्धी गतिविधियाँ चाहता है
D. सह-पाठ्यक्रम सम्बन्धी गतिविधियाँ विद्यालय को आकर्षक बनाती हैं
359. निम्न में से कौन-सा दृश्य-श्रव्य (Visual-Audio) उपकरण है?
A. रेडियो B. टेपरिकॉर्डर
C. टेलीविजन D. प्रोजेक्टर
360. क्या बुद्धिमान अभिभावकों के बच्चे अध्ययन में सदैव चमकते हैं?
A. हाँ B. नहीं
C. मनोविज्ञान D. ईश्वर पर निर्भर
361. बच्चों की कल्पनाशीलता दर्शाती है-
A. कल्पना के प्रति उनका प्यार
B. अन्दरूनी प्रतिभा
C. आयु सम्बन्धी उनके रुझान
D. दबी हुई कुंठा
362. छोटे बच्चों को पढ़ाना मेरी प्राथमिकता इसलिए है, क्योंकि-
A. मुझे उनके साथ खेलना पसन्द है
B. उनको सँभालना आसान है
C. मुझे इसके लिए अतिरिक्त पढ़ाना नहीं पड़ता
D. उनके मूल्यों तथा दक्षताओं को विकसित करने का यही सर्वश्रेष्ठ समय है
363. आजकल अभिभावक अपने बच्चों पर उपलब्धियाँ हासिल करने के लिए बहुत दबाव डालते हैं, क्योंकि-
A. वे अपने बच्चों के माध्यम से अपने सपनों को पूरा करना चाहते हैं
B. वे अपने बच्चों के भविष्य के प्रति डरे रहते हैं
C. दुनिया में प्रतिस्पर्धा प्रतिदिन बढ़ती जा रही है
D. सामाजिक स्तर अच्छे ग्रेड पाने से ही बढ़ता है

364. सबसे अच्छा विद्यार्जन उसी कक्षा में होता है, जहाँ
 A. हर बच्चे को खोज का बराबर अवसर मिले
 B. शिक्षक बच्चों को दंडित न करें
 C. कोई निश्चित पाठ्यक्रम न हो
 D. परीक्षा का भय न हो
365. स्कूल तथा समाज को मिलकर काम करना चाहिए, क्योंकि-
 A. स्कूल समाज का अभिन्न अंग है
 B. समाज सीखने के संसाधन प्रदान करता है
 C. समाज विद्यार्थियों की भिन्नताओं को समझने में सहायता करता है
 D. बच्चे एक-दूसरे से सहयोग करना सीखते हैं
366. समाज में हो रहे नैतिक पतन को रोकने के लिए सर्वश्रेष्ठ विकल्प है-
 A. शिक्षक द्वारा सदाचरण
 B. कठोर दण्ड
 C. नैतिक शिक्षा
 D. इनमें से कोई नहीं
367. समाज में प्रतिष्ठा का आधार धन होता है, यह-
 A. अज्ञात है B. असत्य है
 C. पूर्ण सत्य है D. आंशिक सत्य है
368. छात्रों में सामाजिकता के विकास का दायित्व विद्यालयों पर आ गया है, क्योंकि-
 A. छात्रों में सामाजिक विकास की प्रवृत्ति बदल गई है
 B. परिवार बहुत छोटे और एकाकी हो गए हैं
 C. व्यक्तियों में एकाकी रहने की प्रवृत्ति बढ़ी है
 D. इनमें से कोई नहीं
369. आपके घर में मेहमान आने पर-
 A. आप क्रोधित होंगे
 B. आप अपनी सामर्थ्य से बढ़कर दिखावा करेंगे
 C. आप यथाशक्ति उचित सत्कार करेंगे
 D. आप उदासीनता दिखाएंगे
370. हमारा मस्तिष्क हमारी समस्त शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं को नियंत्रित करता है-
 A. हाँ B. कभी-कभी
 C. कभी-नहीं D. सम्भवतः
371. किसी सामूहिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए नेतृत्व का होना आवश्यक है-
 A. प्रायः B. हाँ
 C. कदापि नहीं D. कह नहीं सकते
372. नेता अपने समुदाय का होता है-
 A. स्वामी B. शोषक
 C. प्रतिनिधि D. इनमें से कोई नहीं
373. अच्छे नेता का महत्वपूर्ण कार्य है-
 A. सभी कार्य स्वयं करना
 B. अधिकतम धन कमाना
 C. नीति निर्माण व योजना बनाकर प्रयास करना
 D. अपने पद को यथावत बनाए रखना
374. महात्मा गांधी स्वतंत्रता संग्राम में जिस गुण के कारण देश के नेता बने, वह था-
 A. अंग्रेजों की विरोधी भावना
 B. दृढ़ संकल्प शक्ति
 C. सुन्दर व्यक्तित्व
 D. इनमें से कोई नहीं
375. विद्यार्थियों में नेतृत्व के गुणों का विकास इसलिए किया जाता है, क्योंकि वे-
 A. भविष्य में नेता बन सकें
 B. व्यक्तित्व का विकास कर सकें
 C. जनता को मूर्ख बना सकें
 D. मित्रता की भावना बढ़ा सकें
376. शिक्षकों द्वारा प्राइवेट ट्यूशन करने के सन्दर्भ में आपका विचार है कि-
 A. प्राइवेट ट्यूशन पर रोक लगा देनी चाहिए
 B. प्राइवेट ट्यूशन केवल विशेष परिस्थितियों में ही की जाए
 C. इस पर कोई रोक नहीं होनी चाहिए
 D. इसे कानून बनाकर दंडनीय कर देना चाहिए
377. छात्रों में अनुशासनहीनता के निराकरण का श्रेष्ठ उपाय है-
 A. छात्रों में भयमुक्त वातावरण बनाना
 B. छात्रों की समस्याओं से अवगत होना
 C. छात्रों से सीधे सम्पर्क स्थापित कर अनुशासनहीनता के कारणों को मालूम करना
 D. छात्रों को कठोरता से दण्डित करना

378. यदि आप अपने विद्यालय के छात्रावास वार्डन हैं, तो आप अनुशासन कैसे स्थापित करेंगे?
- A. छात्रों के साथ संवाद स्थापित करके
B. अचानक निरीक्षण द्वारा
C. परिस्थितियों के अनुसार
D. कठोर दण्डात्मक रुख अपनाकर
379. छात्रों के विकास में सर्वाधिक भूमिका होती है—
- A. विशाल क्रीडास्थल की
B. अच्छी पुस्तकों की
C. समर्पित शिक्षकों की
D. इनमें से कोई नहीं
380. देश की उन्नति तभी सम्भव है जब प्रत्येक नागरिक जाति, धर्म, क्षेत्र एवं भाषा की संकीर्णता से दूर होकर कार्य करे। आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं?
- A. पूर्णतः सहमत
B. आंशिक सहमत
C. आंशिक असहमत
D. इनमें से कोई नहीं
381. सम्प्रेषण कौशल अर्जित किया जा सकता है। कथन है—
- A. असत्य
B. सत्य
C. अव्यावहारिक
D. असम्भव
382. जटिल वाक्य तथा नकारात्मक भाषा विचार सम्प्रेषण को बनाते हैं—
- A. सरल
B. कठिन
C. प्रभावी
D. अप्रभावी
383. प्राथमिक कक्षाओं में प्रायः सम्प्रेषण होना चाहिए—
- A. अंग्रेजी में
B. राष्ट्रभाषा में
C. विदेशी भाषा में
D. मातृभाषा में
384. एक शिक्षक को अपने सार्थक सम्प्रेषण में आत्मसंतोष प्राप्त होता है। क्या आप इस कथन से सहमत हैं?
- A. कभी नहीं
B. हाँ
C. नहीं
D. इनमें से कोई नहीं
385. सम्प्रेषण कला में सभी में दक्षता समान रूप से पाई जाती है—
- A. हाँ
B. नहीं
C. सम्भवतः
D. कभी-कभी
386. सम्प्रेषण कला में दक्षता की सर्वाधिक आवश्यकता किसको होती है?
- A. शिक्षक
B. किसान
C. डॉक्टर
D. शिक्षार्थी
387. आप एक टीचर हैं। मध्याह्न अवकाश में आप यदि अपने साथियों के साथ चायपान करते हैं, तो उस समय आपका लक्ष्य होना चाहिए—
- A. चायपान व्यवस्था का निरीक्षण करना
B. विद्यालय सम्बन्धी विभिन्न समस्याओं पर विचार-विमर्श करना
C. साथियों की आलोचना करना
D. इनमें से कोई नहीं
388. जनचेतना उत्पन्न करने हेतु अध्यापक को चाहिए कि—
- A. जनचेतना पर लेख प्रकाशित कराए
B. जनचेतना पर अनेक व्याख्यान दे
C. सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहे
D. जनमानस से बिल्कुल दूर रहें
389. परिवार, समाज तथा राष्ट्र के सम्पूर्ण विकास के लिए—
- A. छात्राओं की शिक्षा अधिक आवश्यक है
B. छात्रों की शिक्षा अधिक आवश्यक है
C. किसी को शिक्षा की आवश्यकता नहीं है
D. दोनों की शिक्षा आवश्यक है
390. लक्ष्य प्रधान सम्प्रेषण ही सार्थक होता है। क्या आप इस कथन से—
- A. पूर्णतः सहमत हैं
B. आंशिक सहमत हैं
C. आंशिक असहमत हैं
D. इनमें से कोई नहीं
391. आपके मतानुसार “सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम” अभिमुखीकरण का अच्छा उपाय है। यह कथन है—
- A. अनिश्चित
B. असत्य
C. सत्य
D. आंशिक सत्य
392. यदि बालक परिपक्वता के रूप में तैयार नहीं होता है, विद्यालय की प्रत्याशाओं की पूर्ति करने के लिए तो विद्यालय प्रतीत होता है—
- A. एक वृहद कार्य
B. एक अत्यधिक भयपूर्ण अभिकरण
C. भय का प्रतीक
D. भय ग्रन्थि

393. आधुनिक मनोविज्ञान स्वयं को व्यक्त करती है-
- आकृति के प्रत्यक्षीकरण के रूप में
 - विकास के रूप में
 - समाजीकरण के रूप में
 - व्यवहार के विज्ञान के रूप में
394. जैसे-जैसे बालक बड़ा होता जाता है, उसके आदर्श प्रतिमान (चरित्र नायक) से प्रतिस्थापित होते जाते हैं।
- माता-पिता एवं भाई-बहनों से
 - नेता एवं मित्र-मण्डली से
 - दूरदर्शन के चरित्र नायकों से
 - मित्रों एवं रिश्तेदारों से
395. किसी व्यवसाय में सफल होने के लिए व्यक्ति को आवश्यकता होती है-
- प्रेरणा, निष्कपटता एवं धैर्यशीलता
 - धन
 - स्तर
 - शैली
396. इस बात का पूर्व कथन करना सरल है कि अभियोग्यता परीक्षणों के द्वारा किसी व्यवसाय में की कैसी स्थिति होगी।
- असफलता
 - स्वभाव
 - अभिरुचि
 - समायोजन
397. निम्नलिखित में से कौनसी एक दृश्य-श्रव्य सामग्री है?
- रेडियो
 - टेपरिकॉर्डर
 - दूरदर्शन
 - प्रोजेक्टर (प्रक्षेपक यन्त्र)
398. किसी सामाजिक परिस्थिति में क्या घटित होने वाला है, इस तथ्य की जानकारी होती है
- मानवीय संज्ञान
 - अंतर्प्रक्रिया संज्ञान
 - सामाजिक संज्ञान
 - परिस्थिति विशेष सम्बन्धी संज्ञान
399. सूचनाओं एवं ज्ञान की प्राप्ति है-
- सीखने की योग्यता
 - समायोजन की योग्यता
 - स्मृति में लाने की योग्यता
 - उपर्युक्त में से कोई नहीं
400. यदि आप चाहते हैं कि प्रत्येक बालक सृजनशील हो, तो करना चाहिए-
- एक सहायक एवं भयमुक्त वातावरण
 - माता-पिता एवं शिक्षकों का हस्तक्षेप
 - माता-पिता एवं शिक्षकों द्वारा आलोचना
 - दृढ़ता (कठोरतापूर्ण वातावरण)
401. जब आपका विद्यार्थी अच्छा निष्पादन करता है तो आप-
- अपनी प्रसन्नता व्यक्त करेंगे
 - उसकी सराहना करेंगे
 - ईर्ष्या का अनुभव करेंगे
 - चुप रहेंगे
402. कौनसे परीक्षणों के द्वारा अभ्यर्थियों को अपने उत्तरों को लिखने एवं उनकी जांच करने के लिए न्यूनतम यन्त्रों की आवश्यकता होती है तथा बहुत कम व्ययसाध्य होते हैं?
- उपलब्धि परीक्षण
 - पेपर-पेन्सिल परीक्षण
 - व्यक्तित्व परीक्षण
 - व्यक्तिगत परीक्षण
403. शिक्षा मनोविज्ञान का प्रमुख केन्द्र बिन्दु है
- अधिगम कठिनाइयों की पहचान करना तथा उनका उपचार करना
 - व्यवहार सम्बन्धी छोटी-छोटी समस्याएँ
 - तीव्र संवेगात्मक समस्याएँ
 - मस्तिष्क एवं अन्य व्यवहार सम्बन्धी जैविक क्रियाओं में सम्बन्ध
404. श्रव्य-दृश्य (Audio-Visual) सामग्री हैं-
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को रुचिपूर्ण बनाने वाली
 - स्वयं में साध्य नहीं है
 - शिक्षण की सहायक सामग्री नहीं हैं
 - छात्र की विषय-वस्तु को उत्तम ढंग से समझाने के लिए उपाय नहीं करती हैं
405. सम्भावी शिक्षकों को छात्रों के साथ कार्य करने के लिए निम्नलिखित तात्कालिक प्रकरणों पर ध्यान देना चाहिए-
- द्वन्द्व एवं हिंसा
 - चिन्तनशीलता का अभ्यास
 - अनुदेशन के लक्ष्य एवं उद्देश्य
 - व्यावसायिक योग्यता सम्बन्धी गुणवत्ता

406. पास-पड़ोस में रहने वाले व्यक्तियों की व्यावहारिक समस्याओं का निदान करने जैसा कार्य निम्नलिखित के अन्तर्गत आता है-
- सामुदायिक मनोविज्ञान
 - पास-पड़ोस सम्बन्धी मनोविज्ञान
 - जनन मनोविज्ञान
 - विकासात्मक मनोविज्ञान
407. प्रकृति एवं पर्यावरण का सम्बन्ध है-
- आन्तरिक एवं बाह्य पर्यावरण से
 - स्वभाव एवं चरित्र से
 - शारीरिक बनावट एवं स्वभाव से
 - आनुवंशिकता एवं पर्यावरण से
408. विद्यालय का पुस्तकालय-
- छात्रों एवं शिक्षकों के मानसिक धरातल का विकास करने में सहायक है
 - निर्देशन प्रोग्राम में वृद्धि नहीं करता है
 - कक्षा शिक्षण में सहायक नहीं है
 - शिक्षक की शिक्षण प्रक्रियाओं को पुष्ट नहीं करता है
409. अनौपचारिक शिक्षा-
- परिवार, समुदाय एवं धर्म आदि के माध्यम से प्रदान की जाती है
 - कोई निश्चित पाठ्यक्रम नहीं होता है
 - ज्ञान प्राप्ति के लिए अभिप्रेरित नहीं होती है
 - किसी संगठित अभिकरण के द्वारा व्यवस्थित की जाती है
410. वह गुण जो शिक्षण में परमावश्यक है-
- अनुकूलन, धैर्य एवं सतर्कता
 - निर्भरता एवं निर्णयात्मक अयोग्यताएँ
 - प्रभुत्ववादी अभिवृत्ति
 - सांसारिक (भौतिक जगत्) प्रवृत्ति
411. विद्यालय एक संस्था है, जिसका कार्य है-
- धार्मिक आधार पर स्तरीकरण करना
 - आर्थिक आधार पर स्तरीकरण करना
 - सामाजिक दूरी स्थापित करना
 - समाजीकरण करना
412. विद्यालय में सम्पन्न होने वाली मानवीय अन्तर्प्रक्रियाएँ कही जाती हैं-
- सामाजिक दशा
 - सामाजिक पदानुक्रमिकता
 - सामाजिक तन्त्र
 - सामाजिक गतिशीलता
413. अपने विद्यालय में एक श्रेष्ठ अध्यापक की प्राथमिकता रहती है-
- प्रधानाचार्य के प्रति
 - प्रबन्धक समिति के सचिव के प्रति
 - अपने सहयोगी शिक्षकों के प्रति
 - छात्रों के प्रति
414. विद्यालय एक सामाजिक अभिकरण है, जो देता है-
- समाज को उच्च मानकों तक पहुँचाने में योगदान
 - संस्कृति को सुरक्षित रखने तथा हस्तान्तरण में योगदान
 - कुछ निश्चित जैनिक लक्षणों को संरक्षित करने में योगदान
 - अच्छे, एवं बुरे लक्षणों की पहचान में योगदान
415. विद्यालय स्तर पर शिक्षा का अकादमिक पक्ष नियन्त्रित किया जाता है-
- यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन (UGC)
 - नेशनल काउन्सिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग (NCERT)
 - नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशनल प्लानिंग एण्ड एण्डमिनिस्ट्रेशन (NIEPA)
 - नेशनल काउंसिलिंग टीचर एजुकेशन (NCTE) नई दिल्ली
416. 10+2+3 शिक्षा योजना की संस्तुति की गई थी-
- कोठारी कमीशन के द्वारा
 - मुदालियर कमीशन के द्वारा
 - राधाकृष्णन् कमीशन के द्वारा
 - राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 द्वारा
417. परिपक्वता काल में तैयार रहने की अवस्था सम्बन्धी प्रत्यय व्यवहार के विकास को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है, क्योंकि इससे हमें ज्ञात होता है कि कुछ कौशल/दक्षताएँ सीखना या तो कठिन है अथवा बिल्कुल असम्भव है एक प्रदत्त-
- शिक्षण स्तर से पूर्व
 - बौद्धिक स्तर से पूर्व
 - सामाजिक-आर्थिक स्तर से पूर्व
 - आयु स्तर से पूर्व

418. एक बालक जिसमें औसत दर्जे की बुद्धि है, किन्तु वह पूर्ण विकसित वातावरण में पल रहा है, ऐसा बालक प्राप्त करेगा-

- A. एक श्रेष्ठ जीवन
- B. एक औसत जीवन
- C. जीवन में कुछ भी नहीं
- D. जीवन में सब कुछ

419. प्रायः भाई-बहन, माता-पिता एवं शिक्षक प्रमुख स्रोत माने जाते हैं अपने बालकों के लिए।

- A. प्रेरणा के
- B. सूचनाओं के
- C. मर्तों के
- D. अभिवृत्तियों के

420. का ज्ञान हमें स्वयं को समझने में अत्यधिक मदद करता है।

- A. शिक्षा
- B. रंगों
- C. सामाजिक प्रत्यक्षीकरण
- D. उपर्युक्त में से कोई नहीं

421. मानसिक स्वास्थ्य है-

- A. सम्पूर्ण व्यक्तित्व की सन्तुलित कार्य-प्रणाली
- B. कुसमायोजन का लक्षण
- C. तीव्रतम उत्तेजनशीलता की स्थिति
- D. संवेगात्मक विद्रूपताओं को दूर करने की स्थिति

422. प्रायः अवस्था में बच्चें विद्यालय में समायोजन सम्बन्धी समस्याओं से ग्रस्त हो जाते हैं

- A. बचपन में
- B. पूर्व सामाजिक विकास की अवधि में
- C. विद्यालय पूर्व अवधि में
- D. मध्य बाल्यावस्था में

423. एक दिन पहले किसी छात्र ने आपको बेवकूफ बनाया था। उस छात्र द्वारा कक्षा में एक अच्छी सूझ देने पर आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी?

- A. आप इसकी अपेक्षा करेंगे
- B. आप किसी अन्य छात्र से इसे जाँचने के लिए कहेंगे
- C. आप इसे सहर्ष स्वीकार करेंगे
- D. आप इसे स्वयं जाँचना प्रारम्भ करेंगे

424. निम्नलिखित में से क्या अनुशासन का आधार नहीं हो सकता?

- A. नियम पालन की महत्ता को स्वीकारना
- B. व्यक्ति के अन्तर्निष्ठ अधिकार एवं गौरव को स्वीकारना
- C. स्वतंत्रता, समानता व न्याय के मूल्यों को स्वीकारना
- D. लक्ष्य उपलब्धि के लिए इसकी अच्छी भूमिका को स्वीकारना

425. निम्नलिखित में से कौनसी चीज एक शिक्षक को अधिक प्रभावी बना सकती है?

- A. यदि वह अनुदेशन सहायक सामाग्रियों का उपयोग करे
- B. यदि वह अध्येता को पढ़ाए जा रहे पाठ में प्रयोजन ढूँढने में सहायता प्रदान करे
- C. यदि वह उदाहरण दे तथा पाठ में बीच-बीच में प्रश्न पूछे
- D. यदि छात्रों को पाठ के प्रश्नों के उत्तर जानने में सहायता करे

426. कई विशेषज्ञ 'पुस्तक खोलकर परीक्षा-प्रणाली' की वकालत करते हैं, ऐसा करने पर-

- A. बोर्ड द्वारा काफी संख्या में पुस्तकों की आवश्यकता पड़ेगी
- B. प्रश्न-पत्र बनाने में अधिक क्षमता/कौशल की आवश्यकता पड़ेगी
- C. छात्र सहभागिता की आवश्यकता पड़ेगी
- D. उत्तर-पुस्तिका जाँचने के लिए अन्य प्रकार के परीक्षकों की आवश्यकता पड़ेगी

427. 'पेडागॉजी' (Pedagogy) कहलाता है-

- A. शिक्षण-विज्ञान
- B. सीखने की कला
- C. शिक्षण-अधिगम विज्ञान एवं कला दोनों
- D. संप्रेषण विज्ञान

428. 'CCE' (सतत् व व्यापक मूल्यांकन) नामक अवधारणा के अन्तर्गत क्या नहीं आता है?

- A. मूल्यांकन के लचीले ढंग से योजना बनाना
- B. शिक्षक को मूल्यांकन के काफी कार्यों में व्यस्त रखना
- C. अध्येता के शैक्षिक व गैरशैक्षिक दोनों पक्षों का निर्धारण
- D. पोर्टफोलियो/पत्राधान द्वारा मूल्यांकन

429. विद्यालयी शिक्षा में समुदाय की साझेदारी मुख्यतः क्यों आवश्यक है?

- A. शिक्षक के कार्यों का पर्यवेक्षण
- B. विद्यालयी वातावरण को सुधारना
- C. अतिरिक्त साधन जुटाने के लिए
- D. अच्छे मानव संसाधन के विकास के लिए

430. निम्नलिखित में से कौन-सा 'वैकल्पिक पाठशाला' का अर्थ नहीं है?

- A. चरवाहा विद्यालय
- B. विद्यालय के बाहर रहे बच्चों की शिक्षा
- C. आसपास/पड़ोस के बच्चों की शिक्षा उनके पड़ोस में
- D. निर्माण कार्य के पास बच्चों की शिक्षा

431. एक अच्छा शिक्षक वह होगा जो (सर्वाधिक उपयुक्त)।

- A. विद्यार्थियों को सबसे अधिक प्रेरणा देता है
- B. विद्यार्थियों को सभी आवश्यक सहायता प्रदान करता है
- C. अच्छे अंक पाने में सहायता करता है
- D. कक्षा में अच्छा अनुशासन बनाए रखता है

432. सहयोग-मूल्य के विकास के लिए निम्नलिखित में से सबसे अच्छा तरीका क्या होगा?

- A. इस विषय पर व्याख्यानों का आयोजन
- B. सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन
- C. एक माह के कैम्प का आयोजन
- D. एक आदर्श भूमिका निभाकर

433. औपचारिक विद्यालयों व मुक्त (ओपन) विद्यालयों में बड़ा अन्तर क्या है?

- A. पहले वाले सुव्यवस्थित होते हैं
- B. बाद वाले अपनी शिक्षण अधिगम प्रणाली में मुखाभिमुख घटक का कम प्रयोग करते हैं
- C. बाद वाले आधुनिक संयन्त्रों का उपयोग करते हैं
- D. उपर्युक्त में से कोई नहीं

434. एक समाजीकरण अभिकरण की दृष्टि से विद्यालय एक एजेंट कहा जा सकता है।

- A. प्राथमिक
- B. अनुषंगी/गौण
- C. संपूरक
- D. तृतीयक

435. विद्यालय में विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं इसीलिए आयोजित करनी चाहिए, क्योंकि-

- (i) इसके लिए पर्याप्त फंड उपलब्ध है
- (ii) विभिन्न समूहों को आपसी समझ में मदद करता है
- A. केवल (i) प्रासंगिक है
- B. केवल (ii) प्रासंगिक है
- C. दोनों (i) व (ii) प्रासंगिक है
- D. दोनों (i) व (ii) अप्रासंगिक हैं

436. किसी शिक्षक द्वारा बनाए गए किसी प्रश्नपत्र में छात्र-समूह का अधिक अंक पाना निश्चित रूप से क्या दर्शायेगा?

- A. यह समूह एक उच्च उपलब्धि वाला है
- B. शिक्षक ने अच्छा पढ़ाया है
- C. प्रश्नपत्र अच्छा बनाया गया है
- D. उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

437. किसी संप्रेषण का सार हमारा ऐसा इंद्रियाधारित प्रत्यक्ष होता है, जो-

- A. मस्तिष्क को सीधा कूट सूचना भेजता है
- B. प्राप्त सूचना की व्याख्या करता है
- C. प्राप्त सूचना पर चयनित ढंग से कार्य करता है
- D. सूचना का केवल प्रक्रम करता है

438. छात्रों की स्वाध्याय में रुचि जागृत करने के लिए आप क्या करेंगे?

- A. स्वाध्याय के महत्व पर भाषण देंगे
- B. भिन्न-भिन्न प्रकार की पुस्तकें पुस्तकालय में रखेंगे
- C. उनके अभिभावकों से शिकायत करेंगे
- D. स्वाध्याय न करने के कारण को जानना चाहेंगे

439. परीक्षा निकट हो और आपको पाठ्यक्रम पूरा करना हो, मगर उसी समय किसी निकट सम्बन्धी की पुत्री के विवाह में सम्मिलित होना हो तो आप क्या करेंगे?

- A. पाठ्यक्रम को छोड़ विवाह में जाएंगे
- B. विवाह में सम्मिलित नहीं होंगे
- C. अतिरिक्त समय में पाठ्यक्रम पूरा करेंगे
- D. किसी सहयोगी पर पाठ्यक्रम का भार सौंपकर विवाह में सम्मिलित होंगे

440. विद्यार्थियों के लिए किस गुण का होना अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है?

- A. परिश्रम
- B. आज्ञापालन
- C. नम्रता
- D. स्वतंत्र चिंतन

441. यदि कोई व्यक्ति आपके सामने माता-पिता की बुराई करता है, तो आप क्या करेंगे?
- उसे बकवास बन्द करने के लिए कहेंगे
 - उसकी बात ध्यान से सुनेंगे
 - उससे सम्बन्ध तोड़ लेंगे
 - इस काम में उसका साथ देंगे
442. आप अपने सहयोगियों के साथ अपने मतभेद को कैसे दूर करेंगे?
- अन्य सहयोगियों के सामने तर्क-वितर्क करके
 - प्रधानाचार्य से शिकायत करके
 - उसका कारण जानने की कोशिश करके उन्हें आपस में दूर करेंगे
 - उसका मजाक उड़ाकर
443. इस बात की आशंका है कि सामाजिक बुराईयाँ स्कूल पर असर डाल रही हैं। इसकी रोकथाम के लिए आपका रवैया क्या होगा?
- आशावादी
 - निराशावादी
 - अन्य अध्यापकों की तरह
 - उदासीन
444. सामुदायिक स्कूल के लिए निम्नलिखित में से क्या सर्वाधिक समुचित है?
- समाज का नेतृत्व करना
 - सामाजिक जीवन का केन्द्र होना
 - स्कूल के क्रियाकलाप में व्यस्त रहना
 - समाज से सम्मान प्राप्त करना
445. प्रभावी तथा सफल नेतृत्व का आधार क्या होना चाहिए?
- व्यक्तिगत रुचि
 - समूह की सेवा
 - समूचे समूह का कल्याण
 - प्रशंसा
446. बालकों के लिए प्राथमिक स्तर पर मध्याह्न भोजन व्यवस्था का लक्ष्य है-
- गरीब बालकों के लिए निःशुल्क भोजन प्रदान करना
 - बालकों को विद्यालय की ओर आकर्षित करना
 - बालकों एवं उनके अभिभावकों को प्रलोभन देना

- राष्ट्र की आर्थिक असमानताओं को दूर करना
447. नवोदय विद्यालयों की स्थापना का प्राथमिक उद्देश्य है-
- सभी बालकों को स्तरीय शिक्षा प्रदान करना
 - आर्थिक रूप से सशक्त बालकों के लिए स्तरीय शिक्षा का प्रबंध करना
 - प्रतिभावान बालकों के लिए उत्तम शिक्षा की व्यवस्था करना
 - ग्रामीण क्षेत्र के मेधावी बालकों के लिए स्तरीय शिक्षा की व्यवस्था करना
448. किसी व्यवसाय की सफलता निर्भर करती है-
- लोगों को संतुष्ट करने वाली नीतियों पर
 - लोगों से पारस्परिक सम्बन्ध बनाए रखने पर
 - कार्य की गुणवत्ता बनाए रखने पर
 - वरिष्ठ कर्मियों के प्रति निष्ठा पर
449. यदि एक अध्यापक अपनी आय में वृद्धि करना चाहता है, तो आप उसे क्या सलाह देना पसंद करेंगे?
- वह घर पर ही अपने विषय की कोचिंग खोल लें तथा छात्रों को अतिरिक्त समय में पढ़ाएं
 - वह विद्यालय में ऐसे विभाग का कार्यभार संभालें जहां कुछ आय होने की सम्भावना हो
 - वह उत्तम पुस्तकें लिखें और उन्हें प्रकाशित कराएं
 - वह कुछ अनैतिक कार्य करें और धन कमाएं
450. एक प्रधानाध्यापक होने के कारण आप अपने अध्यापकों को किस प्रकार प्रेरित करेंगे?
- आप अध्यापकों को नवाचार कार्यक्रमों तथा सेमीनारों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करेंगे
 - आप अध्यापकों को रीफ्रेशर कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए भेजेंगे
 - आप दलित वर्ग के छात्रों के प्रति सहानुभूति रखने के लिए प्रेरित करेंगे
 - आप अध्यापकों के मनोबल को उठाने का हर सम्भव प्रयास करेंगे
451. छात्रों के मूल्यांकन की सर्वश्रेष्ठ विधि है-
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन
 - सत्रान्त में ली जाने वाली वस्तुनिष्ठ परीक्षा
 - छात्रों के संचयी अभिलेख आधारित मूल्यांकन प्रक्रिया
 - षट्मासिक परीक्षाएं

452. आजकल शैक्षिक तकनीकी का महत्व है, क्योंकि-
- इससे समय की बचत होती है
 - इससे प्रभावी शिक्षण किया जा सकता है
 - इससे छात्रों के अधिगम में वृद्धि होती है
 - उपर्युक्त सभी

453. शिक्षा में कार्यानुभव से तात्पर्य है-

- उत्पादनयुक्त शिक्षा व्यवस्था
- औद्योगिक अनुभवों से परिपूर्ण शिक्षा
- व्यावसायिक पाठ्यक्रमों हेतु निर्देशनपरक शिक्षा
- शैक्षिक जगत् में प्रशिक्षण अनुभव

454. निम्नलिखित में से कौनसी एक संवाद (सम्प्रेषण) की प्रक्षेपी विधि नहीं हो सकती है?

- ओवरहेड प्रोजेक्टर
- स्लाइड प्रोजेक्टर
- लैपटॉप द्वारा शिक्षण
- इन्टरनेट सर्फिंग

455. अध्यापक के लिए प्रथमोपचार (First-Aid) का ज्ञान क्यों आवश्यक माना जाता है?

- विद्यार्थियों को कभी भी प्रथमोपचार की आवश्यकता हो सकती है
- अध्यापक स्वयं अपने स्वास्थ्य की उत्तम देखभाल कर सकते हैं
- विद्यार्थियों को प्रायः खेल के मैदान में सहायता पहुंचाई जा सकती है
- इससे अध्यापकों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ती है

456. सामुदायिक स्कूलों की स्थापना का बुनियादी लक्ष्य है-

- समुदाय का नेतृत्व करना
- सामुदायिक जीवन केन्द्रों के रूप में विकसित करना
- समुदाय की हितसाधना में लिप्त करना
- समुदाय एवं समाज के मध्य पुल का निर्माण करना

457. विद्यालयों में अभिभावक-अध्यापक संघों की स्थापना का उद्देश्य होता है-

- अभिभावकों एवं अध्यापकों के मध्य मधुर भावों का विनियमन हो सके और सम्बन्ध मजबूत बनें
- अभिभावकों एवं अध्यापकों के मध्य छात्रों की उन्नति के लिए पर्याप्त विचार-विमर्श सम्भव हो सकें

- अध्यापक ट्यूशन न लेने वाले अभिभावकों को पूर्व चेतावनी दे सकें

- अध्यापकों को अच्छे-अच्छे उपहार प्राप्त हो सकें

458. आप छात्रों में श्रम की महत्ता सम्बन्धी भावनाओं का विकास किस प्रकार करेंगे?

- आप उन्हें श्रम की महत्ता पर व्याख्यान देंगे तथा निबंध लिखवाएंगे
- आप छात्रों से सप्ताहांत में श्रमदान कराएंगे
- आप छात्रों को मजदूरों से मिलवाएंगे
- आप श्रमिकों के जीवन सम्बन्धी फिल्म शो का आयोजन करेंगे

459. आपके विद्यालय में अवकाश के दिन एक शैक्षिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया है जिसमें आपको आमंत्रित किया गया है। आप क्या करेंगे?

- आप अपना अवकाश का दिन विद्यालय में जाकर खराब नहीं करेंगे
- आप निश्चित रूप से भाग लेंगे
- आप कोई बहाना बनाकर असमर्थता प्रकट करेंगे
- आपको ऐसे कार्यक्रमों में कोई दिलचस्पी नहीं है

460. शिक्षा का प्रमुख कार्य होना चाहिए-

- बालकों को भावी जीवन के लिए तैयार करना
- बालकों में अन्तर्निहित क्षमताओं का विकास करना
- बालकों की समायोजन क्षमताओं में वृद्धि करना
- बालकों में कौशलपरक चातुर्य का विकास करना

461. शिक्षा को समवर्ती सूची में स्थान प्रदान करने के लिए किस वर्ष में संविधान संशोधन किया गया?

- 1976 में
- 1978 में
- 1981 में
- 1983 में

462. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की स्थापना हुई थी-

- 1993 में
- 1995 में
- 1998 में
- 2000 में

463. विद्यालय में छात्रों के लिए शारीरिक शिक्षा (फिजिकल एजुकेशन) को अनिवार्य किया गया है, जिससे कि-

- छात्रों को अनिवार्य रूप से खेलों का प्रशिक्षण प्रदान किया जा सके
- छात्रों के स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाया जा सके
- शारीरिक-शिक्षा में प्रशिक्षित शिक्षकों को रोजगार दिया जा सके
- विद्यालयों में खेलों का प्रचार-प्रसार किया जा सके

464. आप कैसी नौकरी करना पसंद करेंगे?

- A. जो केवल 2-3 घण्टे का गम्भीर कार्य करके पूरी हो सके
- B. जो आठ घण्टे तक गम्भीर रूप से व्यस्त रख सके
- C. जो अपनी मन-मर्जी से की जा सके
- D. जो पर्याप्त रिश्तत जुटा सके

465. यदि एक छात्र प्रार्थना स्थल पर विलम्ब से पहुंचता है, तो आप उसके साथ कैसा व्यवहार करेंगे?

- A. आप उसे पृथक् पंक्ति में खड़ा करेंगे
- B. आप उसे आर्थिक दण्ड देंगे
- C. आप उससे कुछ नहीं कहेंगे
- D. आप उसे चेतावनी देकर छोड़ देंगे

466. आपकी दृष्टि से समाज के प्रति सर्वाधिक उपयुक्त दृष्टिकोण है-

- A. लोगों से अधिक नजदीकियां न बनाई जाए
- B. केवल कुछ लोगों से सम्बन्ध बनाया जाए
- C. सामान्यतः सभी के साथ मधुर सम्बन्ध रखे जाएं
- D. अपने विश्वस्त लोगों से ही सम्बन्ध रखे जाएं

467. आप होली का त्यौहार मनाते हैं-

- A. त्यौहार का बहिष्कार करके तथा घर में बंद रहकर
- B. त्यौहार पर अन्य व्यक्तियों को कोसकर तथा पलायन करके
- C. त्यौहार के रीति-रिवाजों का तिरस्कार करके
- D. त्यौहार पर अपने प्रियजनों से मिल-जुलकर

468. आपके घर के निकट चौराहे पर कुछ लड़कों के झुण्ड सदैव दिखाई देते हैं, जो मार्ग में आने-जाने वाली लड़कियों पर छींटाकशी करते हैं। आप उक्त स्थान के सन्निकट रहने से अपना क्या दायित्व मानते हैं?

- A. आप केवल उस स्थिति में कुछ प्रतिकार करना पसंद करेंगे यदि वे आपकी लड़की के साथ छेड़खानी करें, अन्यथा नहीं
- B. आप उनसे भयग्रस्त हैं, क्योंकि आपकी भी लड़कियां हैं तथा आपका दैनिक मार्ग वही है, अतः रिस्क नहीं लेंगे
- C. आप निकटस्थ पुलिस चौकी पर शिकायत दर्ज कराएंगे तथा उन गुण्डों को सबक सिखाने के लिए मोहल्ले के लोगों का सहयोग लेंगे
- D. आप इन हरकतों पर अधिक ध्यान नहीं देंगे, क्योंकि आप जानते हैं जहाँ चार-पांच लड़के एकत्रित हो जाते हैं, वे ऐसा व्यवहार प्रदर्शित करते ही हैं

469. आप आतंकी गतिविधियों के प्रति अपने छात्रों को जागरूक बनाने के लिए क्या प्रयास करेंगे?

- A. आप उन्हें आतंकी गतिविधियों के प्रति जागरूक बनाने के लिए सामान्य जानकारी देंगे तथा तत्काल पुलिस को सूचित करने के लिए कहेंगे
- B. आप आतंकी दुर्घटना में फंसने के बाद भी धैर्यपूर्वक उस परिस्थिति का सामना करेंगे तथा लोगों का मनोबल बढ़ाएंगे
- C. आप अपने क्षेत्र में जनजागृति अभियान चलाएंगे ताकि लोग यथासम्भव सतर्कता बरतें
- D. आप उपर्युक्त सभी कार्यों को पूरा करेंगे, ताकि आतंकवादी अपने लक्ष्य में सफल न हो सके

470. यदि बालक घर में आने वाले मेहमानों की उपस्थिति में आपके प्रति उग्र एवं उत्तेजनापूर्ण व्यवहार का प्रदर्शन करने लगा है, तो आप उसे किस प्रकार नियंत्रित करेंगे?

- A. आप इस बालक को एक-दो बार मेहमानों के आने के बाद के अवसरों पर इतना अधिक प्रताड़ित करेंगे कि वह शनैः-शनैः अपना व्यवहार बदल लेगा
- B. आप इस बालक को मेहमानों के साथ शरीक ही नहीं होने देंगे जिससे उसे उक्त व्यवहार का अवसर ही नहीं मिलेगा
- C. आप एक अंतिम प्रयास करेंगे और बालक की समस्या का गम्भीरतापूर्वक निदान करने का प्रयास करेंगे
- D. आप यह सोचते रहेंगे कि थोड़ा समझदार हो जाएगा, तो स्वयं ही सुधर जाएगा

471. आप अपने छात्रों में परिश्रम के प्रति लगाव की भावना का विकास किस प्रकार करेंगे?

- A. आप छात्रों को ऐसे महापुरुषों के उदाहरण देंगे जो परिश्रम के द्वारा सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ने में कामयाब रहे हैं
- B. आप परिश्रमी छात्रों को पुरस्कृत करेंगे तथा उनकी प्रशंसा करेंगे
- C. आप स्वयं अपने परिश्रमी गुणों का विद्यालय में क्रियान्वयन करेंगे
- D. उपर्युक्त सभी कार्य करेंगे

472. यदि आपका शिक्षक साथी जुए की लत का शिकार हो गया है, तो आप उसकी क्या (कैसे) मदद करेंगे?

281	282	283	284	285	286	287	288	289	290
D	B	C	B	B	A	D	B	D	C
291	292	293	294	295	296	297	298	299	300
C	A	D	D	A	D	C	A	C	C
301	302	303	304	305	306	307	308	309	310
D	B	A	D	D	B	C	C	D	D
311	312	313	314	315	316	317	318	319	320
D	B	A	D	C	D	A	D	D	A
321	322	323	324	325	326	327	328	329	330
C	C	A	D	B	C	A	D	D	B
331	332	333	334	335	336	337	338	339	340
D	D	B	C	C	C	A	D	C	B
341	342	343	344	345	346	347	348	349	350
D	B	D	A	D	B	A	C	C	D
351	352	353	354	355	356	357	358	359	360
B	A	D	A	D	B	B	B	C	B
361	362	363	364	365	366	367	368	369	370
C	D	C	A	A	A	D	B	C	A
371	372	373	374	375	376	377	378	379	380
B	C	C	B	B	B	C	A	C	A
381	382	383	384	385	386	387	388	389	390
B	D	D	B	B	A	B	C	D	A
391	392	393	394	395	396	397	398	399	400
C	D	D	A	A	A	C	C	A	A
401	402	403	404	405	406	407	408	409	410
B	A	A	B	C	A	D	A	B	A
411	412	413	414	415	416	417	418	419	420
D	C	D	A	B	A	D	A	A	A
421	422	423	424	425	426	427	428	429	430
A	C	D	B	C	B	C	A	B	A
431	432	433	434	435	436	437	438	439	440
B	D	B	C	C	B	D	B	C	A
441	442	443	444	445	446	447	448	449	450
A	C	A	B	C	B	D	B	C	A
451	452	453	454	455	456	457	458	459	460
A	D	D	D	A	B	B	B	B	B
461	462	463	464	465	466	467	468	469	470
A	A	B	B	D	C	D	C	D	C
471	472	473	474	475	476				
D	D	D	C	C	B				

Target Sarkari Naukri



Section-B

समावेशी शिक्षा और विशेष समझ वाले बच्चों की आवश्यकताओं की अवधारणा

1. विविध पृष्ठभूमि से संबद्ध छात्र

दोषपूर्ण सामाजिक संरचना के कारण समाज के कुछ वर्गों का सामाजिक एवं शैक्षिक उत्थान नहीं हो पाया है। ऐसे लोगों में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़े वर्ग की पृष्ठभूमि वाले छात्र आते हैं। भारत सरकार का सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भी इनके उत्थान के लिए प्रयत्नशील है। ऐसे छात्रों को शिक्षा देते समय शिक्षक को रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

अनुसूचित जाति वर्ग के छात्र

भारत की सामाजिक संरचना में अनुसूचित जातियां समाज के सबसे निचले पायदान पर हैं। इन्हें परंपरागत रूप से निम्न कोटि का समझा जाता है। यह वर्ग सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से बेहद पिछड़ा हुआ है। अनुसूचित जाति, उन जातियों को कहा जाता है जिन्हें परम्परागत रूप से भारत में अछूत समझा जाता था। इस जाति के लोग निम्न स्तरीय समझे जाने वाले कार्यों, यथा— सफाई करना, झाड़ू लगाना, मृत पशुओं को उठाना, मैला साफ करना, जूता बनाने आदि का कार्य करते हैं। ये जातियां गांवों के एक किनारे निवास करती हैं। भारतीय धार्मिक ग्रंथों में इन्हें अंत्यज, पेरियार अछूत कहा गया है।

इस जाति के लोग ऐसे पेशे से संबद्ध हैं जिन्हें ऊपर की जाति के लोग घृणित समझते हैं। इन्हें कुछ दशक पहले तक सार्वजनिक जन-सुविधाओं, यथा- तालाब, कुंआ तथा मंदिर तक जाने की अनुमति नहीं थी। यद्यपि इस स्थिति में अब काफी परिवर्तन आ चुका है।

भारत में 'शिक्षा' राज्य के अनेक दायित्वों में से एक है। अनुसूचित जाति के लोगों को सामाजिक गतिशीलता प्रदान करने के लिए, राज्य स्तर पर अनेक कल्याणकारी और विकासशील योजनाओं का निर्माण किया गया है। कुछ प्रमुख योजनाएं इस प्रकार से हैं—

1. विद्यार्थियों के लिए मैट्रिक के बाद छात्रवृत्ति : इस योजना का उद्देश्य अनुसूचित जाति वर्ग के उन विद्यार्थियों को आर्थिक सहायता प्रदान करना है जो मैट्रिक के बाद या सेकेंडरी के बाद की शिक्षा के लिए अध्ययनरत हैं ताकि वह अपनी शिक्षा पूरी कर सकें। इस वित्तीय सहायता के अंतर्गत विभिन्न श्रेणियों के पाठ्यक्रमों के लिए रखरखाव भत्ता, संस्थानों द्वारा वसूल की गई अनिवार्य अप्रति-देय शुल्क का भुगतान, किताब बैंक और अन्य भत्ते शामिल हैं। यह छात्रवृत्ति केवल भारत में अध्ययन

के लिए ही उपलब्ध है तथा यह आवेदकों से संबद्ध राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों की सरकारों की ओर से दी जाती है।

2. विद्यार्थियों की योग्यता बढ़ाना : इस कार्यक्रम का उद्देश्य आवासीय विद्यालयों में शिक्षा के माध्यम से चहुंमुखी विकास के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराकर अनुसूचित जातियों के विद्यार्थियों की योग्यता बढ़ाना है। इसके तहत 9वीं से 12वीं कक्षाओं तक पढ़ रहे अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की योग्यता बढ़ाना है। इसके लिए निम्नलिखित उपायों को अमल में लाना प्रस्तावित है— (i) उनकी शैक्षणिक कमियों को दूर करना, (ii) उनकी योग्यता बढ़ाकर व्यावसायिक कोर्सों में प्रवेश करने हेतु प्रोत्साहन, (iii) उनमें आत्मबल एवं आत्म-निर्भरता का निर्माण करना।

3. लक्षित समूह : इस समूह के अंतर्गत 9वीं कक्षा से 12वीं कक्षा में अध्ययन करने वाले अनुसूचित जातियों के विद्यार्थी आते हैं। इस वर्ग के छात्रों को 15,000 रुपये की आर्थिक सहायता प्रतिवर्ष प्रति विद्यार्थी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों से शत-प्रतिशत सहायता पैकेज के तौर पर मुहैया करवाई जाती है। अनुसूचित जाति के विकलांग विद्यार्थियों को कई विशेष भत्ते दिए जाते हैं, जैसे पाठक भत्ता, परिवहन भत्ता, मार्गरक्षण भत्ता इत्यादि।

4. निःशुल्क कोचिंग व्यवस्था : इस योजना का उद्देश्य विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने के इच्छुक अनुसूचित जाति वर्ग के छात्रों को परीक्षाओं के लिए तैयार करना है। इस निःशुल्क कोचिंग में संघ लोक सेवा आयोग की ग्रुप ए और ग्रुप बी की परीक्षाएं, कर्मचारी चयन आयोग, रेलवे भर्ती बोर्ड, राज्य लोक सेवा आयोग, बैंकों की अफसर ग्रेड परीक्षाओं, बीमा कंपनियों, पीएसयू (PSU) और निजी क्षेत्र में रोजगार हेतु नौकरी केंद्रित कोर्सों के लिए प्रशिक्षण दिए जाते हैं ताकि विद्यार्थी इन परीक्षाओं में सफलता के लिए दक्षता प्राप्त कर सकें।

यह कार्यक्रम राज्य सरकारों/केंद्रशासित प्रदेशों के प्रशासकों द्वारा संचालित प्रसिद्ध कोचिंग संस्थानों और निजी क्षेत्र की संस्थानों द्वारा चलाया जाता है।

5. बाबू जगजीवन राम छात्रावास योजना : इस योजना का उद्देश्य माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक स्कूलों,

कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में पढ़ रहे अनुसूचित जाति के बालक और बालिकाओं को छात्रावास की सुविधा मुहैया कराना है। इस योजना के तहत नए छात्रावासों के निर्माण तथा वर्तमान छात्रावासों के विस्तार के लिए राज्य विश्वविद्यालयों/संस्थानों को पात्रता के आधार पर केंद्रीय सहायता दी जाती है।

अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र

भारत में अनुसूचित जनजाति उन लोगों को कहा जाता है, जो प्रायः छोटे और बिखरे हुए गांवों, ठाणियों एवं जंगलों में निवास करते हैं। इस वर्ग के लोग प्रायः सामान्य पहुँच से दूर रहते हैं जिससे इन्हें प्रतिदिन की सुविधाएं, यथा— भोजन, वस्त्र, आश्रय एवं शिक्षा आदि मुहैया होने में कठिनाई होती है।

इस वर्ग के छात्रों को पढ़ाते समय शिक्षक को कुछ विशिष्ट तथ्यों यथा— उनकी भाषा और समझ एवं मानसिक स्तर का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इस वर्ग के छात्रों की शिक्षा के खराब स्तर का कारण सामाजिक एवं आर्थिक हैं। ये कारण निम्न प्रकार से हैं—

- (i) विद्यालय में इस वर्ग के छात्रों की कम संख्या होना।
- (ii) इस वर्ग की शिक्षा का प्रचार-प्रसार न होना।
- (iii) इनके शिक्षण के प्रति शिक्षकों का उदासीन रवैया।
- (iv) इस वर्ग में व्याप्त घोर गरीबी।
- (v) पाठ्यपुस्तकों में इस वर्ग की स्थानीय बातों एवं उदाहरणों का समावेश न होना।
- (vi) इस वर्ग का बौद्धिक रूप से पिछड़ा होना।

इस वर्ग के शैक्षिक उत्थान के लिए सरकार द्वारा निम्न कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं :

- 1. बालक-बालिकाओं के लिए छात्रावासों की योजना :** इस योजना के तहत केंद्र सरकार इस वर्ग के लिए नए छात्रावासों के निर्माण और वर्तमान छात्रावासों के विस्तार हेतु सहायता देती है। इस योजना के तहत बालकों के छात्रावास निर्माण खर्च का वहन केंद्र एवं राज्य सरकारें 50 : 50 के अनुपात में करती हैं। जबकि बालिकाओं के छात्रावास निर्माण के लिए राज्य/केंद्रशासित प्रदेशों में संपूर्ण लागत केंद्र सरकार द्वारा वहन किया जाता है। केंद्रशासित प्रदेश एवं नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में छात्रावास निर्माण का पूरा खर्च केंद्र सरकार वहन करती है। छात्रावास के निर्माण का उत्तरदायित्व संबद्ध राज्य/केंद्रशासित

प्रदेश की है। इस प्रकार के छात्रावासों में सीटों की संख्या 100 होती है।

2. **आश्रम विद्यालयों की स्थापना :** इस प्रकार के विद्यालयों की स्थापना जनजातीय उपयोजना (TSP) वाले क्षेत्रों में की गई है। आश्रम विद्यालय योजना का उद्देश्य अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के लिए उनके परिचित वातावरण में आवासीय विद्यालयों की स्थापना करना है ताकि जनजातीय विद्यार्थियों में साक्षरता दर बढ़ाई जा सके और उनकी साक्षरता दर देश के अन्य लोगों की साक्षरता दर के बराबर लाई जा सके। इस योजना के तहत खर्च होने वाली धनराशि में राज्य एवं केंद्र दोनों की आधी-आधी (50 : 50) भागीदारी होती है जबकि केंद्रशासित प्रदेश में पूरा खर्च केंद्र सरकार वहन करती है।
3. **विद्यार्थियों की मेरिट का उन्नयन :** इस योजना का उद्देश्य 10वीं कक्षा और 12वीं कक्षा के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को विशेष कोचिंग उपलब्ध कराना है जिससे वे इंजीनियरिंग और मेडिकल जैसे व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए तैयारी कर सकें। राज्य/केंद्रशासित प्रदेशों में यह योजना शत-प्रतिशत केंद्रीय सहायता से मुहैया कराई जा रही है।
4. **विद्यार्थियों के लिए मैट्रिक पश्चात छात्रवृत्ति :** इस योजना का उद्देश्य अनुसूचित जनजाति के छात्रों को पंजीकृत पाठ्यक्रमों में मैट्रिक के बाद अध्ययन के लिए प्रोत्साहन देना है। इस योजना में पेशेवर, तकनीकी, गैर-पेशेवर तथा गैर-तकनीकी सभी स्तर के पाठ्यक्रमों को सम्मिलित किया गया है। इसमें दूरस्थ शिक्षा के लिए पत्राचार पाठ्यक्रम को भी सम्मिलित किया गया है। केंद्र की शत-प्रतिशत सहायता से इसका संचालन राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों द्वारा किया जाता है।
5. **व्यावसायिक प्रशिक्षण :** इस योजना का उद्देश्य जनजातीय युवाओं में रोजगार/स्वरोजगार के अवसर प्राप्त करने के लिए कौशल विकसित करना है। इस योजना को राज्य सरकारों, केंद्रशासित प्रदेशों के प्रशासन, संस्थाओं या संगठनों के जरिए सरकार द्वारा स्थापित स्वायत्तशासी निकाय, शैक्षिक और अन्य संस्थान जैसे स्थानीय निकाय, सहकारी समितियों और गैर-सरकारी संगठनों (NGO) द्वारा लागू किया जाता है। प्रत्येक व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र की क्षमता 100 है जिसमें 50 लोगों के लिए

छात्रावास की सुविधा भी शामिल है। क्षेत्र में उपलब्ध रोजगार केंद्र पांच व्यावसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाता है। प्रत्येक जनजातीय बालक/बालिका को उनकी रुचि के दो कार्यों का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रत्येक पाठ्यक्रम की अवधि तीन महीने है। प्रशिक्षु को छह माह बाद उपनगरीय क्षेत्र के एक प्रशिक्षक शिल्पी से छह माह के लिए संबद्ध कर दिया जाता है ताकि वह प्राप्त प्रशिक्षण का व्यावहारिक प्रयोग कर सके। प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए यह अवधि तीन महीने की है। इसमें प्रशिक्षु को मासिक स्टाइपेंड और प्रशिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जाती है।

अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्र

व्यक्तिगत स्तर पर विभिन्न कारकों के क्रियाशील होने के कारण, एक व्यक्ति में अनेक आवश्यकताएं जन्म लेती हैं। इसी प्रकार सामाजिक स्तर पर भी अनेक कारक क्रियाशील और प्रभावपूर्ण होते हैं जिनके कारण भी एक व्यक्ति/छात्र में अनेक विशेष आवश्यकताओं का जन्म होता है, जिनकी आपूर्ति निश्चय ही होनी चाहिए। स्कूली अवस्था में अनेक बच्चे पढ़ाई की सुविधा से वंचित रह जाते हैं। इसके पीछे अनेक कारण हो सकते हैं। इन कारणों में से अधिकतर सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति से जुड़े हैं। अन्य पिछड़े वर्ग के बालकों में शिक्षा का स्तर सुधारने के लिए सरकारी स्तर पर निम्न उपाय किए गए हैं—

1. **मैट्रिक पूर्व छात्रवृत्ति :** यह छात्रवृत्ति इस वर्ग के उन विद्यार्थियों को दी जाती है जिनके अभिभावकों की वार्षिक आमदनी 44,500 रुपए प्रतिवर्ष से अधिक न हो। ये छात्रवृत्तियां पहली कक्षा या मैट्रिक पूर्व किसी भी कक्षा में दिन में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को या छात्रावासों में रहने वाले तीसरी कक्षा या मैट्रिक पूर्व किसी भी कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थी को दी जाती है। छात्रवृत्ति संबद्ध राज्य सरकार/केंद्रशासित प्रदेश द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थाओं के संदर्भ में लागू होती है। इस योजना के तहत राज्य सरकारों को 50 प्रतिशत और केंद्रशासित प्रदेशों को शत-प्रतिशत केंद्रीय सहायता उनके स्वयं द्वारा निर्धारित राशि के अतिरिक्त दी जाती है।
2. **मैट्रिक बाद की छात्रवृत्तियां :** इस योजना का उद्देश्य पीएचडी (Ph.D) उपाधि सहित मैट्रिक/माध्यमिक स्तर के बाद अन्य पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों को वित्तीय

सहायता प्रदान करना है जिससे वे आगे की शिक्षा पूरी कर सकें। ये छात्रवृत्तियाँ केवल देश में शिक्षा ग्रहण करने वालों को दी जाती है। आवेदक को छात्रवृत्ति संबद्ध राज्य सरकार/केंद्रशासित प्रदेश के प्रशासन के माध्यम से दी जाती है। ये छात्रवृत्तियाँ मान्यताप्राप्त संस्थानों में शिक्षा ग्रहण करने वालों को दी जाती हैं। जिन बेरोजगार विद्यार्थियों के माता-पिता/अभिभावकों की वार्षिक आय 44,500 रुपये प्रतिवर्ष से अधिक नहीं है, वे ही ऐसी छात्रवृत्ति के अधिकारी हैं। इस योजना के तहत राज्य/केंद्रशासित प्रदेशों को उनके स्वयं द्वारा निर्धारित राशि के अतिरिक्त शत-प्रतिशत केंद्रीय सहायता दी जाती है।

2. विशेष आवश्यकताओं वाले छात्र

विशेष या असाधारण छात्रों से संबंधित शिक्षा को विशिष्ट शिक्षा भी कहा जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में हम अनेक छात्रों अथवा बालकों को सामान्य बालकों से उच्च तथा अनेक को निम्न स्तर का पाते हैं। बालकों अथवा छात्रों में वैयक्तिक भिन्नताएं होती हैं। जब ये वैयक्तिक भिन्नताएं इतनी गंभीर हो जाती हैं कि वे विद्यालय के सामान्य कक्षागत शिक्षण से लाभान्वित नहीं हो पाते और उनके लिए किसी विशिष्ट शिक्षा की आवश्यकता प्रतीत हो तो ऐसे छात्र या विद्यार्थी विशेष आवश्यकताओं वाले छात्र कहलाते हैं। ऐसे छात्रों को एक सामूहिक संज्ञा, शब्दों अथवा उप-वाक्य द्वारा संबोधित किया जा सकता है; जैसे—प्रतिभाशाली, विकलांग, मंदगति से सीखने वाला, बुद्धिमान आदि।

कक्षा में छात्रों को समान एवं विशिष्ट लक्षणों के द्वारा श्रेणीबद्ध किया जा सकता है। अध्यापक को प्रत्येक छात्र में पाए जाने वाले विशिष्ट लक्षणों की ओर ध्यान देना चाहिए, ताकि अध्यापन के दौरान अध्यापक उसकी ओर आवश्यकता के अनुसार विशेष रूप से ध्यान दे सके और ऐसे छात्र बिना किसी तनाव के सहज ढंग से शिक्षा ग्रहण कर सकें। इस संबंध में कुछ उदाहरण निम्न प्रकार से हैं—

- (i) कक्षा में छोटे कद वाले छात्रों को पहली पंक्ति में बैठाना चाहिए ताकि वह ब्लैक बोर्ड और अध्यापक को सरलता से देख सके।
- (ii) जिन छात्रों में श्रवण दोष अर्थात् कम सुनने की समस्या है, उन्हें अध्यापक के निकट बैठाना चाहिए।

3. बालक-बालिकाओं हेतु छात्रावास : इस योजना का उद्देश्य केंद्र/राज्य/केंद्रशासित प्रदेशों द्वारा अधिसूचित (Notify) सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों के विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्ति के बेहतर अवसर मुहैया कराना है। इस योजना के तहत केंद्र सरकार छात्रावासों के निर्माण के लिए राज्यों को 50 प्रतिशत और केंद्रशासित प्रदेशों को शत-प्रतिशत सहायता उपलब्ध कराती है। ये छात्रावास माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए बनाए जाते हैं। इनके लिए भूमि अधिग्रहण, कर्मचारियों के वेतन और रख-रखाव का खर्च संबंधित राज्य सरकारों/केंद्रशासित प्रदेशों को वहन करना होता है।

उपर्युक्त बातों से स्पष्ट है कि विशेष आवश्यकता वाले छात्रों में लक्षणों के आधार पर विभेदीकरण करना एक जटिल कार्य है। ऐसे में विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के शिक्षण से तात्पर्य है, “शिक्षा के नियमित कार्यक्रमों में ही विशेष समायोजन की व्यवस्था करके, छात्रों की शिक्षा की विशेष आवश्यकताओं को पूरा करना।”

समायोजन

मनुष्य जिस परिवेश में रह रहा है उसको उस परिवेश के अनुसार खुद को ढालना या अनुकूलित करना होता है। अतः किसी प्रतिकूल मनो-भौतिक परिस्थितियों में स्वयं को अनुकूलित करना ही समायोजन (Adjustment) कहलाता है। यह समायोजन घर में माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ समाज में मित्रों, सगे-संबंधियों आदि के साथ जरूरी है तो पाठशाला में शिक्षकों के साथ।

उपर्युक्त वर्णन के अनुसार समायोजन को इस तरह परिभाषित किया जा सकता है— “समायोजन एक अनवरत प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति स्वयं तथा अपने वातावरण के बीच अधिकाधिक सामंजस्य स्थापित करने की दृष्टि से अपने व्यवहार को परिवर्तित करता है।

समायोजन के विभिन्न रूप

समायोजन के मुख्यतः तीन रूप होते हैं—

1. शिक्षक एवं शिक्षार्थियों के बीच।
2. शिक्षार्थियों एवं शिक्षार्थियों के बीच।
3. शिक्षार्थियों एवं शिक्षकों का वातावरण के साथ।

समायोजन का संबंध 'मन' से है। किसी शिक्षार्थी के मन में वे विभिन्न विचार उठते हैं, जैसे कक्षा का स्तर, शिक्षक, शिक्षार्थी आदि में कोई या कई वैसे नहीं हैं, जैसा शिक्षार्थी चाहता है। इस दृष्टि से अधिकतम अधिगम के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षार्थी का वातावरण अपने साथियों, शिक्षकों आदि के साथ अधिकतम समायोजित हो।

समायोजन का संबंध विद्यार्थी स्वयं और उसके वातावरण से होता है, जिसे निम्न प्रकार प्रदर्शित कर सकते हैं :

व्यक्ति या बालक का वातावरण

अनुकूल → समायोजन

प्रतिकूल → कुसमायोजन

समायोजन के लिए आवश्यक है कि या तो बालक स्वयं को बदले या फिर वातावरण को बदला जाए। किंतु वातावरण को परिवर्तित करना संभव नहीं है। न तो हम प्रकृति पर ही नियंत्रण कर सकते हैं और न ही अन्य लोगों को परिवर्तित कर सकते हैं। अतः विद्यार्थी को स्वयं वातावरण के अनुरूप बदलने का प्रयास करना चाहिए। स्वयं को वातावरण की परिस्थितियों के अनुरूप बदलने का कार्य तो उस विद्यार्थी का है जो स्वयं को पाठशाला या घरेलू परिस्थितियों में समायोजित नहीं कर पा रहा है। विद्यार्थी की भावनाओं में परिवर्तन का प्रयास तो शिक्षक को ही करना चाहिए।

समायोजन की प्रमुख परिभाषाएं:

गेट्स के अनुसार, "सुसमायोजित वह व्यक्ति है जिसकी आवश्यकताएं एवं तृप्तियां सामाजिक दृष्टिकोण एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की स्वीकृति के साथ संगठित होती हैं।"

बोरिंग, लैंगफील्ड व वैल्ड के अनुसार, "व्यक्ति की मानसिक शांति, संतुलन और संतोष बनाए रखने के लिए समायोजन अति आवश्यक है।"

विशेष शिक्षा के उद्देश्य

शिक्षा का जो उद्देश्य सामान्य छात्रों अथवा बालकों के लिए है वे ही विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों के लिए भी हैं। उनके कुछ विशेष उद्देश्य भी हैं। उनकी शिक्षा अध्यापक पाठ्य-सामग्री व सहायक सामग्री विशेष है। विशेष शिक्षा के लिए विशेष दर्शन, विशेष विधि, विशेष अभ्यास की आवश्यकता है। विशेष अथवा विशिष्ट शिक्षा के उद्देश्य को निम्न रूप में स्पष्ट किया जा सकता है—

- विशेष शिक्षा का उत्तरदायित्व निश्चित कर लेना चाहिए। जैसे—किसी व्यक्ति को विशेष शिक्षा के लिए इमारत, समान, अध्यापक आदि का प्रबंध करने के लिए उत्तरदायित्व सौंपना।
- बालकों/बालिकाओं को विशेष कक्षा में भेजने के लिए प्रशासन द्वारा विशेष नीति का निर्माण करना।
- प्रशासन द्वारा ऐसी योजना का निर्माण करना कि विशेष कक्षा के सभी बालक औसत बालकों से संबंध स्थापित कर सकें।
- बालकों के सामाजिक तथा व्यावसायिक सामंजस्य पर विशेष जोर देना चाहिए।
- प्रशासन को ध्यान में रखना चाहिए कि विशेष शिक्षा का आयोजन व्यक्तिगत रुचियों व आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किया जाए।

3. प्रतिभावान, सृजनात्मक एवं विशेष रूप से अक्षम छात्र

I. प्रतिभावान बालक अथवा छात्र

प्रतिभावान/प्रतिभाशाली बालकों को विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण (Approach) से परिभाषित किया है। विभिन्न उपागमों/दृष्टिकोणों पर आधारित कुछ परिभाषाएं निम्नवत् हैं—

- बुद्धि-लब्धि (I.Q.) उपागम—** इस उपागम के तहत प्रतिभाशाली बालक को बुद्धि-लब्धि की एक निश्चित क्षमता के अंतर्गत माना जाता है। टरमैन ने प्रतिभाशाली

बालकों के अध्ययन द्वारा निष्कर्ष निकाला कि ऐसे बालकों की बुद्धि-लब्धि 140 या इससे ऊपर होती है। अन्य मनोवैज्ञानिक 120 से 140 व उच्च बुद्धि-लब्धि वालों को ऐसा बालक होना मानते हैं।

- सामाजिक संभाव्यता उपागम—** इस उपागम के तहत प्रतिभावान शब्द उस बालक के लिए प्रयुक्त होता है जो अपनी आयु वर्ग में किसी एक योग्यता में श्रेष्ठ हो, जिससे वह हमारे समाज में जीवन के कल्याण व गुणवत्ता में उत्कृष्ट योगदान करने वाला बन सके।

- (iii) **सांख्यिकीय उपागम-** इस उपागम के अनुसार किसी बुद्धि परीक्षण में प्राप्त अंकों के आधार पर उच्चतम (Top most) 2 से 3 प्रतिशत बालकों की प्रतिभाशाली माना जाता है।

विशेषताएं

डॉ. एस. एस. चौहान ने टर्मैन (Terman) द्वारा किए गए अनुसंधान के आधार पर प्रतिभाशाली बालकों की निम्न विशेषताएं बताई हैं जो निम्नवत् हैं-

- (i) **शारीरिक-** ऐसे बालक अपने वर्ग या समूह में औसत बुद्धि-लब्धि (I.Q.) वाले बालकों की अपेक्षा अच्छी शारीरिक विशेषता रखते हैं व उनका स्वास्थ्य अच्छा होता है।
- (ii) **मानसिक-** प्रतिभाशाली बालक पठन, भाषा, गणितीय तर्क, विज्ञान, साहित्य व कला में उत्कृष्टता प्रदर्शित करते हैं। उनमें तर्क सामान्यीकरण व बोध की क्षमता अधिक होती है।
- (iii) **अभिरुचियां-** ऐसे बालकों की विविध अभिरुचियां होती हैं। वे अच्छी पुस्तकों का अधिक मात्रा में सरलता से अध्ययन करना सीख लेते हैं तथा अमूर्त विषयों में रुचि लेते हैं।
- (iv) **सामाजिक-** ऐसे बालकों में अहंकार की भावना कम होती है। साथ ही वे विश्वसनीय व कर्तव्यनिष्ठ अधिक होते हैं। उनमें सामाजिक अभिवृत्तियां व चारित्रिक गुण व्यापक होता है। वे संवेगात्मक परीक्षणों में अधिक अंक प्राप्त करते हैं।
- (v) **अन्य विशेषताएं-** प्रतिभावान बालक सामान्य बालकों की तुलना में अच्छा प्रदर्शन करते हैं। शोध अध्ययनों से इस बात की पुष्टि निम्न रूप में हुई है-
 - (a) उच्च श्रेणी प्राप्त करना।
 - (b) अधिक सकारात्मक अभिवृत्तियां रखना।
 - (c) अमूर्त विचारों में अधिक रुचि लेना।
 - (d) खेल-कूद में उत्कृष्टता दिखाना।
 - (e) सुसमायोजित होना।
 - (f) अपने साथी मित्रों से अच्छा संबंध होना।
 - (g) अधिक आत्मविश्वासी होना।
 - (h) अधिक अहंशक्ति (Ego-Strength)।
 - (i) अधिक पठन योग्यता।
 - (j) अधिक वैयक्तिक स्वतंत्रता की भावना।
 - (k) बाह्य पर्यावरण के प्रति परिपक्व अनुक्रिया करना।

पहचान

प्रतिभाशाली बालकों की पहचान करना एक सामूहिक प्रयास होना चाहिए जिसमें माता-पिता, अध्यापक, संगी-साथी, मनोवैज्ञानिक आदि का सहयोग मिलना चाहिए। ऐसे बालकों की पहचान निम्न दो आधारों पर की जाती है :

1. **बौद्धिक व शैक्षिक रूप से प्रतिभासंपन्न बालक-** कक्षा में ऐसे बालकों की पहचान अपनी उपलब्धि, शिक्षकों द्वारा उनकी प्रगति के सूक्ष्म अवलोकन, मानकीकृत बुद्धि परीक्षणों से प्राप्त बुद्धि-लब्धि (I.Q) तथा सृजनात्मक परीक्षणों के द्वारा होती है। डी हान एवं काफ (De Haan and Kough) ने उपरोक्त आधार पर प्रतिभाशाली बालकों की पहचान की सूची इस प्रकार दी है-
 - (i) शीघ्रता एवं सरलता से सीखना व याद करना।
 - (ii) सामान्य बुद्धि व व्यावहारिक ज्ञान का अधिक उपयोग करना।
 - (iii) वस्तुओं से संबद्ध कारणों, संबंधों व अर्थों को समझना।
 - (iv) अर्जित ज्ञान को अधिक समय तक याद रखना।
 - (v) अपने आयु-वर्ग के बालकों की अपेक्षा अधिक ज्ञान रखना।
 - (vi) अधिक शब्दावली का प्रयोग।
 - (vii) अपनी आयु से 1-2 वर्ष आगे के शैक्षणिक कार्य करना।
 - (viii) चुस्त, सूक्ष्म दृष्टि वाला एवं शीघ्र उत्तर देने वाला होना।
2. **किसी विशेष शैक्षिक क्षेत्र में उच्च स्तरीय योग्यता वाले बालक-** कुछ बालक जो बौद्धिक व शैक्षिक रूप से तो सामान्य बालकों के समान होते हैं किंतु वे अन्य किसी विशिष्ट क्षेत्र में, यथा-कला, संगीत, यांत्रिकी आदि में विशिष्ट योग्यता रखते हैं। ऐसे प्रतिभासंपन्न बालकों की पहचान अभिभावक, शिक्षक, खेल-अनुदेशक, निर्देशन विशेषज्ञ आदि निम्न विधियों से कर सकते हैं-
 - (i) विद्यालय प्रगति अभिलेख
 - (ii) शिक्षकों के अभिमत
 - (iii) कक्षागत व्यवहार का अवलोकन
 - (iv) शिक्षकों द्वारा मूल्यांकन
 - (v) बुद्धि परीक्षण

शैक्षिक कार्यक्रम

प्रतिभावान बालकों के लिए निम्न शैक्षिक कार्यक्रम अपनाया जाना चाहिए—

(i) **गतिवर्द्धन**— गतिवर्द्धन का अर्थ शैक्षिक कार्यक्रमों के द्वारा बालकों को दी जाने वाली ऐसी प्रगति से है जो उसे औसत से कम आयु में प्राप्त होती है। समान आयु के बालकों के साथ कक्षा में बैठाए जाने पर यह प्रतिभाशाली बालक शिक्षक द्वारा दिए गए कार्य को आसानी व शीघ्रता से पूरा कर लेते हैं। अतः इनके स्तर का कार्य देने के लिए आवश्यक हो जाता है कि उन्हें उस कक्षा में रखा जाए जिसका कार्य वह औसत प्रतिभा वाले बालकों के समान ही पूरा कर सकें। इस तरह गतिवर्द्धन द्वारा विद्यार्थियों को निम्न क्षेत्र में लाभ पहुंचाया जा सकता है—

- (a) निर्धारित आयु से पूर्व विद्यालय में प्रवेश।
- (b) उसकी बौद्धिक व शैक्षिक योग्यताओं के आधार पर एक ही वर्ष में दो या दो से अधिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम का अध्ययन।
- (c) सामान्य से कम समय एवं आयु में किसी पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण कर सकने की अनुमति।

(ii) **संवर्धित पाठ्यक्रम**—कोलेनिक्स के शब्दों में—“संवर्धन का तात्पर्य बालक को अधिक उच्च स्तर के अत्यंत विविधतापूर्ण अनुभव तथा कार्यों को करने का अवसर दिया जाए।” प्रतिभाशाली बालकों को पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन कर उच्च कठिनाई के कार्य नियोजित किए जाएं। संवर्धन दो प्रकार से किया जा सकता है—(a) व्यक्तिगत तथा (b) समूहोन्मुख।

(iii) **विशेष कक्षाएं तथा विद्यालय**—प्रतिभाशाली बालकों को शिक्षण से लाभान्वित करने के लिए उन्हें विशेष कक्षाओं तथा विद्यालयों में पृथक से शिक्षा देना वांछनीय है। इसके लिए विस्तृत पाठ्यक्रम, अतिरिक्त क्रियाकलाप, प्रायोगिक कार्य आदि की व्यवस्था की जाती है।

(iv) **अन्य कार्यक्रम**—उपरोक्त सहायता के अतिरिक्त भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल प्रतिभाशाली बालकों को निम्न प्रकार की सहायता भी दी जा सकती है—

- (a) प्रभावी निर्देशन कार्यक्रम।
- (b) विद्यालय कार्यक्रमों को वैयक्तिक व नमनीय बनाना।

(c) योग्यता के आधार पर वर्गीकरण।

(d) अतिरिक्त पाठ्यक्रम को बनाकर।

(e) विशिष्ट विषयों के विशेष पाठ्यक्रम बनाकर।

II. सृजनात्मक बालक अथवा छात्र

सृजनात्मकता की संकल्पना एवं अर्थ को विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से परिभाषित किया है। कुछ प्रमुख विद्वानों की परिभाषाएं निम्नवत् हैं—

स्टेन (Sten)—जब किसी कार्य का परिणाम उत्तम हो जो किसी निश्चित समय पर उचित या उपयोगी या संतोषप्रद स्वीकार किया जाए, वह सृजनात्मक कार्य कहलाता है।

बैरन (Baron)—पूर्व में विद्यमान पदार्थों या तत्त्वों को मिलाकर नया योग बनाने की क्षमता ही सृजनशीलता है।

जे.पी. गिलफोर्ड (J.P. Guilford)—सृजनात्मकता कभी सृजन की योग्यता की, कभी सृजनात्मक उत्पादन की और कभी सृजनात्मक उत्पादनशीलता की द्योतक है।

विशेषताएं

कुछ चुने हुए विद्वानों द्वारा सृजनात्मक बालकों की दी गई विशेषताएं निम्नवत् हैं—

बैरन (Baron) के अनुसार ये विशेषताएं निम्न हैं—

- (i) सृजनात्मक बालक किसी समस्या का निर्णय स्वयं एवं स्वतंत्र रूप से करता है
- (ii) एक ही समय अनेक विचारों पर केंद्रित रखने की योग्यता
- (iii) जटिल घटनाओं को प्राथमिकता।
- (iv) ऐसे बालक स्वयं की बात पर आग्रह अधिक करते हैं

टोरेंस (Torrance) ने बैरन के (ii) एवं (iv) के अतिरिक्त अन्य विशेषताएं बताई हैं—

- (i) मौलिकता
- (ii) विनोद प्रियता
- (iii) जिज्ञासा
- (iv) संवेदनशीलता

जे.पी. गिलफोर्ड (J.P. Guilford) ने निम्न विशेषताएं बताई हैं—

- (i) दूरदर्शिता
- (ii) समस्या से संबद्ध तथ्यों को पुनः परिभाषित करने की योग्यता
- (iii) दूसरों को प्रभावित करने की योग्यता
- (iv) समन्वय करने की क्षमता

डॉ. एस.एस. चौहान ने निम्न विशेषताएं बताई हैं—

- (i) दृढ़ विश्वास का साहस
- (ii) अंतर्दृष्टिवान
- (iii) काल्पनिक
- (iv) खतरा उठाने को उत्सुक
- (v) कार्य में निष्ठा

पहचान

गेटजल्स और मेडन्स (Gatzels and Madans) ने सृजनात्मक बालकों की पहचान विधियों को निम्न पांच भागों में बांटा है—

- (i) उपलब्धि— अत्यंत उच्च श्रेणी की उपलब्धि सृजनात्मकता को बताती है।
- (ii) रेटिंग— साथियों, अध्यापकों, निरीक्षकों, प्रधानाचार्यों अथवा मनोवैज्ञानिकों द्वारा मापनी (Rating) की सहायता से सृजनात्मक बालकों का पता लगाया जा सकता है।
- (iii) बुद्धि— बुद्धि-लब्धि (I.Q) परीक्षण में अति उच्च बुद्धि-लब्धि सृजनात्मकता की द्योतक है।
- (iv) व्यक्तित्व— सृजनात्मक व्यक्तित्व की विशेषताओं के आधार पर सृजनात्मक बालकों की पहचान की जा सकती है।
- (v) सृजनात्मक-परीक्षण अंक— टोरेस, गिलफोर्ड, मेडिनिक आदि कुछ मनोवैज्ञानिकों ने सृजनात्मकता परीक्षण बनाए हैं। भारत में पासी, बाकर मेंहदी, कौल, मजूमदार आदि ने भी इस प्रकार के परीक्षण बनाए हैं।

शैक्षिक कार्यक्रम

सृजनात्मक बालकों के लिए निम्न शैक्षिक कार्यक्रम अपनाया जाना चाहिए—

- (i) कक्षा-कक्ष प्रक्रिया— बालकों में सृजनात्मक चिंतन का विकास करने हेतु और सृजनात्मक बालकों के शिक्षण हेतु कक्षा-कक्ष प्रक्रिया की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। शिक्षक विश्वकोश (Educator's Encyclopaedia) में स्मिथ ने निम्न कक्षा-कक्ष क्रियाओं पर जोर दिया है—
 - (a) अध्यापक का कम प्रभाव,
 - (b) व्यक्ति भिन्नता को पहचानना,
 - (c) बालकों को अपनी सीमाओं के अंतर्गत अपनी गति के अनुसार विकास करने देना,
 - (d) विद्यार्थियों की सहभागिता को प्रोत्साहन देना,
 - (e) असफलता के लिए दण्ड का भय दूर करना।

(ii) पाठ्यक्रम— बालकों में सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने हेतु पाठ्यक्रम को विशिष्ट बनाना जरूरी है। अतः पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जिससे मौलिक विचारों, धारा प्रवाहिता, लोच और अत्यधिक स्पष्टीकरण को बढ़ावा मिले।

(iii) अवरोधक तत्त्वों को दूर करना— सृजनात्मक बालकों के शिक्षण और सृजनात्मकता के विकास के लिए अवरोधक तत्त्वों को दूर करना चाहिए। इन अवरोधक तत्त्वों में प्रमुख हैं—

- (a) सामाजिक-आर्थिक
- (b) मनोवैज्ञानिक
- (c) चारित्रिक।

(iv) सहायक तत्त्वों को बढ़ावा— आलमशाह ने सृजनात्मकता को बढ़ावा देने अथवा सहायक के रूप में कार्य करने वाले निम्न चार प्रमुख तत्त्व बताए हैं— (a) प्रेरणा (b) ग्रहणशीलता (c) योग्यता, (d) चयनात्मकता।

(v) शैक्षिक साधन और सामग्री— बालकों में सृजनात्मकता का विकास करने के लिए कुछ विशेष शैक्षिक साधन और सामग्री होनी चाहिए। इन शैक्षिक साधन और सामग्री में कार्य पुस्तकें, निर्देशन पुस्तकें तथा विचार पुस्तकें उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त दृश्य-श्रव्य सामग्री भी इसके लिए विकसित की जा सकती है।

III. विशेष रूप से अक्षम छात्र

ऐसे छात्रों को निम्न श्रेणियों में बांटा जा सकता है :

1. मानसिक रूप से विकलांग छात्र
2. दृष्टि बाधित छात्र
3. दृष्टिहीन छात्र
4. बधिर छात्र
5. शारीरिक रूप से विकलांग छात्र

1. मानसिक रूप से विकलांग छात्र

सामान्यतः मानसिक विकलांगता वो विकलांगता है जो औसत से निम्न मानसिक कार्यक्षमता का उल्लेख करती है। इसका आरंभ बालक के विकास की अवधि में होता है और यह निम्न में से एक या अधिक से अनुकूल व्यवहार की कमी द्वारा संबंधित रहती है—

- (i) परिपक्वता, (ii) अधिगम, (iii) सामाजिक समायोजन।

स्किनर ने मानसिक रूप से विकलांगों को अनेक नाम दिए हैं, यथा—अल्पबुद्धि (Mentally Deficient), विकल बुद्धि (Mentally Handicapped), धीमी गति से सीखने वाले (Slow Learners), पिछड़े हुए (Backward) और मूढ़ (Dull)।

मानसिक रूप से पिछड़े बालकों की पहचान

मानसिक रूप से पिछड़े बालकों की पहचान के निम्न लक्षण हैं—

- (i) वे प्रायः शारीरिक रूप से अयोग्य होते हैं।
- (ii) वे संवेगात्मक रूप से अस्थिर होते हैं।
- (iii) इनकी शैक्षिक निष्पत्ति निम्न होती है।
- (iv) इनकी पहचान व्यक्तित्व अध्ययन से भी हो जाती है।
- (v) इनकी पहचान निम्न बुद्धि-लब्धि (Below I.Q) द्वारा की जा सकती है।
- (vi) निम्न शैक्षिक तथा शारीरिक आलेख भी इनकी पहचान में सहायक होते हैं।

शिक्षण की पद्धतियाँ

मंदबुद्धि बालक की शिक्षा का वही स्वरूप होना चाहिए, जो पिछड़े बालक की शिक्षा का है। इनकी शिक्षा के लिए निम्न व्यवस्था होनी चाहिए—

- (i) छोटे समूहों में शिक्षा
- (ii) अध्ययन के विषय
- (iii) हस्तशिल्पों की शिक्षा
- (iv) अच्छे शिक्षकों की नियुक्ति
- (v) सांस्कृतिक विषयों की शिक्षा
- (vi) विशिष्ट विद्यालयों की स्थापना
- (vii) विशिष्ट कक्षाओं की स्थापना
- (viii) विशिष्ट विद्यालयों का संगठन
- (ix) विशेष शिक्षण विधियों का प्रयोग
- (x) विशेष पाठ्यक्रम का निर्माण

इनके माध्यम से मंदबुद्धि बालकों की शिक्षा को व्यावहारिक रूप प्रदान कर सकते हैं जो उनको किसी कार्य में दक्ष करके जीवनयापन करने के योग्य बनाती है।

उपचारी कार्यक्रम

मानसिक रूप से पिछड़े बालकों की आवश्यकताएं अधिकतर कानून द्वारा ऐसे अध्यापकों, मनोवैज्ञानिकों, मनोचिकित्सकों तथा व्यावसायिक सेवाओं द्वारा पूरी की जा रही है जो इस

क्षेत्र में शिक्षित हैं। प्रायः सभी राज्यों ने ऐसे कानून बनाए हैं जो कि मानसिक अक्षम बालक के सुधार, उपचार तथा शिक्षा में सहायक हैं।

पिछले लगभग 50 वर्षों में मानसिक रूप से पिछड़े बालकों की उन्नति के लिए कानून, मेडीकल अनुसंधान, मनोविज्ञान तथा शैक्षिक क्षेत्र में बहुत उन्नति हुई है। इस क्षेत्र में किए गए कार्यों का वर्णन निम्नवत है—

- (i) **मनोविज्ञान**—मानसिक पिछड़ेपन पर महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक अनुसंधान हुए हैं। कुछ अनुसंधान बालकों की प्रमुख तथा गौण विशेषताओं से संबंधित हैं। बालकों की मानसिक उन्नति पर वातावरण के प्रभाव का भी अध्ययन हो रहा है। इनमें से कुछ अध्ययन फ्रीमैन, सीलस तथा शैमिट द्वारा हुए हैं।
- (ii) **कानून**—कानून द्वारा संस्थाओं को आर्थिक सहायता दी जाती है। कानूनों द्वारा विशेष स्कूलों की व्यवस्था, उनमें भर्ती, अध्यापकों का प्रशिक्षण आदि की सुविधा रहती है।
- (iii) **मेडीकल अनुसंधान**—इस क्षेत्र में हो रहे अनुसंधान मानसिक स्तर की उन्नति की ओर संकेत करते हैं। इस प्रकार के अध्ययन दो बातों से संबंधित हैं—(a) मनोवेगात्मक पिछड़ेपन पर बेनजीड्राइन उपचार (b) मानसिक पिछड़ेपन पर गुलूटामी एसिड का प्रभाव। मेडीकल क्षेत्र के ये दोनों अनुसंधान शैक्षिक तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं।
- (iv) **शैक्षिक समस्याएं**—न्यूयॉर्क का विशेष शिक्षा विभाग 1940 से पाठ्यक्रम तथा विधियों पर अनुसंधान कर रहा है। इन अनुसंधानों के परिणामों को मानसिक रूप से पिछड़े बालकों के शैक्षिक कार्यक्रम में सुझाव के रूप में लेना चाहिए।

मंदता की रोकथाम के उपाय

मंदबुद्धि बच्चों के लिए विशिष्ट विद्यालय हो तथा शिक्षक प्रशिक्षित हों। मंदबुद्धि बालकों को शिक्षित करने वाले शिक्षकों में निम्न विशेषताएं होनी चाहिए—

- (i) बालकों का सम्मान करना।
- (ii) बालकों के प्रति प्रेम, सहानुभूति और सहनशीलता का व्यवहार करना।
- (iii) बालकों में संवेगात्मक संतुलन और सामाजिक समायोजन के गुणों का विकास करना।

- (iv) स्वयं शारीरिक श्रम को महत्त्व देना तथा बालकों को श्रम का महत्त्व सामूहिक विधि से सिखाना।
- (v) धीमी गति से पढ़ाना व अपने पढ़ाए हुए पाठ को बार-बार दोहराना।
- (vi) बालकों की सहायता, परामर्श और निर्देशन देने के लिए तैयार रहना।
- (vii) बालकों के स्वास्थ्य, समस्याओं और सामाजिक दशाओं का व्यक्तिगत रूप से ज्ञान होना व उनको हल करने का प्रयास करना।
- (viii) शिक्षक को बालक की कमियों का पूर्ण ज्ञान हो तथा उसमें धैर्य व संकल्प के गुण हों, ताकि वह बालकों की मंदगति से हतोत्साहित न हों।
- (ix) शिक्षण को रोचक बनाने के लिए सभी प्रकार की दृश्य-श्रव्य (Audio-Visual) सामग्री का उपयोग करना।
- (x) बालकों को एक या दो हस्तशिल्पों की शिक्षा देने में कुशल होना।
- (xi) मंदबुद्धि व पिछड़े बच्चों को पढ़ाने के लिए सरल विधियों, मूर्त वस्तुओं और सामूहिक क्रियाओं का प्रयोग करना।

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के उपचार

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के उपचार के अंतर्गत निम्न पहलू शामिल हैं—

- (1) **मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान**— मानसिक आरोग्य का शाब्दिक अर्थ मानसिक क्रियाओं से संबंधित रोगहीन दशा को कायम रखने वाला विज्ञान है। जिस प्रकार शारीरिक आरोग्य शरीर को स्वस्थ रखने के नियम निकालता है उसी प्रकार मानसिक आरोग्य मन को स्वस्थ रखने के नियम तथा उपाय निकालता है। इसमें केवल मानसिक रोगों को दूर करना ही शामिल नहीं है बल्कि मानसिक रोगों की रोकथाम भी शामिल है। मानसिक आरोग्य में मानसिक चिकित्सा के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए उपयुक्त परिस्थितियाँ उत्पन्न करना भी शामिल है। इस तरह नकारात्मक पहलू में मानसिक आरोग्य का अर्थ केवल मानसिक चिकित्सा तक ही सीमित है किन्तु सकारात्मक पहलू में उसमें मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए सभी तरह की

कोशिशें आ जाती हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि मानसिक आरोग्य का काम केवल मानसिक चिकित्सक के ही हाथ में नहीं है। अध्यापक, माता-पिता, संरक्षक तथा समाज सुधारक और संत समुदाय आदि जैसे धार्मिक व्यक्तियों का भी उसमें महत्त्वपूर्ण योगदान है। सच तो यह है कि मानव मनोविज्ञान का ज्ञान उसमें अंतर्दृष्टि होने पर कोई भी व्यक्ति मानसिक आरोग्य में सहायक हो सकता है।

- (2) **मंदितों का उपचार**— मानसिक मंदित अपनी समस्याओं को खुद नहीं सुलझा सकते। अतः उन्हें माता-पिता, संरक्षक, अध्यापक या मनोवैज्ञानिक से निर्देशन मिलना चाहिए। निर्देशक को बालक अथवा किशोर की कठिनाई को सहानुभूतिपूर्वक समझने की कोशिश करनी चाहिए। उनको डांटना या झिड़कना ठीक नहीं है। उनको अपनी इच्छाओं तथा मनोवृत्तियों को जाहिर करने का मौका दिया जाना चाहिए।

- (3) **परिवार का महत्त्व**— मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखने में परिवार का सबसे अधिक महत्त्व है और माता-पिता की सबसे अधिक जिम्मेदारी है। सबसे अधिक जरूरत इस बात की है कि परिवार में ऐसा स्वस्थ वातावरण बनाया जाए जिसमें बालक के व्यक्तित्व का ठीक से विकास हो सके। बालक के व्यक्तित्व पर माता-पिता के चरित्र, आपस के संबंध 'बच्चों से उनका व्यवहार' भाई-बहनों तथा परिवार के अन्य संबंधियों से बालक का संबंध आदि सभी बातों का प्रभाव पड़ता है। अतः इन सभी के स्वस्थ होने की जरूरत है। संक्षेप में इतना कहा जा सकता है कि माता-पिता बालक के व्यक्तित्व को उन्मुक्त रूप से विकसित होने का मौका दें। उसको गलत रास्तों से रोकें परन्तु उसको सब बातों में अपनी राय पर चलाने की कोशिश न करें। शेष बातें तो माता-पिता की बालक अथवा किशोर के मनोविज्ञान में अंतर्दृष्टि, उनके धैर्य, परिश्रम और अनुभव पर निर्भर है।

- (4) **स्कूल का महत्त्व**— परिवार के बाद मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखने में स्कूल की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। स्कूल में सबसे अधिक महत्त्व स्कूल के वातावरण का है। स्वस्थ वातावरण में बालक स्वयं अनुशासन तथा अन्य गुण ग्रहण कर लेते हैं। स्कूल में कुछ बालकों

को बिगड़ जाने का अधिक भय होता है। ऐसे बालकों पर विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। सबसे बड़ी जरूरत इस बात की है कि अलग-अलग बालक का उसके व्यक्तित्व के अनुसार उपयुक्त एवं पर्याप्त काम दिया जाए। स्कूल में विद्यार्थियों की कठिनाइयों को दूर करने के लिए विद्यार्थी कर्मचारी सेवा का प्रबंध होना चाहिए।

सार-संक्षेप

विद्यालय में शिक्षक को विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखने, मानसिक अस्वस्थता को रोकने और मानसिक स्वास्थ्य की उन्नति हेतु निम्न बातों की ओर ध्यान देना चाहिए—

- (i) **अनुशासन**— विद्यालय में अनुशासन का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है परन्तु यह अनुशासन कभी कठोर नहीं होना चाहिए। ऐसा होने पर उससे मानसिक अस्वस्थता बढ़ेगी। अतः अनुशासन दंड द्वारा भय दिखाकर नहीं बल्कि विद्यार्थियों में नियम पालन और उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करके स्थापित किया जाना चाहिए।
- (ii) **संतुलित पाठ्यक्रम**— स्कूल में पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जिससे विद्यार्थी में व्यक्तित्व के सभी पहलुओं का स्वस्थ विकास हो, आवश्यक ज्ञान बढ़े और मस्तिष्क पर अनावश्यक जोर न पड़े। नाना प्रकार की पाठ्यक्रमेतर क्रियाओं के द्वारा विद्यालय में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में योगदान दिया जा सकता है।
- (iii) **प्रेमपूर्ण व्यवहार**— स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए अध्यापक के प्रेमपूर्ण व्यवहार का कितना महत्व है। इससे विद्यार्थी अध्यापक की बात मानेगा, उसका आदर करेगा और ऐसा काम नहीं करेगा जिसे अध्यापक बुरा समझता हो। शिक्षक को सभी विद्यार्थियों से एक-सा प्रेमपूर्ण व्यवहार रखना चाहिए। इसमें किसी भी प्रकार का भेदभाव विद्यार्थियों के मन को आघात पहुंचाता है।
- (iv) **खेल तथा मनोरंजन**— विद्यार्थियों में दमित प्रेरणाएं मानसिक अस्वस्थता उत्पन्न करती हैं। इनको स्वास्थ्य रूप में अभिव्यक्त होने का अवसर खेलों और विविध प्रकार के मनोरंजन से दिया जा सकता है। खेल और मनोरंजन नई ऊर्जा के संचार का काम करते हैं।

(v) **यौन शिक्षा**— किशोरावस्था में लड़के-लड़कियों में यौन वासना के कारण नैतिक पतन होता है अथवा उसके दमन से मानसिक अस्वस्थता बढ़ती है। शिक्षकों को चाहिए कि वे यौन-संबंधी बुरी आदतों को किशोरों में से निकालने के लिए मनोवैज्ञानिक उपायों का सहारा लें। इसके लिए सबसे अच्छा उपाय लड़के-लड़कियों को आवश्यक यौन शिक्षा देना है। इससे जहाँ एक ओर वे यौन प्रवृत्ति की ओर एक स्वस्थ दृष्टिकोण बना सकेंगे और अनेक बुरी आदतों से बचे रहेंगे वहीं दूसरी ओर उनके शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक विकास में भी सहायता मिलेगी और वे आगे चलकर सर्वांगपूर्ण विकसित स्त्री-पुरुष बन सकेंगे।

(vi) **शैक्षिक निर्देशन**— मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों को उनकी योग्यता के अनुसार विषय दिए जाएं और उनकी शिक्षा संबंधी कठिनाइयों को दूर किया जाए। इस संबंध में मनोवैज्ञानिक की निजी सलाह शैक्षिक निर्देशन कहलाती है।

(vii) **व्यक्तिगत निर्देशन**— विद्यार्थी अपनी अनेक उलझनों को स्वयं नहीं सुलझा पाते। अतः उन्हें सुलझाने के लिए उन्हें मनोवैज्ञानिक द्वारा व्यक्तिगत निर्देशन दिए जाने की आवश्यकता है।

(viii) **संतुलित गृह कार्य**— यह समझना भूल है कि विद्यार्थियों को घर पर कार्य करने के लिए बहुत-सा काम देने से उनको व्यर्थ के कामों के लिए अवकाश न मिलेगा और वे व्यस्त रहेंगे। विद्यार्थियों को अत्यधिक गृह कार्य में जुटाए रखने से उन्हें चिंता होती है और मन पर बुरा प्रभाव पड़ता है। अतः उन्हें बहुत ही संतुलित गृह कार्य दिया जाना चाहिए।

(ix) **अच्छी आदतों का निर्माण**— मानसिक स्वास्थ्य अच्छी आदतों पर निर्भर है। अतः शिक्षक को चाहिए कि वह विद्यार्थियों में नियमित जीवन, संतुलित व्यायाम और खान-पान, अच्छे व्यवहार और उच्च विचार की आदतें डालने में सहायता दें।

(x) **व्यावसायिक निर्देशन**— प्रत्येक नवयुवक को शिक्षा कार्य के बाद कोई न कोई व्यवसाय ग्रहण करना होता है जिसकी चिंता अध्ययन काल में ही उसे सताने लगती है। व्यावसायिक निर्देशन के द्वारा चतुर शिक्षक उन्हें भावी व्यवसाय के चुनाव में सहायता दे सकता है।

2. दृष्टि बाधित छात्र

दृष्टि बाधित बालक सामान्य से कम, निम्न या शून्य दृष्टि वाले होते हैं। इन बालकों की समस्या यह होती है कि वे कक्षा में श्याम-पट्ट (Black Board) पर अंकित लेख या दृश्य सहायक सामग्री को तथा अपनी पुस्तक पठन में कठिनाई का अनुभव करते हैं। ऐसे बालकों के लिए निम्न सावधानियां रखनी चाहिए—

- (i) उन्हें कंजरवेशन (Conservation) कक्षाओं में पढ़ाना चाहिए जहां बड़े छापे की पुस्तकें व बड़े आकार की दृश्य सामग्री का प्रयोग किया जाता है।
- (ii) ऐसे छात्रों को कक्षा में श्याम-पट्ट (Black Board) के निकट बैठना चाहिए।
- (iii) उनकी दृष्टि की जांच कर उन्हें चश्मा लगाने की सलाह देनी चाहिए।
- (iv) चिकित्सक से उनका उपचार कराना चाहिए।
- (v) उनमें उचित रूप से पढ़ने-लिखने की विधि विकसित करनी चाहिए।

विशेषताएं

- (i) ऐसे बालक जो औसत दृष्टि वाले बालकों से भिन्न हैं, परन्तु जिनका मेडिकल रूप से इलाज हो सकता है, सामान्य बालकों के साथ पढ़ सकते हैं।
- (ii) ऐसे बालक जिनमें कि अत्यंत गंभीर दृष्टि दोष है इनका उपचार मेडिकल सहायता तथा चश्मे से करने पर भी वे सामान्य बालकों के साथ पढ़कर यथोचित लाभ नहीं उठा सकते। फिर भी उनके पास इतनी दृष्टि है कि वे उन साधनों से उचित लाभ उठा सकते हैं जो कि अन्य बालकों को दिए जाते हैं।
- (iii) ऐसे बालक, जो कि मेडिकल इलाज तथा चश्में की सहायता मिलने पर भी शैक्षिक तथा व्यावसायिक रूप से दृष्टिहीन हैं।

शैक्षिक कार्यक्रम

- (i) विशेष कक्षाओं का आयोजन— कम देखने वाले बालकों (दृष्टि बाधित) को शिक्षा देने का सबसे अच्छा तरीका विशेष कक्षाओं का आयोजन है। एक विद्यालय में ऐसे बालकों की संख्या 1 से 500 तक होती है। अध्यापक

इस बात का निर्णय करे कि क्या उनके लिए विशेष कक्षा का आयोजन किया जाए तथा कौन-कौन सी सुविधाएं प्रदान की जाए। इस कक्षा में विभिन्न श्रेणियों के बालक हो सकते हैं। गांवों में भी आंशिक रूप से देखने वाले बालकों के लिए विशेष कक्षा का प्रबंध होना चाहिए।

- (ii) सहकारिता योजना— पृथक्कीकरण अब आधुनिक शैक्षिक सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है। अतः एक सहकारिता योजना का विकास किया गया है जिसके द्वारा कम देखने वाले बालक अपने कार्य एक विशेष समान से युक्त एक योग्य शिक्षक के अंतर्गत करते हैं। अन्य कार्यक्रमों के लिए वे अन्य औसत बालकों के साथ मिल जाते हैं।

- (iii) पाठ्यक्रम— कम देखने वाले और औसत बालकों का पाठ्यक्रम एक-सा होता है। अध्यापकों को इस ओर ध्यान देना चाहिए कि ऐसा कोई भी कार्य अधिक न करवाया जाए जिससे आंखों पर अधिक जोर पड़े।

- (iv) शैक्षिक माध्यम— एक औसत बालक के लिए किताब 10 या 12 पॉइंट (Point) टाइप में होती है, पर आंशिक देखने वाले बालकों के लिए किताब 18 या 24 पॉइंट (Point) टाइप में होती है। प्रिंट साफ तथा विस्तृत होना चाहिए। दो शब्दों के बीच जगह होना चाहिए। सफेद कागज पर काली स्याही से लिखा होना चाहिए। हाशिया तथा चित्र एवं मानचित्र पर काली स्याही से लिखा होना चाहिए। आर्ट तथा क्राफ्ट के लिए ऐसा समान प्रयुक्त होना चाहिए कि आंखों पर अधिक जोर न पड़े। मशीनी तरीके, जैसे—टाइपराइटर, रेडियो आदि का प्रयोग होना चाहिए। साथ ही ऐसे बालकों को टाइपराइटर के छूने की विधि बतानी चाहिए।

- (v) रोशनी— प्राकृतिक तथा बनावटी दोनों प्रकार की रोशनी सभी बालकों के लिए महत्व रखती है। कम देखने वाले बालकों के लिए यह और भी अधिक महत्व रखती है। ऐसे बालकों का कमरा हर स्थान से पूर्णरूप से रोशनीयुक्त होना चाहिए तथा उनमें चमक नहीं होनी चाहिए। भूरे तथा हरे बोर्ड में प्रत्यावर्तन अधिक है। अतः उनका प्रयोग करना चाहिए।

3. दृष्टिहीन छात्र

वे बालक जिनकी दृष्टि एक्यूटी 20/200 होती है तो उन्हें शैक्षिक कार्य के लिए नेत्रहीन समझा जाता है। इससे कम होने पर अथवा इसी प्रकार की कोई अन्य अक्षमता होने पर बालक दृष्टिहीन समझे जाते हैं। दृष्टिहीन बालक को अपनी अन्य इन्द्रियों पर निर्भर रहना पड़ता है। जिन बालकों में बहुत कम दृष्टि होती है वे रंगों का भेद कर सकते हैं। एक बालक को तभी दृष्टिहीन मानना चाहिए जबकि डॉक्टर ने उसकी ऐसी स्थिति बतायी हो। डाक्टर द्वारा बताए गए चश्में को पहनने से इनकी दृष्टि में सुधार हो सकता है समय-समय पर आंखों की परीक्षा लेना भी जरूरी है। अध्यापक को देखना चाहिए कि बालक ने चश्मा पहना है अथवा नहीं, चश्मा ठीक दशा में है अथवा नहीं। चूंकि दृष्टिहीन बालक हमेशा अपनी अन्य इन्द्रियों पर निर्भर रहता है, उसकी अन्य इन्द्रियों के स्वास्थ्य की परवाह करनी चाहिए।

शैक्षिक सुविधाएं

- ऐसे बालकों के लिए पृथक एवं विशिष्ट विद्यालय होने चाहिए।
- इन्हें ब्रेल (Braille) पद्धति से शिक्षित करना चाहिए, जिनमें एक मोटे कागज पर कुछ बिन्दु उभार कर उनके स्पर्श द्वारा दृष्टिहीन बालकों को अक्षर व लिपि का ज्ञान कराया जाता है।
- उन्हें संगीत या हस्तकला में प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- उन्हें टंकण (Typing) का प्रशिक्षण भी दिया जा सकता है।
- उन्हें समुचित सहानुभूति की अपेक्षा होती है।

4. बधिर-छात्र

कानों के द्वारा सुनने में बाधा से उत्पन्न अयोग्यता व्यक्ति विशेष को श्रवण विकलांग बनाती है। यह विकलांगता ऐसे बालकों की श्रवण शक्ति दोषयुक्त होने से उन्हें शाब्दिक या बोलकर अभिव्यक्त करने में असमर्थ बनाती है। यही कारण है कि बहरे लोग गूंगे (Deaf) भी होते हैं। अतः सामान्य स्कूलों में शैक्षिक शिक्षण की अपेक्षा श्रवण विकलांगों की शिक्षा हेतु पृथक गूंगे-बहरों के विशिष्ट विद्यालयों की व्यवस्था की जाती है। जहां प्रशिक्षित अध्यापक विशिष्ट उपकरणों की सहायता से उनका विशिष्ट शिक्षण करते हैं।

विशेषताएं

- बधिर या कम सुनने वाले श्रवण क्षतियुक्त बालक वे हैं जिन्होंने बोलने से पहले ही श्रवण शक्ति खो दी है। इस प्रकार के छात्रों के लिए विशेष प्रकार के शिक्षण की आवश्यकता होती है।
- विद्यालय में कुछ बालक ऐसे होते हैं जिन्हें किसी न किसी प्रकार का और किसी न किसी स्तर का श्रवण दोष होता है।
- श्रवण शक्ति बालक को अध्यापक द्वारा कही गई बातें सुनाई देती है। श्रवण शक्ति मौखिक संदेशवहन, अधिगम, मानसिक विकास और भाषा विकास का सबसे सशक्त साधन है। श्रवण बाधित बालक इन साधनों से लाभ नहीं उठा पाता।
- कक्षा में बैठे श्रवण क्षतियुक्त बालकों को प्रभावशाली ढंग से उन विधियों से शिक्षा दी जा सकती है जिनसे सामान्य श्रवण योग्यता वाले बालक को देते हैं।
- बधिर बालकों की पहचान उनसे बोलने पर हो सकती है। परन्तु उनकी पहचान श्रवण यंत्रों के द्वारा करना उचित होगा।

शैक्षिक कार्यक्रम

श्रवण बाधितों के शैक्षिक कार्यक्रमों को चार वर्गों— (1) संप्रेषण तकनीकें, (2) शिक्षण तकनीकें, (3) शैक्षिक सुविधाएं तथा (4) औपचारिक सुविधाएं में बांटा गया है।

- (1) संप्रेषण तकनीकें— श्रवण क्षतियुक्त बालक के संबंध में सबसे बड़ी कठिनाई संप्रेषण के संबंध में है। अतः उसे भली प्रकार शिक्षित करने के लिए निम्न विशेष संप्रेषण तकनीकें अपनाई जानी चाहिए—

- चिन्ह भाषा**— बधिर और अत्यधिक ऊंचा सुनने वाले बालकों के लिए चिन्ह भाषाओं का प्रचलन है, यथा—A. चिह्नित अंग्रेजी, (b) अमेरिकन चिह्न भाषा, (c) अंगुली वर्णमाला। ये चिन्ह भाषाएं एक-दूसरे से भिन्न होती हैं।
- ओष्ठ पठन**— ओष्ठ पठन में बालकों को ओठों के हिलाने और गति के आधार पर वर्णों और शब्दों को पढ़ने की शिक्षा दी जाती है।
- संकेत भाषा**— संकेत भाषा में ओठों को पढ़ने के साथ हाथ से मुंह के पास ही संकेत दिए जाते

हैं। संकेत उसी भाषा के होते हैं जिसमें कि बोला जाता है। संकेत भाषा के लाभ निम्नवत् हैं—

(a) इसमें उसी व्याकरण का प्रयोग होता है जो बोली जाती है।

(b) इससे बालक सुनने वाले लोगों के साथ आसानी से संप्रेषण कर सकता है।

(iv) स्पर्श विधि— इसमें स्पर्श द्वारा कही गई बात को समझने का प्रावधान होता है।

(v) प्रवर्धक प्रयोग— ध्वनि प्रवर्धक यंत्रों का प्रयोग उन बालकों के लिए उपयोगी हो सकता है जो सामान्य से थोड़ा ऊंचा सुनते हैं।

(2) शिक्षण तकनीकें— श्रवण क्षतियुक्त बालकों के लिए निम्न शिक्षण तकनीकें अपनाई जानी चाहिए—

(i) शिक्षण विषय-वस्तु को सहायक सामग्री की सहायता से पढ़ाया जाना चाहिए। आकृतियां, चित्र, संकेत, शब्द, इशारे इत्यादि सहायक सामग्री प्रयोग की जा सकती है।

(ii) शिक्षण के बीच-बीच में प्रश्न पूछना अनिवार्य है। इससे यह पता लग सकता है कि बालक पढ़ाई गई बात को कितना समझ रहा है।

(iii) विलसन के अनुसार श्रवण क्षतियुक्त बालक को एक नोट लेने वाला व्यक्ति (Note-taker) प्रदान किया जाना चाहिए।

(3) शैक्षिक सुविधाएं— श्रवण क्षतियुक्त बालकों को दिन-प्रतिदिन के क्रियाकलाप में भली प्रकार से सहायता देने के लिए निम्न सुविधाएं दी जानी चाहिए—

(i) वीडियो टेप्स (Video-Tapes) का प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है।

(ii) फिल्म का प्रयोग किया जाना चाहिए।

(iii) उन सभी बालकों को कक्षा-कक्ष (Class-room) में समूह श्रवण सहायक (Group Hearing Aids) प्रदान किए जाने चाहिए जो किसी भी प्रकार की श्रवण क्षतियुक्तता से पीड़ित हैं।

(iv) अध्यापक द्वारा ओवरहेड प्रोजेक्टर का प्रयोग अत्यंत अच्छा है।

(v) श्रवण क्षतियुक्त बालकों को अजायबघर, ऐतिहासिक इमारतों, प्रसिद्ध स्थानों आदि जैसे सूचनाप्रद स्थलों पर भ्रमण के लिए ले जाना चाहिए।

(4) औपचारिक सुविधाएं— श्रवण क्षतियुक्त बालकों के लिए निम्न औपचारिक सुविधाएं होनी चाहिए—

(i) पृथक कक्षाएं— कुछ श्रवण क्षतियुक्त बालक जन्म के कुछ वर्षों बाद भाषा ज्ञान प्राप्त कर श्रवण क्षतियुक्तता का शिकार होते हैं। ऐसे बालकों को शिक्षित करना अपेक्षाकृत सरल है। ऐसे बालकों को भी शिक्षित करना सरल है जो बंधिर अथवा गंभीर रूप से क्षति-युक्तता से पीड़ित हैं।

(ii) पृथक विद्यालय— जो बालक जन्म से श्रवण क्षतियुक्त हैं, बंधिर हैं, उन्हें सामान्य बालकों के साथ बैठकर शिक्षा नहीं दी जा सकती। अतः उनके लिए पृथक विद्यालय बनवाए जाने चाहिए जहां बंधिरो को शिक्षित करने संबंधी सभी उपकरण, सामग्री, सुविधा और प्रशिक्षित अध्यापक हों।

(iii) शिशु प्रोग्राम— श्रवण क्षतियुक्त बालक की शिक्षा तब आरंभ होती है जब वह स्कूल में प्रवेश लेने जाता है। वास्तव में, उसकी शिक्षा तब से आरंभ होनी चाहिए जबसे वह इस कमी का शिकार हुआ है। अतः विद्यालय के कर्तव्य क्षेत्र के अंतर्गत यह भी आता है कि वह शिशुओं के लिए प्रोग्राम बनाएं ताकि विद्यालय में प्रवेश के समय एकाएक समस्या उत्पन्न न हो।

(iv) शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन— श्रवण क्षतियुक्त बालकों की अभिरुचि और अभियोग्यता को ध्यान में रखकर उन्हें शैक्षिक निर्देशन दिया जाना चाहिए। ऐसे बालकों के व्यवसाय की योजना पूर्व में बनाना अनिवार्य है। इन्हें ऐसे व्यवसायों की आवश्यकता है जिनमें कम-से-कम शाब्दिक संप्रेषण होता हो। अतः प्रिंटिंग, बिजली संबंधी कार्य, लकड़ी आदि का कौशलयुक्त कार्य, खाना पकाने का कार्य, कलात्मक कार्य, बर्दईगिरी आदि कार्य इनके लिए उपयुक्त होते हैं।

5. शारीरिक रूप से विकलांग छात्र

जब तक शरीर स्वस्थ नहीं होगा तब तक मनुष्य सामान्य रूप से कार्य नहीं कर सकता। शारीरिक स्वास्थ्य उसके कार्य के विकास को प्रभावित करता है। शारीरिक अक्षम अथवा अपंग बालक शारीरिक रूप से विकलांग कहलाते हैं। अपंग बालक चिरकालिक बीमार बालकों से संख्या में कहीं अधिक होते हैं। ऐसे बालक निरंतर असफल होते हैं और अंत में विद्यालय आना छोड़ देते हैं। अपंग और बीमार दोनों ही प्रकार के बालक विशिष्ट बालकों की श्रेणी में आते हैं। अतः वे शिक्षा के अधिकारी हैं।

विकलांगता के प्रकार

- (i) मेरुदण्ड का वक्र,
- (ii) मेरुदण्डीय द्विशिखी,
- (iii) मांसपेशीय डायसट्रोफी,
- (iv) लूले-लंगड़े, हथकटे,
- (v) एक या इससे अधिक अंगों का लकवा,
- (vi) पांवफिरा,
- (vii) प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात,
- (viii) विकृत नितंब।

शैक्षिक कार्यक्रम

शारीरिक विकलांग बालकों की शिक्षा हेतु निम्न उपाए अपनाए जाने चाहिए—

- (i) **उपचार सुविधा**— अपंग तथा बीमार बालकों के उपचार के लिए समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए। समय-समय पर उन्हें योग्य व कुशल चिकित्सक को दिखाना चाहिए। ऐसे बालकों के उपचार के लिए यदि अलग से कोष (Fund) की व्यवस्था की जाए तो और भी अच्छा होगा क्योंकि ऐसे बालकों को समय-समय पर चिकित्सालय में भर्ती करने की भी आवश्यकता पड़ सकती है। ऐसी स्थिति में उन्हें विद्यालय से समय-समय पर अनुपस्थित होना पड़ सकता है। अतः उपस्थिति संबंधी छूट दी जानी चाहिए। इस अनुपस्थिति का नकारात्मक प्रभाव उनके शैक्षिक ज्ञान और उपलब्धि पर पड़ सकता है। अतः ऐसे बालकों के लिए सफलता के मापदंड सामान्य बालक के समान नहीं बनाने चाहिए। ऐसे में इन बालकों के समुचित सामाजिक और संवेगात्मक विकास की ओर ध्यान देना शिक्षक का कर्तव्य है।
- (ii) **विशिष्ट भ्रमणशील अध्यापक**— भ्रमणशील अध्यापकों (Visiting Teachers) में मनोविज्ञानशास्त्री, उच्चारण सुधारक, समाजसेवी, चिकित्सक आदि की सेवाएं शारीरिक विकलांगों को विद्यालयों में परामर्श व निर्देशन देने हेतु ली जानी चाहिए जो समय-समय पर इन विद्यालयों में भ्रमण कर सकें।
- (iii) **विशिष्ट कक्षाएं**— सामान्य विद्यालयों में कम विकलांग बालक/बालिकाओं हेतु पृथक कक्षा में विशिष्ट शिक्षण (Social Teaching) की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे उनका उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching) हो सके। उन्हें विशिष्ट सहायक यंत्रों के उपयोग व

प्रयोग का प्रशिक्षण भी दिया जाना चाहिए।

- (iv) **विकलांग विद्यालय**— गंभीर रूप से विकलांग बालक-बालिकाओं हेतु पृथक विद्यालयों की व्यवस्था वांछनीय व अपरिहार्य है। ऐसे विद्यालयों में वैज्ञानिक विधि से शिक्षण, प्रशिक्षित अध्यापक, आवासीय व्यवस्था, खेल व मनोरंजन व्यवस्था, आजीविकोपयोगी उद्योगों का प्रशिक्षण, पुनर्वास, रुचिकार्य आदि का प्रावधान किया जाना चाहिए।
- (v) **विशिष्ट पाठ्यक्रम**— विकलांग बालक/बालिकाओं की विकलांगता, सामर्थ्य, अभिरुचि व स्तर के अनुकूल विशिष्ट पाठ्यक्रम निर्मित कर उसे प्रभावी किया जाना चाहिए।
- (vi) **अतिरिक्त कक्षा**— अतिरिक्त कक्षा उन अपंग तथा रोगी बालकों के लिए आयोजित की जा सकती है जो नियमित कक्षाओं से पूर्णतया लाभान्वित नहीं हो पाते। अतः विकलांग बालकों तथा रोगी बालकों के लिए स्कूल के उपरांत अथवा छुट्टियों के दिन भी थोड़े समय के लिए कक्षाओं का आयोजन करना चाहिए। इस प्रकार अध्यापक बालकों की व्यक्तिगत, सामाजिक तथा संवेगात्मक समस्याओं को समझ कर उन्हें हल कर सकेगा।
- (vii) **जनमानस में अभिवृत्ति परिवर्तन**— प्रायः विकलांग बालकों को लोग हेयदृष्टि से देखते हैं। उन्हें दया योग्य, दान योग्य, भार तथा मजाक का पात्र समझा जाता है। यह भी समझा जाता है कि वे हर प्रकार के तिरस्कार को सह लेंगे। इस प्रकार की भावना विकलांग तथा रोगी बालकों में हीन भावना व निराशा भर देती है। अतः यह आवश्यक है कि जनमानस में व्याप्त इस अभिवृत्ति में परिवर्तन लाया जाए।
- (viii) **समाजीकरण**— विकलांग और रोगी बालकों के समाजीकरण के लिए उन्हें ऐसे अवसर प्रदान किए जाने चाहिए जिससे वे अपने हम उम्र तथा अन्य लोगों से हिल-मिल सकें। यह कार्य पाठ्येत्तर क्रियाओं द्वारा संभव हो सकता है। उनसे विभिन्न प्रकार की मनोरंजक क्रियाएं करवायी जानी चाहिए। विकलांग व रोगी बालकों के मनोरंजन के लिए कुछ विशेष कार्यक्रम, यथा—सम्मेलन, गोष्ठी, सांस्कृतिक गायन आदि आयोजित किए जा सकते हैं। इस क्षेत्र में गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) को भी प्रयास करना चाहिए। इसके लिए शिक्षक को इन संगठनों को प्रोत्साहित करना चाहिए।



अभ्यास प्रश्न Target Sarkari Naukri

1. निम्न में से कौन-सा शिक्षार्थियों में सृजनात्मकता का पोषण करता है?
 - A. प्रत्येक शिक्षार्थी की अंतर्जात प्रतिभाओं का पोषण करने एवं प्रश्न करने के अवसर उपलब्ध कराना
 - B. विद्यालयी जीवन के प्रारंभ से उपलब्धि के लक्ष्यों पर बल देना
 - C. परीक्षा में अच्छे अंकों के लिए विद्यार्थियों की कोचिंग करना
 - D. अच्छी शिक्षा के व्यावहारिक मूल्यों के लिए विद्यार्थियों का शिक्षण
2. पाँचवीं कक्षा के 'दृष्टिबाधित' विद्यार्थी
 - A. के माता-पिता और मित्रों द्वारा उसे दैनिक कार्यों को करने में सहायता की जानी चाहिए
 - B. के साथ कक्षा में सामान्य रूप से व्यवहार किया जाना चाहिए और श्रव्य सी.डी. के माध्यम से सहायता उपलब्ध कराई जानी चाहिए
 - C. के साथ कक्षा में विशेष व्यवहार किया जाना चाहिए
 - D. को निचले स्तर के कार्य करने की छूट मिलनी चाहिए
3. 'प्रतिभाशाली' होने का संकेत नहीं है।
 - A. दूसरों के साथ झगड़ना
 - B. अभिव्यक्ति में नवीनता
 - C. जिज्ञासा
 - D. सृजनात्मक विचार
4. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराई जानी चाहिए
 - A. विशेष विद्यालयों में विशेष बच्चों के लिए विकसित पद्धतियों द्वारा
 - B. विशेष विद्यालयों में
 - C. विशेष विद्यालयों में विशेष शिक्षकों द्वारा
 - D. अन्य सामान्य बच्चों के साथ
5. डिसलेक्सिया संबंधित है
 - A. मानसिक विकार से
 - B. गणितीय विकार से
 - C. पठन विकार से
 - D. व्यावहारिक विकार से
6. विशेष रूप से जरूरतमंद बच्चों की शिक्षा का प्रबंध होना चाहिए
 - A. दूसरे सामान्य बच्चों के साथ
 - B. विशेष विद्यालयों में विशेष बच्चों के लिए विकसित विधियों द्वारा
 - C. विशेष विद्यालय में
 - D. विशेष विद्यालयों में विशेष शिक्षकों द्वारा
7. एक क्रिकेट खिलाड़ी अपनी गेंदबाजी के कौशल को विकसित कर लेता है, पर यह उसके बल्लेबाजी के कौशल को प्रभावित नहीं करता। इसे कहते हैं-
 - A. विधेयात्मक प्रशिक्षण अंतरण
 - B. निषेधात्मक प्रशिक्षण अंतरण
 - C. शून्य प्रशिक्षण अंतरण
 - D. इनमें से कोई नहीं
8. कक्षा में विद्यार्थियों की रुचि बनाए रखने के लिए एक शिक्षक को उचित है
 - A. श्यामपट्ट का प्रयोग करना
 - B. चर्चा करना
 - C. कहानी कहना
 - D. प्रश्न पूछना
9. आप एक अतिसक्रिय बालक को कैसे सही दिशा में लायेंगे?
 - A. उसे पहली पंक्ति में बैठाएंगे तथा उस पर कड़ी नजर रखेंगे
 - B. उसे कक्षा के कोने में बैठने की जगह निर्धारित करेंगे
 - C. उसे श्यामपट्ट आदि साफ करने का काम देंगे
 - D. इनमें से कोई नहीं
10. आपको अपनी कक्षा में दो मंद बुद्धि बच्चों को बैठाने के लिए बोला गया है। आप
 - A. उसे पहली पंक्ति में बैठाएंगे तथा उस पर कड़ी नजर रखेंगे
 - B. उसे कक्षा के कोने में बैठने की जगह निर्धारित करेंगे
 - C. उसे श्यामपट्ट आदि साफ करने का काम देंगे
 - D. इनमें से कोई नहीं

- A. उन्हें अपने विद्यार्थी के रूप में ग्रहण करने से इनकार करेंगे
 B. प्रधानाध्यापक को उन्हें किसी और कक्षा जो कि मंद बुद्धि बालकों के लिए विशेष रूप से चिह्नित है, में बैठाने के लिए बोलेंगे
 C. ऐसे विद्यार्थियों को सिखाने की तकनीक सीखेंगे
 D. इनमें से कोई नहीं
11. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 में 'गुणवत्ता आयाम' शीर्षक के अन्तर्गत अधिक महत्व दिया गया है :
 A. भौतिक संसाधनों को
 B. शिक्षित एवं अभिप्रेरित अध्यापकों को
 C. बालकों के लिए ज्ञान के संदर्भ में संरचित अनुभवों को
 D. बालकों के लिए संरचित अनुभव एवं पाठ्यक्रम सुधार को
12. आप देखते हैं कि एक छात्र बुद्धिमान है। आप
 A. उसके साथ संतुष्ट रहेंगे
 B. उसे अतिरिक्त गृहकार्य नहीं देंगे
 C. वह जैसे अधिक प्रगति कर सके उस तरह उसे अनुप्रेरित करेंगे
 D. उसके अभिभावकों को सूचित करेंगे कि वह बुद्धिमान है
13. यदि कुछ विद्यार्थी कक्षा में अध्ययन की चित्तवृत्ति में नहीं हैं, तो आप
 A. उन्हें अध्ययन के लिए बाध्य करेंगे
 B. उन विद्यार्थियों को कक्षा छोड़ने के लिए कहेंगे
 C. उन्हें चेतावनी देंगे कि वे अवश्य अध्ययन करें नहीं तो आप प्रधानाध्यापक को सूचित कर देंगे
 D. उन्हें उनकी रुचि अथवा आप अपने विषय के अनुसार रुचिपूर्ण चीजें बताएंगे।
14. समन्वित शिक्षा की सफलता निर्भर करता है
 A. समुदाय के समर्थन पर
 B. पाठ्यपुस्तकों की उत्कृष्टता पर
 C. शिक्षण अधिगम वस्तु की गुणवत्ता पर
 D. शिक्षकों में अभिवृत्तिगत परिवर्तन पर
15. 'प्रतिभाशाली होने' का संकेत निम्न में से कौन नहीं है?
 A. विचारों में सृजनात्मकता
 B. दूसरों के साथ लड़ना
 C. अभिव्यक्ति में अनूठापन
 D. कुतूहल
16. निम्न में से कौन-सा व्यवहार भावनात्मक बाधा को प्रदर्शित नहीं करता है?
 A. बाल अपराध
 B. कमजोरों को डराने वाला
 C. भगोड़ापन
 D. स्वालीनता
17. निःशक्त बालकों की शिक्षा के लिए प्रावधान किया जा सकता है :
 A. समावेशित शिक्षा द्वारा
 B. मुख्य धारा में डालकर
 C. समाकलन द्वारा
 D. इनमें से कोई नहीं
18. 'कमजोर वर्ग के बालक' से तात्पर्य है :
 A. ऐसे अभिभावकों के बालक से जिनकी वार्षिक आय कम है
 B. ऐसे अभिभावकों के बालक से जो वंचित वर्ग में आते हैं
 C. ऐसे अभिभावकों के बालक से जो गरीबी रेखा से नीचे की सीमा में आते हैं
 D. ऐसे अभिभावकों के बालकों से जो सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम सीमा की वार्षिक आय की सीमा से नीचे के वर्ग में आते हैं
19. बच्चों में सवेगात्मक समायोजन प्रभावी होता है
 A. व्यक्तित्व निर्माण में
 B. कक्षा शिक्षण में
 C. अनुशासन में
 D. इनमें से सभी
20. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 में निम्न में से किस परीक्षा सम्बन्धी सुधारों को सुझाया गया है?
 A. कक्षा-X की परीक्षा ऐच्छिक
 B. विद्यालयी शिक्षा की विभिन्न अवस्थाओं पर राज्य स्तर की परीक्षा संचालन
 C. प्रतियोगी प्रवेश परीक्षाओं को ऐच्छिक
 D. इनमें से सभी
21. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी व्यूहरचना अधिक उपयुक्त है?

- A. अधिकतम बच्चों को सम्मिलित करते हुए कक्षा में चर्चा करना
 B. विद्यार्थियों को सम्मिलित करते हुए अध्यापक द्वारा निर्देशन
 C. सहकारी अधिगम तथा पीअर ट्यूटोरिंग (सहपाठियों द्वारा अनुशिक्षण)
 D. अध्यापन के लिए योग्यता आधारित समूहीकरण
22. समस्या के अर्थ को जानने की योग्यता, वातावरण के दोषों, कमियों एवं रिक्तियों के प्रति सजगता विशेषता है :
 A. प्रतिभाशाली बालकों की
 B. सामान्य बालकों की
 C. सृजनशील बालकों की
 D. इनमें से कोई नहीं
23. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 के अन्तर्गत 'परीक्षा सुधारों' में निम्न में से किस सुधार को सुझाया गया है?
 A. खुली पुस्तक परीक्षा
 B. सतत/निरंतर एवं व्यापक मूल्यांकन
 C. सामूहिक कार्य मूल्यांकन
 D. इनमें से सभी
24. सृजनशीलता के पोषण के लिए एक अध्यापक को निम्न में से किस विधि की सहायता लेनी चाहिए?
 A. ब्रेन स्टार्मिंग/विचारावेश
 B. व्याख्यान विधि
 C. दृश्य-श्रव्य सामग्री
 D. इनमें से सभी
25. जब बच्चियों को पढ़ने का अवसर मिलता है तो वे अपने प्रदर्शन में बच्चों से पीछे नहीं रहतीं जैसा कि गत कई वर्षों से हम हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट की परीक्षा परिणामों में देख रहे हैं इसका कारण है :
 A. बच्चियां योग्यता एवं बुद्धि में बच्चों से कम नहीं हैं
 B. बच्चियों के पास पढ़ने के अलावा और कोई काम नहीं होता जबकि बच्चे सड़कों पर मटरगश्ती भी कर लेते हैं
 C. बालिका विद्यालयों में पढ़ाई का स्तर उच्च होता है जो कि बुद्धि की कमी की क्षतिपूर्ति कर देता है
 D. उपरोक्त सभी
26. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 में बातचीत की गई है
 A. ज्ञान स्थायी है व दिया जाता है से ज्ञान का विकास होता हो और इसकी संरचना की जाती है
 B. शैक्षिक केन्द्र से विषय केन्द्र होने पर
 C. विद्यार्थी केन्द्रित से अध्यापक केन्द्रित की ओर
 D. इनमें से कोई नहीं
27. शारीरिक निर्योग्यता वाले व्यक्ति के लिए निम्न में से कौन-सी युक्ति रक्षा तंत्र में सबसे संतोषजनक होगी?
 A. तादात्म्यकरण
 B. विवेकीकरण
 C. अतिकल्पना
 D. इनमें से कोई नहीं
28. कक्षा में अध्यापक की भूमिका हो सकती है :
 1. विद्यार्थियों को सूचनाएं देना
 2. विद्यार्थियों को अधिगम के लिए प्रेरित करना
 3. विद्यार्थियों को सीखने की क्षमताएं विकसित करना
 4. विद्यार्थियों को कोर्स पास करने के लिए अभ्यास कराना
 A. 1, 2 तथा 4
 B. 2 तथा 3 दोनों
 C. 1, 2 तथा 3
 D. 1, 2, 3 एवं 4
29. निम्न में से कौन-सा कथन सही है ?
 A. शिक्षक को पढ़ाते समय छात्रों की भिन्नताओं को ध्यान में रखना चाहिए
 B. शिक्षक को मन्द गति से सीखने वाले छात्रों को झिड़कना नहीं चाहिए
 C. शिक्षक को मेधावी बालकों का समुचित पथ प्रदर्शन करना चाहिए
 D. उपरोक्त सभी
30. आपके विद्यालय में कुछ शिक्षक एक विशेष वर्ग के छात्रों के लिए परीक्षा में उदारता का व्यवहार अपनाते हैं। इस पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?
 A. आप अन्य किसी की परवाह किए बिना अपनी निष्पक्षता को बनाये रखेंगे
 B. प्रधानाचार्य से शिकायत करेंगे
 C. इस आचरण के विरुद्ध मुहिम छेड़ेंगे
 D. उपरोक्त सभी
31. यदि कोई छात्र अध्यापक के निरन्तर प्रयास के बावजूद बार-बार कक्षा में फेल हो रहा है तो इसका सम्भावित कारण हो सकता है :
 A. छात्र की बुद्धि औसत से बहुत नीचे होना
 B. छात्र का उद्दण्ड होना

- C. अभिभावकों का उस पर ध्यान न देना
D. उपरोक्त सभी
32. स्कूलों में विभिन्न कक्षाओं में प्रवेश देने हेतु आरक्षण का आधार होना चाहिए :
- A. छात्र की खराब आर्थिक स्थिति
B. छात्र की जाति व धर्म
C. छात्र का अशिक्षित एवं पिछड़ा पारिवारिक परिवेश
D. (A) तथा (C) दोनों
33. राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा, 2005 में शान्ति शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कुछ क्रियाओं की अनुशंसा की गई है। पाठ्यक्रम रूपरेखा में निम्न में से किसे सूचीबद्ध किया गया है?
- A. महिलाओं के प्रति आदर एवं जिम्मेदारी का दृष्टिकोण विकसित करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किये जायें
B. नैतिक शिक्षा को पढ़ाया जाये
C. शान्ति शिक्षा को एक अलग विषय के रूप में पढ़ाया जाये
D. शान्ति शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाये
34. हकलाने वाले छात्र के प्रति आप का क्या रवैया होगा?
- A. उसे उचित शिक्षण सामग्री की सहायता से पढ़ाया जायेगा
B. उसके साथ सहानुभूतिपूर्ण रवैया रखना
C. यह समझना कि ऐसे लोगों को पढ़ाना बेकार है
D. उपरोक्त में से कोई नहीं
35. विद्यालय में कार्यानुभव के अन्तर्गत नर्सरी तैयार करानी है, किन्तु छात्र काम करने से कतरा रहे हैं, आप उन्हें:
- A. अपने कठोर अनुशासन के बल पर काम करने को विवश करेंगे
B. सामाजिक कार्य पर प्रभावात्मक भाषण देंगे
C. स्वयं कार्य में भाग लेकर प्रेरित करेंगे
D. स्वतंत्र छोड़ देंगे
36. आपके विचार से मूक-बधिरों को शिक्षित किया जाना :
- A. एक कठिन एवं चुनौतीपूर्ण कार्य है
B. व्यर्थ में धन की बर्बादी है
C. हमारी जिम्मेदारी नहीं है
D. प्रजातंत्र की स्वस्थ निशानी है
37. विकलांगों की शिक्षा भी सामान्य बच्चों के साथ होनी चाहिए, क्योंकि :
- A. वे सहानुभूति के पात्र हैं
B. उनमें सामान्य जीवन जीने का साहस आता है
C. वे किस्मत के मारे हैं
D. उनके लिए अलग व्यवस्था संभव नहीं हो सकती
38. आपकी दृष्टि में छात्रों का अधिकतम मानसिक विकास होगा :
- A. शारीरिक परिश्रम द्वारा
B. सांस्कृतिक गतिविधियों द्वारा
C. अच्छे साहित्य द्वारा
D. मानसिक कार्यों द्वारा
39. आज की इस तेज गति से बदलते हुए समाज में जहाँ चारों तरफ मशीनों और औद्योगीकरण का ही महत्त्व है, छात्रों को मानव मूल्यों और आध्यात्मिकता के बारे में अवगत कराना :
- A. असम्भव है
B. आवश्यक है
C. अनावश्यक है
D. रूढ़िवादिता का द्योतक है
40. विद्यालय में खेलों के आयोजन का उद्देश्य होता है :
- A. शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाना
B. प्रतियोगी खेलों के लिए तैयारी करना
C. बालक का सर्वांगीण विकास करना
D. छात्राओं को किसी कार्य में लगाना
41. “प्रतिभा सम्पन्न छात्र का स्वप्न सदैव एक शिक्षक बनने का होता है” इसके बारे में आपका मत है :
- A. पूर्णतः सही
B. गलत
C. अंशतः सही
D. अनिश्चित
42. निम्न में से किस बालक के साथ अध्यापक को सबसे अधिक सहानुभूति का प्रदर्शन करना चाहिए ?
- A. जिस बालक का आचरण बहुत सुशील है
B. जो बालक अध्यापक से द्यूशन भी पढ़ता है
C. जिसकी किसी हानि के लिए अध्यापक स्वयं दोषी है
D. जिस बालक को स्वयं अपनी किसी गलती के कारण हानि पहुंची हो

43. 'मानसिक दृष्टि से पिछड़े बच्चे' आमतौर से अधिक:
- संवेदनशील होते हैं
 - निष्ठावान होते हैं
 - शक्तिशाली होते हैं
 - अनुशासनहीन होते हैं
44. आपके स्कूल में एक ऐसा बच्चा भर्ती होता है, जो सांस्कृतिक दृष्टि से पिछड़े परिवार या पर्यावरण से है। आप:
- उसे ऐसी कक्षा में रखेंगे जिसमें सांस्कृतिक दृष्टि से पिछड़े परिवेश वाले अन्य बच्चे हैं
 - किसी अन्य अध्यापक को उस बच्चे के पिछड़े सांस्कृतिक परिवेश की जानकारी प्राप्त करने के लिए भेजेंगे।
 - उसे सामान्य कक्षा में रखेंगे किन्तु उसकी विशेष आवश्यकताओं के लिए विशेष शिक्षण का प्रबंध कर देंगे
 - उसे किसी व्यावसायिक शिक्षण में जाने की सलाह देंगे
45. निम्नलिखित में किस छात्र को आप मेधावी छात्र (Intelligent Students) मानते हैं?
- जो जिज्ञासु हो
 - जिसकी स्मरण शक्ति अच्छी हो
 - जो कक्षा के अन्य छात्रों से श्रेष्ठ हो
 - जो आगे की सीट पर बैठता हो और शंका समाधान के लिए बार-बार प्रश्न पूछता हो
46. विशिष्ट शिक्षा (Special Education) का सम्बन्ध किससे है?
- प्रौढ़ों की शिक्षा के कार्यक्रम से
 - विकलांगों की शिक्षा के कार्यक्रम से
 - मेधावी छात्रों की शिक्षा के कार्यक्रम से
 - B तथा C दोनों
47. निम्नलिखित में से कौन-सी समस्या शारीरिक दृष्टि से विकलांग बच्चे की होगी?
- विशेष सवारी की
 - अक्सर गैरहाजिरी की
 - पाठ्यक्रम की तैयारी की
 - A और B दोनों
48. बहरों के लिए शिक्षा व्यवस्था के क्षेत्र में किसका नाम उल्लेखनीय है?
- विलियम जोन्स
 - एनी बेसेन्ट
 - हेलन केलर
 - मेरिया मॉन्टेसरी
49. अन्धे बच्चों को पढ़ाने वाले अध्यापकों की ट्रेनिंग देने वाला स्कूल कहां है?
- भोपाल
 - चण्डीगढ़
 - भुवनेश्वर
 - देहरादून
50. शिक्षा संस्कृति का परिरक्षण ही नहीं करती वरन उसको:
- समृद्ध भी बनाती है
 - परिभाषित भी करती है
 - आध्यात्मिक भी बनाती है
 - लोकसंस्कृति भी बनाती है
51. आपके प्रिय मित्र का पुत्र विज्ञान की परीक्षा दे रहा है, जिसमें वह कुछ कमजोर है निरीक्षक के रूप में आप—
- किसी प्रखर छात्र से नकल करने की सुविधा देंगे
 - प्रश्न-पत्र हल करने में उसकी सहायता करेंगे
 - साथी निरीक्षक से उसकी सहायता करने का अनुरोध करेंगे
 - उसे उसके हाल पर छोड़ देंगे
52. एक छात्र ने आपके प्रश्न का जो उत्तर दिया वह पाठ्य पुस्तक में नहीं है, आप—
- उस उत्तर को नहीं मानेंगे
 - उसे शरारती छात्र समझेंगे
 - उसका मजाक बनायेंगे
 - उत्तर को स्पष्ट करने के लिये प्रोत्साहित करेंगे
53. आप परीक्षा के दौरान कक्षा निरीक्षक का कार्य कर रहे हैं, उसमें विद्यालय के प्रधानाचार्य का पुत्र परीक्षा दे रहा है यदि वह अनुचित कार्य करता है तो—
- उसे रोकने का साहस करेंगे
 - उसकी अनदेखी करेंगे
 - प्रधानाचार्य से परीक्षा के बाद शिकायत करेंगे
 - परिणाम की परवाह किये बिना उसे अनुचित साधन प्रयोग नहीं करने देंगे
54. विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रम में एक अध्यापक के रूप में आप—

- A. सक्रिय सहयोग देंगे
 B. दर्शक बनकर कार्यक्रम का आनन्द लेंगे
 C. उस दिन अवकाश ले लेंगे
 D. आकर्षक वस्त्र में मुख्य अतिथि का ध्यान आकर्षित करना चाहेंगे
55. यदि कक्षा में कोई छात्र भयवश प्रश्न का उत्तर जानते हुए भी ठीक प्रकार से नहीं दे पाता है, तो आप उसे—
 A. स्वयं उत्तर बता देंगे
 B. भय के मूल कारणों को जानेंगे
 C. उत्तर देने के लिये बार-बार कहेंगे
 D. दूसरे छात्र से पूछ लेंगे
56. आप कक्षा में धीरे-धीरे सीखने वाले छात्र के लिये क्या करेंगे?
 A. अन्य छात्रों की अपेक्षा अधिक गृह-कार्य देंगे
 B. उसको पारितोषिक प्राप्त करने को प्रोत्साहित करेंगे
 C. उसका व्यक्तित्व-शिक्षण करेंगे
 D. उसका कारण जानकर उपचारात्मक विधि अपनायेंगे
57. जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये आवश्यक है—
 A. अधिकारी के घर में जन्म लेना
 B. परिस्थितियों से अच्छा समायोजन
 C. अधिक धन का होना
 D. भाग्यशाली होना
58. एक शिक्षक की दृष्टि से विद्यालय में छात्र-संघ संगठन के बारे में आपकी धारणा है—
 A. छात्रों का समय नष्ट होता है
 B. अध्यापकों पर कार्य भार बढ़ता है
 C. छात्रों में अनुशासनहीनता पनपती है
 D. छात्रों में नेतृत्व की भावना का विकास होता है
59. आपके विचार से विद्यालय में छात्रों के शैक्षिक भ्रमण का प्रबन्ध करना आवश्यक होता है क्योंकि इससे—
 A. अभिभावक प्रसन्न होते हैं
 B. छात्रों को प्रत्यक्ष सम्पर्क से ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिलता है
 C. अध्यापक कुछ दिनों तक कक्षा-शिक्षण से मुक्त रहते हैं
 D. छात्रों को कुछ दिनों विद्यालय नहीं आना पड़ता
60. विद्यालयों में योग-शिक्षा के संदर्भ में आपका विचार है कि—
 A. इससे छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार होगा
 B. यह मनोरंजन का साधन है
 C. इससे छात्रों का मन-मस्तिष्क सबल होगा
 D. कोई लाभ नहीं होगा
61. यदि एक छात्र प्रतिदिन विलम्ब से विद्यालय आता है, तो उपयुक्त होगा—
 A. उसे कक्षा से निष्कासित कर दिया जाये
 B. छात्रों के सामने उसे दण्डित किया जाये
 C. प्रधानाचार्य से उसकी शिकायत की जाये
 D. उसके कारणों का पता लगाया जाये
62. छात्रों में सहयोग की भावना को विकसित करने के लिये शिक्षक को चाहिए कि वह—
 A. सहयोग पर भाषण दें
 B. सहयोग पर चित्र दिखायें
 C. छात्रों से सामूहिक कार्य करायें
 D. रचनात्मक कार्य दिखायें
63. कक्षा में एक छात्र सदैव भयग्रस्त रहता है, उसे निडर बनाने के लिए अध्यापक को चाहिए कि वह—
 A. उसे न डरने की सलाह दे
 B. स्वयं रोज उसके साथ प्रेम करें
 C. उसे दूसरे बच्चों के साथ खेलने को कहे
 D. इसकी सूचना प्रधानाचार्य को दे
64. अध्यापन के अतिरिक्त कुछ व्यवसाय और भी है जिनमें आपकी बहुत रुचि है जैसे—
 A. पत्रकारिता
 B. बैंकिंग सेवा
 C. प्रशासनिक सेवा
 D. अन्य कहीं नहीं
65. आप खाली समय बिताना चाहेंगी—
 A. गपशप में
 B. सैर-सपाटे में
 C. स्वाध्याय में
 D. भजन-कीर्तन में
66. अच्छे छात्रों को प्रोत्साहन देने के लिए—
 A. उनकी प्रशंसा की जाये
 B. उन्हें कक्षा में दायित्वपूर्ण कार्य दिया जाये
 C. उनसे मैत्रीपूर्ण व्यवहार किया जाये
 D. उपरोक्त सभी

67. कक्षा में पाठ पढ़ते समय अचानक कोई छात्र प्रश्न पूछता है जो उस समय उस प्रसंग से मेल नहीं खाता है, तो आप—
 A. असमय प्रश्न पूछने के लिए छात्र को डाटेंगे
 B. उसी समय छात्र की शंका-समस्या का समाधान करेंगे
 C. पाठ समाप्त होने के बाद समाधान करेंगे
 D. कोई उत्तर नहीं देंगे
68. फीस के दिन आपकी कक्षा का कोई छात्र फीस लाना भूल गया है, तो आप—
 A. अभिभावक के पास शिकायत भेजेंगे
 B. उसे फीस लेने के लिए घर भेजेंगे
 C. दूसरे फीस दिवस पर फीस लाने को कहेंगे
 D. अगर संभव हो तो उसकी फीस स्वयं जमा कर देंगे
69. यदि छात्र पाठ्यक्रम में रुचि नहीं ले रहे हैं तो आप क्या करना पसन्द करेंगे?
 A. शिक्षण को रोचक बनायेंगे
 B. स्वयं शिक्षण में रुचि लेंगे
 C. रुचि लेने वाले छात्रों का उदाहरण देंगे
 D. अरुचि का कारण जानने का प्रयास करेंगे
70. आपके विद्यालय में कुछ शिक्षक एक विशेष वर्ग के छात्रों के प्रति परीक्षा में अधिक उदारता का व्यवहार करते हैं, ऐसी स्थिति में आपका उत्तरदायित्व होगा—
 A. जैसा वे शिक्षक चाहें वैसा करें
 B. अपने स्तर पर सभी छात्रों का समान रूप से ध्यान रखें
 C. प्रधानाचार्य से सलाह मशविरा करें
 D. किसी से कोई मतलब न रखें
71. आपके विचार से मूक-बधिरों को शिक्षित किया जाना—
 A. एक कठिन एवं चुनौतीपूर्ण कार्य है
 B. व्यर्थ में धन की बर्बादी है
 C. हमारी जिम्मेदारी नहीं है
 D. प्रजातन्त्र की स्वस्थ निशानी है
72. कठिन प्रयास के बावजूद सफलता न मिलने पर मैं—
 A. सब भाग्य का खेल मानती हूँ
 B. इसे सदा के लिये भूल जाना चाहती हूँ
 C. आगे प्रयास करना समय की बर्बादी समझती हूँ
 D. पुनः नये उत्साह के साथ प्रयास करती हूँ

73. यदि कहीं राजनैतिक बहस हो रही है, तो आप (शिक्षक)—
 A. उसमें सक्रिय भाग लेंगे
 B. उधर ध्यान नहीं देंगे
 C. सुनेंगे और आनंद लेंगे
 D. एक पक्ष की मदद करेंगे
74. आजकल विद्यालयों में योग-प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देना आपके विचार से है—
 A. समय की बरबादी
 B. एक अच्छा प्रयास
 C. छात्रों पर अतिरिक्त भार
 D. अध्यापकों पर अतिरिक्त बोझ
75. मेरी रुचियों का समूह है—
 A. डाक टिकट संग्रह, उपन्यास पढ़ना, मशीनें ठीक करना
 B. फिल्म देखना, पतंग उड़ाना, कपड़े सीना
 C. ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण, गृह वाटिका लगाना, नयी पुस्तकों का अध्ययन
 D. मिठाई बनाना, फुटबाल खेलना, जादू दिखाना
76. विकलांगों की शिक्षा भी सामान्य बच्चों के साथ होनी चाहिए, क्योंकि—
 A. वे सहानुभूति के पात्र हैं
 B. उनमें सामान्य जीवन जीने का साहस आता है
 C. वे किस्मत के मारे हैं
 D. उनके लिये अलग व्यवस्था संभव नहीं हो सकती
77. विभिन्न प्रकार के शिविरों जैसे—एन.एस.एस. स्काउटिंग के आयोजन के सम्बन्ध में आपका विचार है कि—
 A. शिक्षण कार्य पर बुरा असर पड़ता है
 B. व्यक्तित्व का विकास होता है
 C. सहयोग और श्रम में आस्था उत्पन्न होती है
 D. इनमें कोई लाभ नहीं होता है
78. आपकी दृष्टि में छात्रों का अधिकतम मानसिक विकास होगा—
 A. शारीरिक परिश्रम द्वारा
 B. सांस्कृतिक गतिविधियों द्वारा
 C. अच्छे साहित्य द्वारा
 D. मानसिक कार्यों के उचित वातावरण द्वारा

79. भारत की विशाल जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए दूरस्थ शिक्षा की योजना आपके विचार से—
 A. कम खर्चीली है
 B. छात्रों को प्रतिदिन विद्यालय नहीं जाना पड़ता है
 C. घर बैठे ही पाठ्य सामग्री प्राप्त हो जाती है
 D. शिक्षा प्रसार का अच्छा प्रयास है
80. शिक्षण कार्य में दैनिक जीवन की घटनाओं का समावेश कर देने से—
 A. छात्र प्रसन्न रहते हैं
 B. अध्यापक को विषय ज्ञान की आवश्यकता नहीं पड़ती है
 C. शिक्षण रुचिकर, सरल और उपयोगी हो जाता है
 D. कक्षा में शान्ति बनी रहती है
81. यदि कोई शिशु अपने साथी को मारता-पीटता है, तो आप—
 A. उसे दण्ड देंगी
 B. उसे मारने पीटने से मना करेंगी
 C. कारण की पृष्ठभूमि को समझकर ऐसा प्रयास करेंगी कि वह भविष्य में ऐसा न करे
 D. उसकी शिकायत उसके अभिभावक से करेंगी
82. आप अपनी आन्तरिक भावनाओं के विषय में तभी बात करते हैं, जब—
 A. आप भावावेश में होते हैं
 B. कोई स्नेह से बात करता है
 C. यह आवश्यक हो जाता है
 D. आपको बाध्य किया जाता है
83. एक छात्र प्रतिदिन आपके विषय के घण्टे को छोड़ देता है, तो आप—
 A. उसका कारण जानने का प्रयास करेंगे
 B. छात्र को कड़ा दण्ड देंगे
 C. सोचेंगे कि अध्यापन में कहीं त्रुटि है, अतः सुधार करेंगे
 D. उस तरफ कोई ध्यान नहीं देंगे
84. एक प्रखर बुद्धि बालक कक्षा में अनुशासनहीन हो रहा है, तो—
 A. उसे आवश्यक परामर्श दिया जाना चाहिए
 B. उसकी समस्या को समझना चाहिए
 C. उसके अभिभावक को सूचित करना चाहिए
 D. उस पर ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए
85. यदि बच्चे प्रतिदिन विद्यालय जाने में आनाकानी करते हैं, तो, आप—
 A. उन्हें डांट कर भेजेंगी
 B. उनके माता-पिता को समझायेंगी
 C. उनके कारण को जानकर उसे दूर करने का उपाय करेंगी
 D. प्रधानाध्यापिका से शिकायत करेंगी
86. स्कूल से भागने वाले बच्चों को आप—
 A. समझा-बुझाकर स्कूल जाने के लिए प्रेरित करेंगे
 B. छोटा-मोटा काम करने की सलाह देंगे
 C. भागने के कारणों को जानकर उन्हें दूर करेंगे
 D. कोई ध्यान नहीं देंगे
87. एक कक्षा में पढ़ने वाले सभी बच्चों की उपलब्धि एक समान नहीं होती है, क्योंकि—
 A. अध्यापक ठीक से नहीं पढ़ाते हैं
 B. वे लगन से नहीं पढ़ते हैं
 C. उनमें श्रम और एकाग्रता का अन्तर होता है
 D. सभी की योग्यता अलग-अलग होती है
88. छात्र अधिकतम अध्ययनशील बनें इसके लिए चाहिए—
 A. उनमें रुचि जागृत हो
 B. कक्षाकार्य अधिक हो
 C. लेखनकार्य अधिक हो
 D. गृहकार्य अधिक हो
89. विद्यालय में खेलों के आयोजन का उद्देश्य होता है—
 A. शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाना
 B. प्रतियोगी खेलों के लिए तैयारी करना
 C. बालक का सर्वांगीण विकास करना
 D. छात्राओं को किसी कार्य में लगाना
90. “प्रतिभा सम्पन्न छात्र का स्वप्न सदैव एक शिक्षक बनने का होता है” इसके बारे में आपका मत है—
 A. पूर्णतः सही
 B. गलत
 C. अंशतः सही
 D. अनिश्चित
91. आपके विचार में विद्यालय में छात्रों के शैक्षिक भ्रमण का प्रबन्ध करना इसलिए आवश्यक होता है, क्योंकि इससे—
 A. छात्र और अभिभावक प्रसन्न होते हैं
 B. अध्यापक कुछ दिनों तक कक्षा शिक्षण से मुक्त रहते हैं

- C. छात्रों को प्रत्यक्ष सम्पर्क से ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिलता है
D. छात्रों को कुछ दिनों तक विद्यालय नहीं आना पड़ता
92. छात्रों का निम्नलिखित में से किस तरह से सही मूल्यांकन संभव है?
A. वर्ष में केवल एक बार
B. वर्ष में दो बार
C. वर्ष में तीन बार
D. प्रति माह मूल्यांकन हो
93. शिक्षक होने के नाते आपका हड़ताल के बारे में विचार है—
A. कभी-कभी हड़ताल आवश्यक होती है
B. इन पर सरकार को रोक लगानी चाहिए
C. हड़ताल करना शिक्षक की गरिमा के खिलाफ है
D. हड़ताल किसी समस्या का हल नहीं है
94. “जो धन और सम्पन्नता चाहते हैं बेहतर है कि वे अध्यापक न बनें”, आपकी इस संदर्भ में क्या राय है?—
A. बिल्कुल सही
B. आंशिक रूप से सही
C. सामान्यतः ऐसा ही होता है
D. बिल्कुल गलत
95. शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है—
A. समाज सुधार करना
B. छात्रों को अनुशासित करना
C. बालकों की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करना
D. छात्रों को गुरुभक्त बनाना
96. विद्यालयों में बढ़ती अनुशासनहीनता का मुख्य कारण है—
A. राजनैतिक हस्तक्षेप
B. अभिभावकों का हस्तक्षेप
C. छात्र संघ का प्रभाव
D. सही मार्गदर्शन का अभाव
97. बालिकाओं की शिक्षा आपके विचार में इसलिए आवश्यक है, क्योंकि—
A. वे भी पढ़ लिखकर नौकरी कर सकें
B. बालक-बालिका समान हैं
C. अशिक्षा दूर हो सके
D. बालिकाओं की शिक्षा से भविष्य में पूरा घर शिक्षित होता है
98. यदि आपकी कक्षा का एक छात्र कुछ हकलाने के कारण झेंपता है, तो आप—
A. सामान्य छात्रों की तरह उस पर ध्यान देंगे
B. स्पष्ट बोलने के लिए प्रोत्साहित करेंगे
C. उसके हकलाने पर टोकेंगे
D. उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देंगे
99. विकलांगों को सामान्य शिक्षा व्यवस्था में शिक्षित करना चाहिए, क्योंकि—
A. वे सहानुभूति के पात्र हैं
B. उन्हें सामान्य जीवन में अपने आपको समायोजित करना है
C. उन्हें भी शिक्षित करना आवश्यक है
D. उनकी शारीरिक कमजोरी, मानसिक कमजोरी को बढ़ाती है
100. किसी कठिन समस्या का हल अच्छी तरह निकालने के लिए आवश्यक है—
A. साथियों की सहायता
B. माता-पिता की सहायता
C. अध्यापक की सहायता
D. स्व-प्रयत्न
101. आधुनिक समय में बढ़ते हुए औद्योगीकरण और मशीनी जीवन ने प्रदूषण की समस्या को विकराल रूप दे दिया है इससे निपटने के लिए विद्यालयों में—
A. छात्रों को संगठित करके बागवानी कराई जाये
B. छात्रों को प्रदूषण निवारण पर भाषण दिये जायें
C. विद्वानों की गोष्ठी की जाये
D. छात्रों में प्रदूषण रोकने के लिए सक्रिय सहयोग की चेतना जागृत कराई जाये
102. आपके विचार से विकलांगों की शिक्षा पर ध्यान देना इसलिए आवश्यक है क्योंकि—
A. उन्हें भी सामान्य जीवन जीने योग्य बनाना चाहिए
B. वे दया के पात्र हैं
C. वे दूसरों की तरह भाग्यवान नहीं हैं
D. उनके शिक्षित होने से उनमें हीन भावना नहीं आयेगी
103. आज के छोटे बच्चों के कंधों पर ही कल देश का दायित्व होगा, इसका अर्थ है—
A. बच्चों का कंधा मजबूत करना चाहिए
B. बच्चों को स्कूलों में शारीरिक प्रशिक्षण देना चाहिए
C. बच्चों के समुचित विकास पर ध्यान देना चाहिए
D. बच्चों पर भार कम से कम रखना चाहिए

104. आप अपनी कक्षा में बीड़ी पीने वाले कुछ छात्र पाते हैं, एक अध्यापक के रूप में आप—
 A. उनके माता-पिता को सूचित करेंगे
 B. अन्य छात्रों के समक्ष उनका अपमान करेंगे
 C. उन्हें तम्बाकू की बुराईयां बतायेंगे
 D. उन्हें दण्ड देंगे
105. भारत में शिक्षा का उत्तरदायित्व है—
 A. केन्द्रीय सरकार का
 B. राज्य सरकार का
 C. (A) व (B) दोनों का
 D. (A) व (B) में से किसी का नहीं
106. खेल समूहों से बालक सीखते हैं—
 A. सहयोग
 B. संघर्ष
 C. प्रतियोगिता
 D. उपर्युक्त सभी
107. सड़क पर चलते समय आप देखते हैं कि दो व्यक्ति परस्पर झगड़ रहे हैं तब आप—
 A. तुरन्त पुलिस को इसकी सूचना देंगे
 B. सड़क पर चलते राहगीरों को रोककर झगड़ने वाले व्यक्तियों के झगड़े को समाप्त करेंगे
 C. चुपचाप सिर झुकाकर अपने रास्ते पर आगे खिसक लेंगे
 D. झगड़ने वाले व्यक्तियों को समझाने की लगातार कोशिश करेंगे
108. ग्रामीण क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा लेने के लिए छात्रों की कठिनाई है—
 A. माता-पिता यह नहीं चाहते हैं कि उनकी बेटी सह-शिक्षा वाले विद्यालय में पढ़े
 B. माता-पिता की निर्धनता
 C. कृषि और गृह-कार्यों में छात्रों द्वारा सहायता
 D. उपर्युक्त सभी
109. यदि शिक्षा को व्यवसायोन्मुखी बनाया जा सके, तो—
 A. छात्रों में अध्ययन के प्रति रुचि में वृद्धि होगी
 B. बेरोजगारी में कमी होगी
 C. समय और धन का सदुपयोग होगा
 D. राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में सुधार होगा
110. मैं अपना मित्र उन्हें बनाना पसन्द करता हूँ, जो—
 A. भाग्यशाली हों
 B. परिस्थितियों से समायोजन कर सकने में समर्थ हों
 C. बड़ी पहुँच वाले हों
 D. प्रधानाचार्य के अधिक निकट हों
111. कक्षा में एकाकी रहने वाले छात्र के साथ आपका अपेक्षित व्यवहार होगा—
 A. स्नेह एवं उत्साह से परिपूर्ण
 B. तिरस्कार एवं वितृष्णा से परिपूर्ण
 C. उपेक्षित एवं अंतर्मुखी
 D. निंदनीय एवं प्रताड़नापूर्ण
112. कक्षा में मंद गति से सीखने वाले छात्र के सुधार हेतु आप—
 A. उसे परिश्रम से पढ़ने को कहेंगे
 B. अभिभावक को उसकी धीमी प्रगति से परिचित कराएंगे
 C. किसी विशेषज्ञ से संपर्क कर राय लेने को कहेंगे
 D. उसे पढ़ाई छोड़ने की सलाह देंगे
113. अतिक्रियाशील विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है कि—
 A. कक्षा में उन पर अधिक ध्यान दिया जाए
 B. उनके लिए अलग कक्षा हो
 C. उनके लिए विशेष अध्यापक हो
 D. उनके लिए विशेष पाठ्यक्रम हो
114. बच्चों की रचनात्मक प्रतिभा किसमें दिखती है?
 A. कक्षा में विचार-विमर्श द्वारा
 B. उनकी उपलब्धियों पर उन्हें अंक देकर
 C. अलग हटकर सोचने की क्षमता
 D. चित्रकारी व रंग भरने से
115. छात्रों द्वारा छात्रसंघ के चुनाव कराने का दबाव पड़ने पर प्राचार्य के रूप में आप करेंगे—
 A. चुनाव नहीं होने देंगे
 B. उनकी समस्याओं को जान कर समाधान का प्रयास करेंगे
 C. तटस्थ रहेंगे
 D. इनमें से कोई नहीं
116. छात्र के व्यावसायिक चयन पर उसके माता-पिता का प्रभाव भी पड़ता है—
 A. समाज में उनके पद का
 B. उनके व्यवहार का
 C. उनकी आदतों का
 D. उनकी शिक्षा का
117. बच्चों से किसी पूछे गए प्रश्न का उत्तर निकलवाने के लिए किसी जाँचात्मक प्रश्न का गुण निम्नलिखित में से कौन-सा नहीं हो सकता है?

- A. स्पष्ट अभिप्राय
B. जिसमें संदर्भ की आवश्यकता न हो
C. वाक्य में दो ऋणात्मक शब्दों का उपयोग
D. निश्चित उत्तर का होना
118. कमजोर विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर को आप कैसे ऊपर उठाएंगे?
A. प्रधानाचार्य को सूचना देकर
B. अभिभावकों को सूचना देकर
C. अतिरिक्त समय देकर
D. अच्छे विद्यार्थियों की सहायता से
119. आपकी कक्षा के कुछ छात्र समाज सेवा से जी चुराते हैं। एक शिक्षक के नाते आप क्या करेंगे?
A. उनसे कुछ न कहेंगे
B. उनको आप दंड देंगे
C. आप उनकी उपेक्षा करेंगे
D. आप उनको शारीरिक श्रम करने की प्रेरणा देंगे
120. एक प्रखर बुद्धि बालक यदि कक्षा में अनुशासनहीन हो रहा है, तो आप क्या करेंगे?
A. आप उसकी परवाह नहीं करेंगे
B. उसकी समस्या को समझने का प्रयास करेंगे
C. उसको आप दंड देंगे
D. उसके अभिभावक से शिकायत करेंगे
121. शारीरिक विकलांगता के शिकार बालकों की शिक्षा है-
A. एक व्यर्थ प्रयास, जिसका ऐसे छात्रों को कोई लाभ प्राप्त नहीं होता है
B. एक सामाजिक दायित्व, जो सैवधानिक नियमों की पूर्ति में भी साधक है
C. एक नारा मात्र, जो उनके प्रति सहानुभूति प्रदर्शन का एक ढंग है
D. एक यांत्रिक प्रयास, जो उनके व्यावहारिक जीवन की सीमाओं से समायोजित नहीं करता है
122. एक विद्यार्थी बार-बार कक्षा में फेल हो रहा है, तो आपकी उसके प्रति क्या प्रतिक्रिया होगी?
A. आप उक्त विद्यार्थी का मजाक बनाएंगे और अपमानित करेंगे
B. आप उसे घर में बैठकर किसी व्यवसाय से जुड़ने की सलाह देंगे
C. आप उसके फेल होने के कारणों का अनुमान लगाएंगे तथा उनका निदान करने का प्रयास करेंगे
D. आप उसका मनोबल बढ़ाएंगे
123. आप विद्यालय में रिक्त कालांश में क्या कार्य करना पसंद करेंगे?
A. पुस्तकालय में जाकर शैक्षिक पत्र-पत्रिकाएं पढ़ेंगे
B. छात्रों के गृहकार्य की जाँच का कार्य निपटाएंगे
C. कैण्टीन में अन्य साथी अध्यापकों के साथ चाय पीने चले जाएंगे
D. स्टाफ रूम में विश्राम करेंगे
124. आपकी कक्षा में एक ढीठ बालक पढ़ता है जिसे आप जितना अधिक प्रताड़ित करते हैं उतना ही अधिक निष्क्रिय व्यवहार का प्रदर्शन करता है। ऐसे बालक को आप किस प्रकार सुधारेंगे?
A. आप कुछ अवधि तक उससे मधुर व्यवहार करेंगे तथा उसकी बुनियादी समस्या को समझने का प्रयास करेंगे
B. आप उसकी उपेक्षा करेंगे तथा उसे उसके हाल पर छोड़ देंगे
C. आप उसके माता-पिता को विद्यालय बुलाएंगे तथा उक्त छात्र को सुधारने में अपनी असमर्थता व्यक्त करेंगे
D. आप प्रधानाचार्य से संस्तुति करेंगे कि उक्त छात्र को विद्यालय से निष्कासित कर दिया जाए

उत्तरमाला

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
A	B	A	D	C	A	C	D	C	C
11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
D	C	D	B	B	D	A	D	D	A

21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
C	C	D	A	A	A	C	B	D	A
31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
A	D	A	B	C	D	B	D	B	C
41	42	43	44	45	46	47	48	49	50
C	C	D	C	C	D	D	C	D	A
51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
D	D	D	A	B	D	B	D	B	C
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70
D	C	B	A	C	D	C	C	D	C
71	72	73	74	75	76	77	78	79	80
D	D	B	B	C	B	C	D	D	C
81	82	83	84	85	86	87	88	89	90
C	C	A	B	C	C	C	A	C	D
91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
C	D	C	A	C	D	D	B	B	D
101	102	103	104	105	106	107	108	109	110
D	A	C	C	C	D	D	D	D	B
111	112	113	114	115	116	117	118	119	120
A	A	A	C	B	D	D	C	D	B
121	122	123	124						
B	C	A	A						

Target Sarkari Naukri